

सौभाग्यलक्ष्मी तन्त्रम्

प्रदीप कुमार राय



प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० 27

सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं हिन्दी अनुवाद

प्रदीप कुमार राय



प्राच्य प्रकाशन

वाराणसी-221002

संस्करण-2011

मरुतीम्शलाजगाम्शाम्

(रुडीम्शलाजगाम्शाम् रुडी रुम्शलाजगाम्शाम्)

प्रकाशक :

कुश राय

प्राच्य प्रकाशन

C 21/3-C (होटल हिन्दुस्तान इण्टरनेशनल कम्पाउण्ड)

मलदहिया, वाराणसी-221002 (भारत)

रुडीम्शलाजगाम्शाम् रुडी रुम्शलाजगाम्शाम्

रुडी रुम्शलाजगाम्शाम् रुडी रुम्शलाजगाम्शाम्

© प्रेमचन्द महताब राय शोध संस्थान

लमही, (पोस्ट-वाया सारनाथ)

वाराणसी-221007 (भारत)

मूल्य : 150.00 रुपये



मुद्रक :

गौतम प्रिण्टर्स, जगतगंज, वाराणसी-2

सूचीपत्र

1.	प्रथम अध्याय :	1-8
	क. लक्ष्मी का आवास-स्थान	
	ख. लक्ष्मी के लिए वर्जनीय स्थल	
	ग. लक्ष्मी के प्रिय के लिए वर्जनीय	
	घ. लक्ष्मी के प्रिय व्यक्ति के लिए परिवर्जनीय	
2.	द्वितीय अध्याय : इन्द्र के द्वारा लक्ष्मी की स्तुति	9-14
3.	तृतीय अध्याय : श्रीसूक्त	15-18
4.	चतुर्थ अध्याय : लक्ष्मीचरित्र	19-22
5.	पञ्चम अध्याय : लक्ष्मीस्तोत्र	23-35
	(शङ्कर-कथित अ-कारादि क्ष-कारान्त वर्णग्रथित)	
6.	षष्ठ अध्याय : कमलास्तोत्र	36-42
7.	सप्तम अध्याय : कमलास्तोत्र	43-46
8.	अष्टम अध्याय : कमलाप्रीतिसाधन	47-50
9.	नवम अध्याय : लक्ष्मी-स्तोत्र (ईश्वर-कथित)	51-51
10.	दशम अध्याय : लक्ष्मी कवच प्रारम्भ	52-58
11.	एकादश अध्याय : लक्ष्मी माहात्म्य	59-64
12.	द्वादश अध्याय : त्रैलोक्य-मङ्गल नामक लक्ष्मीस्तोत्र	65-72
13.	त्रयोदश अध्याय : ब्रजविहार (श्रीकृष्ण की स्तुति)	73-76
14.	परिशिष्ट	77-139

लक्ष्म्या एकाक्षर बीजमन्त्र (विधान एवं ध्यान),
चतुरक्षरलक्ष्मी बीजमन्त्र (विधान एवं ध्यान),

141-143

सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम्

विष्णुर्वरिष्ठो देवानां हृदानामुदधिर्यथा ।
नदीनाञ्च यथा गङ्गा पर्वतानां हिमालयः ॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां राज्ञामिन्द्रो यथा वरः ।
देवीनाञ्च यथा दुर्गा वर्णाणां ब्राह्मणो यथा ।
तथा समस्तशास्त्राणां तन्त्रशास्त्रं मनुत्तेमम् ॥

- मत्स्यसूक्ते

यद्गृहे निवसेन्तन्त्रं तत्र लक्ष्मीः स्थिरायते ।
राजद्वारे श्मशाने च सभायां रणमध्यतः ॥
निर्जने च जले घोरे श्वापदैः परिभूषिते ।
माहात्म्यात्तस्य देवेशि चमत्कारी भवेत् प्रिये ॥

- बृहन्नीलतन्त्रे

अन्यान्यशास्त्रेषु विनोदमात्रम्,
न तेषु किञ्चिद्भुवि दृष्टमस्ति ।
चिकित्सितं ज्योतिषतन्त्रवादाः,
पदे पदे प्रत्ययमावहन्ति ॥



मन्त्रमाला

१. मन्त्रमाला ॥ १ ॥

२. मन्त्रमाला ॥ २ ॥

३. मन्त्रमाला ॥ ३ ॥

४. मन्त्रमाला ॥ ४ ॥

५. मन्त्रमाला ॥ ५ ॥

मन्त्रमाला -

१. मन्त्रमाला ॥ १ ॥

२. मन्त्रमाला ॥ २ ॥

३. मन्त्रमाला ॥ ३ ॥

४. मन्त्रमाला ॥ ४ ॥

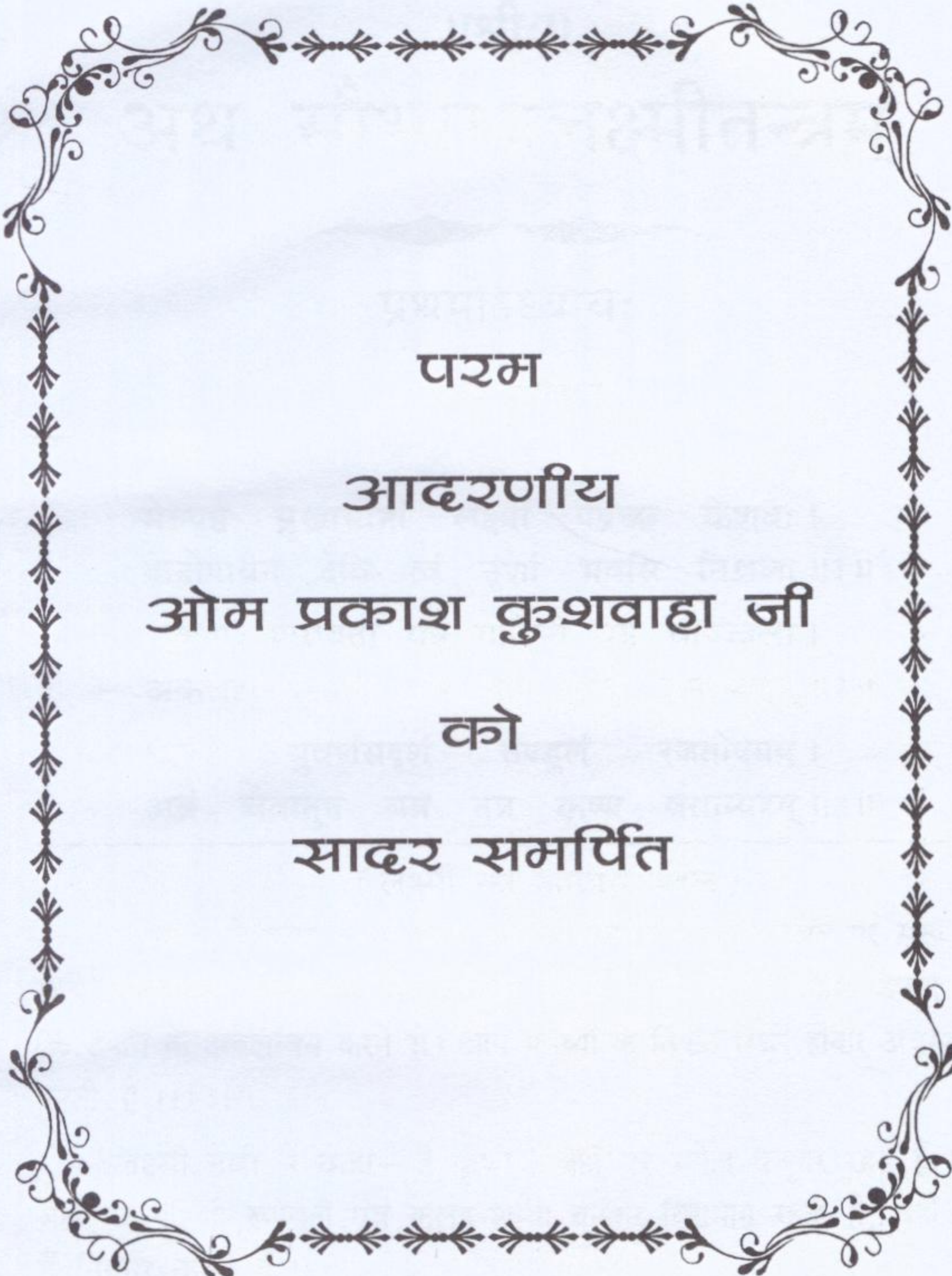
मन्त्रमाला -

मन्त्रमाला ॥ १ ॥

१. मन्त्रमाला ॥ १ ॥

२. मन्त्रमाला ॥ २ ॥

३. मन्त्रमाला ॥ ३ ॥



परम
आदरणीय
ओम प्रकाश कुशवाहा जी
को
सादर समर्पित

॥श्रीः॥

अथ सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रम्

प्रथमोऽध्यायः

शुक उवाच —

मेरुपृष्ठे सुखासीनां लक्ष्मीं पप्रच्छ केशवः ।
केनोपायेन देवि त्वं नृणां भवसि निश्चला ॥1॥

शुक्लाः पारावता यत्र गोहिनी यत्र चोज्ज्वला ।
अकलहा स्थिता यत्र तत्र कृष्ण वसाभ्यहम् ॥2॥

धान्यं सुवर्णसदृशं तण्डुलं रजतोपमम् ।
अन्नं चैवातुषं यत्र तत्र कृष्ण वसाम्यहम् ॥3॥

(लक्ष्मी का आवास स्थल)

शुकदेव ने कहा — भगवान केशव (विष्णु) ने सुमेरु पर्वत पर सुख के साथ अवस्थिता लक्ष्मीदेवी से जिज्ञासा किया — हे देवि ! किस उपाय से (= उपाय के अवलम्बन करने से) आप मनुष्यों के निकट स्थिर होकर अवस्थान करती हैं ॥1॥

लक्ष्मी देवी ने कहा— हे कृष्ण ! जहाँ पर सफेद कबूतर रहते हैं एवं जहाँ पर गृहिणी रूपवती एवं कलह-शून्या बनकर विद्यमान रहती है, वहीं पर मैं निवास करती हूँ ॥2॥

हे कृष्ण ! जहाँ पर सुवर्ण-सदृश वर्ण-विशिष्ट धान्य, रजत के वर्ण-सदृश वर्ण-विशिष्ट चावल एवं तुषहीन अन्न (= पक्वान्न) विद्यमान रहता है, मैं वहीं पर निवास करती हूँ ॥3॥

यः सद्बिभागी प्रियवाक्यभाषी वृद्धोपसेवी प्रियदर्शनश्च ।
 अल्पप्रलापी न च दीर्घसूत्री तस्मिन् सदाहं पुरुषे वसामि ॥4॥
 यो धर्मशीलो विजितेन्द्रियश्च विद्याविनीतो न परोपतापी ।
 अगर्वितो यश्च जनानुरागी तस्मिन् सदाहं पुरुषे वसामि ॥5॥
 चिरं स्नाति द्रुतं भुङ्क्ते पुष्पं प्राप्य न जिघ्रति ।
 यो न पश्येत् स्त्रियं नग्नां नियतं स च मे प्रियः ॥6॥
 त्यागः सत्यञ्च शौचञ्च त्रयमिति महागुणाः ।
 यः प्राप्नोति गुणानेतान् श्रद्धावान् स च मे प्रियः ॥7॥
 सर्वलक्षण मध्ये तु त्याग एव विशिष्यते ।
 काले देशे च पात्रे च स च त्यागः प्रशस्यते ॥8॥
 नित्यमामलके लक्ष्मीर्नित्यं तिष्ठति गोमये ।
 नित्यं शङ्खे च पद्मे च नित्यं श्रीः शुक्लवाससि ॥9॥

हे कृष्ण ! जो पुरुष सत् पात्र में अन्नादि का दान करते हैं, प्रिय वाक्य बोलते हैं, ज्ञानियों की सेवा करते हैं, अल्पभावी हैं, फिर भी दीर्घसूत्री (= जो स्वल्प समय लेने वाले कार्य को बहुत समय में पूरा करते हैं) नहीं हैं, मैं वैसे (पुरुष के निकट) सर्वदा निवास करती हूँ ॥4॥

जो धार्मिक, जितेन्द्रिय तथा विद्या-वश विनीत हैं, दूसरे को क्लेश-प्रदान नहीं करते हैं, गर्वशून्य हैं, देश के लोगों के प्रति अनुराग-सम्पन्न हैं, उस पुरुष में (= उस पुरुष के निकट) मैं सर्वदा निवास करती हूँ ॥5॥

जो मनुष्य स्नान में अधिक समय तथा भोजन में अल्प समय व्यय करते हैं, पुष्प को प्राप्त कर उसका आघ्राण नहीं लेते एवं जो नग्ना स्त्री का दर्शन नहीं करते हैं, वह (मनुष्य) सर्वदा मेरे प्रिय हैं ॥6॥

त्याग, सत्य एवं शौच - ये तीन महान् गुण हैं । जो श्रद्धाशील व्यक्ति इन तीन गुणों को प्राप्त होते हैं, वह मेरे प्रिय हैं ॥7॥

समस्त लक्षणों (= गुणों के लक्षणों) में त्याग (= दान) ही श्रेष्ठ है । फिर, वह त्याग अर्थात् दान यदि पुण्यकाल में, पुण्य देश में एवं सत् पात्र में प्रयुक्त होता है, तो वह (दान) प्रशस्त बन जाता है ॥8॥

लक्ष्मी देवी आँवले के वृक्ष में, गोमय में, शङ्ख में, पद्म में एवं शुभ्रवस्त्र में सर्वदा अवस्थान करती हैं ॥9॥

वसामि पद्मोत्पल-शङ्ख-मध्ये वसामि चन्द्रे च महेश्वरे च ।
 नारायणे चैव वसुन्धरायां वसामि नित्योत्सव-मन्दिरे षु ॥10॥
 यथोपदिष्टं गुरुभक्तियुक्ता पत्युर्वचो नाक्रमते च नित्यम् ।
 नित्यञ्च भुङ्क्ते पतिभुक्तशेषं तस्याः शरीरे नियतं वसामि ॥11॥
 तुष्टा च धीरा प्रियवादिनी च सौभाग्ययुक्ता च सुशोभना च ।
 लावण्ययुक्ता प्रियदर्शना या पतिव्रता या च वसामि तासु ॥12॥
 श्यामा मृगाक्षी कृशमध्यभागा सुभ्रूः सुकेशी सुगतिः सुशीला ।
 गम्भीरनाभिः समदन्त पङ्क्तिस्तस्याः शरीरे नियतं वसामि ॥13॥
 या पापयुक्ता पिशुनस्वभावा स्वाधीनकान्तं परिभूतये च ।
 अमर्षकामा कुचरित्रशीला तामङ्गनां प्रेतमुखीं त्यज्यामि ॥14॥
 पुष्पं पर्युषितं पूति शयनं बहुभिः सह ।
 भग्नासनं कुनारीञ्च दूरतः परिवर्जयेत् ॥15॥

मैं (लक्ष्मी देवी) श्वेतपद्म, नीलपद्म एवं शङ्ख में, चन्द्र में, महादेव में, नारायण में, पृथिवी में एवं जहाँ नित्य उत्सव होता है – ऐसे मन्दिर में निवास करती हूँ ॥10॥

जो स्त्री शास्त्रोपदेश के अनुसार गुरु में भक्ति-युक्ता है, कदापि पति के वाक्य की अवहेलना नहीं करती, प्रतिदिन पति के भोजन कर लेने के उपरान्त स्वयं भोजन करती है, उसके शरीर में मैं सर्वदा निवास करती हूँ ॥11॥

जो स्त्री सन्तुष्टा, धीरा, प्रियवादिनी, सौभाग्य सम्पन्ना, उत्तमस्वभावा, लावण्यमयी, प्रियदर्शिनी एवं पतिव्रता है – मैं उन समस्त स्त्रियों में निवास करती हूँ ॥12॥

जो स्त्री श्यामवर्णा है, जिसकी आँखें मृग के आँखों के समान हैं, जिसके शरीर का मध्यभाग कृश (पतला) है, जो उत्तम भ्रू-सम्पन्ना है, जिसके केश रमणीय हैं, जो उत्तम गमनशीला, सुचरित्रा, सुगभीर नाभि-सम्पन्ना, एवं समान दन्त-पङ्क्ति-सम्पन्ना हैं, मैं उस स्त्री के शरीर में नित्य वास करती हूँ ॥13॥

(लक्ष्मी के लिए वर्जनीय स्थल)

जो स्त्री पापशीला, खलस्वभावा, पति को अपने अधीन बनाकर तिरस्कार करने के लिए क्रोध करने के इच्छुक, असच्चरित्रा उस प्रेतमुखी (= असच्चरित्रा स्त्री प्रेतमुख सदृशी है) स्त्री का मैं परित्याग करती हूँ ॥14॥

वासी एवं सड़ा हुआ फूल, अनेक लोगों के साथ शयन, छिन्न आसन-वाली एवं असच्चरित्रा स्त्री को दूर से ही परित्याग करें ॥15॥

चिताङ्गारकमस्थीनि वह्निं भस्म द्विजञ्च गाम् ।
 न पादेन स्पृशेत् पादं कार्पासास्थि तुषं गुरुम् ॥16॥
 नखकेशोदकञ्चैव मैथुनं पर्वसन्ध्ययोः ।
 वर्जयेन्नग्नशायित्वमेकाकी मिष्टभोजनम् ॥17॥
 शिरःसु पुष्पं चरणौ सुपूजितौ वराङ्गनामैथुनमल्पभोजनम् ।
 अनग्नशायित्वमपर्वमैथुनं चिरं प्रनष्टां श्रियमानयन्ति षट् ॥18॥
 सम्मार्जनीरजो-वातं निर्गुण्डीं लकुचं तथा ।
 रात्रौ बिल्वञ्च शाकञ्च कपित्थं वर्जयेद्दधि ॥19॥
 स्वगात्रासनयो वाद्यमपूतं मूर्द्धपादयोः ।
 उच्छिष्ट स्पर्शनं मूर्ध्नि स्नानाभ्यङ्गञ्च वर्जयेत् ॥20॥
 शयनञ्चान्धकारे च रात्रिवासो दिने तथा ।
 म्लानाम्बरं कुवेषञ्च वर्जयेच्छुष्क-भोजनम् ॥21॥

चिता के अङ्गार, अस्थि, वह्नि, भस्म, ब्राह्मण, गाय, कार्पास-बीज, तुष, गुरु एवं अपने पैर को (अपने दूसरे) पैर के द्वारा स्पर्श न करें ॥16॥

नख या केश-युक्त-जल, पर्वकाल एवं सन्ध्याकाल में मैथुन, नग्न होकर शयन, एकाकी मिष्टान्न-भोजन का परित्याग करें ॥17॥

मस्तक पर पुष्पविन्यास, पादद्वय को धौतादि के द्वारा शुद्ध, उत्तम स्त्री मैथुन, अल्प भोजन, अनग्न अवस्था में शयन एवं पर्वकाल से भिन्न समय में मैथुन - ये छः (गुण) दीर्घकाल से नष्ट हुई श्री को मनुष्य को पुनः प्राप्त करा देती हैं ॥18॥

झाड़ू से उड़नेवाली धूल, झाड़ू की हवा, नील शेफालिका, डेहुआ का तथा रात्रिकाल में बेल, शाक, कयेद्वेल (कपित्थ) एवं दधि का वर्जन करें ॥19॥

अपने शरीर में एवं आसन में वाद्य (जैसा) बजाना, मस्तक में एवं पैर में अपवित्र-रूप में (वाद्य जैसा) बजाना, मस्तक में उच्छिष्ट (झूठा भोजनादि) का स्पर्श करना एवं स्नान के बाद तैलादि को लगान - (इन कार्यों का) वर्जन करें ॥20॥

अँधेरे घर में सोना, दिन के समय रात्रिवास को परिधान करना, मलिन वस्त्र को परिधान करना, खराब वेशभूषा को धारण करना एवं शुष्क भोजन- (इन) का परित्याग करें ॥21॥

परेणोद्धर्तितं वक्षः स्वयं माल्यापकर्षणम् ।
 आलस्यमवसादञ्च न कुर्याल्लोष्ठमर्दनम् ॥22॥
 शुक्रवारे च यत्तैलं शिलापिष्टञ्च दशके ।
 स्वयं वामेन मूर्धानं पाणिना नैव संस्पृशेत् ॥23॥
 तारकां पुष्पवन्तौ च न पश्येदशुचिः पुमान् ।
 नेक्षेद् गुह्यं परस्त्रीणां नास्तं यान्तं दिवाकरम् ॥24॥
 कुर्यान्नान्यधनाकाङ्क्षां परस्त्रीणां तथैव च ।
 परेषां प्रतिकुल्यञ्च उदितार्के प्रबोधकम् ॥25॥
 नखकण्टकरक्तैश्च मृत्तिकाङ्गार-वारिभिः ।
 वृथा विलेखनं भूमौ न कुर्यान्मम काङ्क्षया ॥26॥
 ग्रथितञ्च स्वयं माल्यं स्वयं घृष्टञ्च चन्दनम् ।
 नापितस्य गृहे क्षौरं शत्रादपि हरेच्छ्रयम् ॥27॥

दूसरे को द्वारा अपने वक्ष का मर्दन (मालिश) करवाना, स्वयं अपने गलदेश से माला को उतारना, ढेले को घिसते रहना तथा आलस्य एवं अवसाद - इनका वर्जन करें ॥22॥

शुक्रवार को तैल, अमावस्या में गन्धद्रव्य, अपने वाम हस्त के द्वारा अपने मस्तक का स्पर्श - (ये कार्य) न करें ॥23॥

(लक्ष्मी के प्रिय के लिए वर्जनीय)

पुरुष अशुचि अवस्था में नक्षत्र, चन्द्र एवं सूर्य का दर्शन न करें । पुरुष परस्त्री के गुप्त अङ्ग का दर्शन न करें । अस्तगामी सूर्य का दर्शन न करें ॥24॥

दूसरे के धन एवं स्त्री की अभिलाषा न करें । दूसरे की प्रतिकूलता (= प्रतिकूल-व्यवहार) न करें । सूर्य के उदित हो जाने के बाद जागरण न करें अर्थात् सूर्योदय के पूर्व ही निद्रा का त्याग करें ॥25॥

जो मेरी (= लक्ष्मी की) आकाङ्क्षा करता है, वह नख, कण्टक, खून, मृत्तिका, अङ्गार एवं जल के द्वारा पृथिवी पर वृथा अङ्कन न करें ॥26॥

स्वयं माला गूँथकर स्वयं उस माला को धारण करना, स्वयं चन्दन घिसकर अपने अङ्गों में लेप करना, नापित (नाऊ) के घर में क्षौर-कर्म करना - ये कार्य इन्द्र के श्री का भी हरण कर लेते हैं ॥27॥

न निन्दा गणके विप्रे पादयोर्नतनं तथा ।
 प्रतिकूलं चरेत् स्त्रीणां भुक्त्वा च दन्तधावनम् ॥२८॥
 अनृतं मांससूपं च नग्नां चैव स्त्रियं तथा ।
 भक्षणादर्शनाच्चैव शत्रादपि हरेच्छ्रयम् ॥२९॥
 मन्त्रैरयुक्तः परदारसेवी आच्चारहीनः परसेवकश्च ।
 संकीर्णचारी परिवादशीलस्तं निष्ठुरं दम्भमहं त्यजामि ॥३०॥
 शयनं चार्द्रपादेन रात्रिवासो दिने तथा ।
 उत्तरीयमधः कुर्याच्छुष्कपादेन भोजनम् ॥३१॥
 अशुचिम्लान वस्त्रञ्च दुर्गन्धमसुखावहम् ।
 अभूषणामपुष्पाञ्च न कुर्यादात्मनस्तनुम् ॥३२॥
 कर्णे च वदने घ्राणे तथा करतलेऽपि च ।
 पादे पृष्ठे तथा नेत्रे न कुर्यादनुलेपनम् ॥३३॥
 चक्षुर्लग्ने हतं श्रेयो मुखलग्ने धनक्षयः ।
 दारिद्र्यं कण्ठलग्ने च पादपृष्ठे वयःक्षयः ॥३४॥

ज्योतिषी ब्राह्मण की निन्दा, पाद-द्वय को नचाना, स्त्रीगणों के लिए प्रतिकूल आचरण करना एवं भोजन करने के बाद दन्त धावन करना (इन्हें) न करें ॥२८॥

मिथ्या वाक्य कहना, मांस का सूप पीना एवं नग्ना स्त्री का दर्शन करना - इन कार्यों को करने से इन्द्र की श्री भी हरण कर ली जाती है ॥२९॥

जो व्यक्ति मन्त्रजपहीन, परस्त्रीसेवी, आचारशून्य, दूसरे (हीन व्यक्ति) का सेवक, संकीर्ण आचरणकारी, परनिन्दाशील है, उस निष्ठुर दाम्भिक का मैं (लक्ष्मीदेवी) परित्याग करती हूँ ॥३०॥

(लक्ष्मी के प्रिय व्यक्ति के लिए परिवर्जनीय)

भींगे पैर सोना, दिन के समय रात्रि-वास (= वस्त्र) का परिधान, उत्तरीय वस्त्र को अधो अङ्ग में धारण, सूखे पैर भोजन करना, अशुचि, गन्दा, दुर्गन्धयुक्त एवं दुःखजनक वस्त्र का परिधान, अपने शरीर को अलङ्कार-शून्य एवं पुष्पादि शून्य रखना - ऐसा न करें ॥३१-३२॥

कर्ण, मुख, घ्राण, करतल, पाद, पृष्ठ एवं नेत्र पर चन्दनादि का अनुलेपन न करें ॥३३॥

चक्षु पर गन्धादि का अनुलेपन करने पर श्रेय नष्ट हो जाता है; मुख में (गन्धादि का) अनुलेपन करने पर धनक्षय हो जाता है; कण्ठ में (गन्धादि का)

करे च नासिकारन्ध्रे बुद्धिनाशोऽनुलेपनम् ।
 तस्मात् वर्जयेदेताननुलेपनभाजिनः ॥३५॥
 गन्धं पुष्पं तथा तोयं रत्नं चैव महोदधिम् ।
 गृहीतं प्रथमं वस्त्रं वर्जयेन्न कदाचन ॥३६॥
 अजारजः खररजस्तथा सम्मार्जनीरजः ।
 स्त्रीणां पादरजो राजञ्छक्रादपि हरेच्छ्रयम् ॥३७॥
 कुचैलिनं दन्तमलप्रधारिणं बह्वाशिनं निष्ठुरवाक्य भाषिणम् ।
 सूर्योदये चास्तमिते च शायिनं विमुञ्चति श्रीरति चक्रपाणिनम् ॥३८॥
 नित्यं छेदस्तृणानां क्षितिनखलिखनं पादयोरल्पपूजा ।
 दन्तानामल्पशौचं वसनमलिनता रुक्षता मूर्धजानाम् ।
 द्वे सन्ध्ये चापि निद्रा विवसनशयनं ग्रास हासातिरेकः ।
 स्वाङ्गे पीठे च वाद्यं हरति धनपतेः केशवस्यापि लक्ष्मीम् ॥३९॥

अनुलेपन करने पर दारिद्र्य होता है; पैर एवं पृष्ठ पर (गन्धादि के) अनुलेपन से आयु-क्षय हो जाता है; हस्त एवं नासिका रन्ध्रे में (गन्धादि के) अनुलेपन से बुद्धिनाश हो जाता है । इसलिए अनुलेपन के सम्बन्ध में इन समस्त अङ्गों का वर्जन करें ॥३४-३५॥

गन्ध, पुष्प, जल, रत्न, महासागर एवं वस्त्र प्रथम प्राप्त होने पर, उसका कदापि परित्याग न करें ॥३६॥

हे राजन् ! बकरी के खुर से स्पृष्ट धूल, गदहे के खुर से स्पृष्ट धूल, झाड़ू का धूल, स्त्रियों के पादों से स्पृष्ट धूल - ये सभी इन्द्र की श्री का भी हरण कर लेते हैं ॥३७॥

मलिन वस्त्र-परिधानकारी, दन्त में, मलधानी अर्थात् जो दन्तों को साफ नहीं करता है, बहुभोजी कटुभाषणकारी, सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय शयनकारी - चक्रपाणि भगवान् का भी लक्ष्मीदेवी परित्याग कर देती हैं ॥३८॥

सर्वदा तृणच्छेदन करना, नाखून से जमीन पर लिखना, पादद्वय को अपरिच्छन्न रखना, दाँतों को अच्छी प्रकार से न माँजकर थोड़ा-थोड़ा साफ करना, कपड़े (= वस्त्र) को गन्दा रखना, बालों को रुखा रखना (अर्थात् बालों में तेल न लगाना), प्रातःकाल एवं सांयकाल सोना, नग्न होकर शयन करना, अधिक भोजन करना, उच्च हास्य करना, अपने अंग में एवं बैठने के पीढ़े पर बजाना - ये सभी कार्य कुबेर के, यहाँ तक कि विष्णु के भी लक्ष्मी (= सम्पत्ति) का हरण कर लेते हैं ॥३९॥

एवं यः कुरुते नित्यं मयोक्तानि च केशव ।
 तुष्टा भवामि तस्याहं त्वय्येव निश्चला यथा ॥४०॥
 श्रीभाषितमिदं स्तोत्रं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
 तद्गृहं विपुलं रम्यं नित्यं भवति नान्यथा ॥४१॥
 व्याधितो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
 आपदस्तस्य नश्यन्ति तमः सूर्योदये यथा ॥४२॥

इति श्रीविष्णुपुराणे लक्ष्मी-केशव-संवादे
 लक्ष्मीचरित्रं समाप्तम् ॥१॥

हे केशव ! मैंने जो कुछ बताया है - इनका, जो व्यक्ति सर्वदा पालन करता है, मैं जिस प्रकार आप में अचल रहती हूँ, उसी प्रकार उस व्यक्ति पर सन्तुष्ट होकर उसमें भी अचल रहती हूँ ॥४०॥

जो प्रातःकाल उठकर लक्ष्मी के द्वारा कथित इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसका गृह सर्वदा विपुल ऐश्वर्य से समन्वित एवं सुन्दर बन जाता है । इसकी कभी अन्यथा नहीं होती है ॥४१॥

(लक्ष्मी के द्वारा कथित स्तोत्र का नित्य प्रातःकाल पाठ करने पर) रोगी रोग से मुक्त हो जाता है; बद्ध (व्यक्ति) बन्धन से मुक्त हो जाता है; सूर्योदय के होने पर जिस प्रकार अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार लक्ष्मी-स्तोत्र-पाठकारी (व्यक्ति) का भी समस्त आपद् नष्ट हो जाता है ॥४२॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र का प्रथम अध्याय समाप्त ॥१॥



द्वितीयोऽध्यायः

इन्द्र उवाच —

नमामि सर्वभूतानां जननीं पद्मसम्भवाम् ।
श्रियं मुनीन्द्रपद्माक्षीं विष्णोर्वक्षः स्थलस्थिताम् ॥1॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपालिनी ।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूमि र्मेधा श्रद्धा सरस्वती ॥2॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने ।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥3॥

आन्विक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च ।
सौम्या सौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयेदं देवि पूरितम् ॥4॥

(इन्द्र के द्वारा लक्ष्मी की स्तुति)

इन्द्र ने कहा — पद्म से अविर्भूता, मुनीन्द्रगणों के पूजोपकरण पद्म के समान आयताक्षी, विष्णु के वक्षः-स्थलस्थिता, समस्त प्राणियों की जननी, लक्ष्मीदेवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥1॥

आप समस्त साधनाओं की सिद्धिस्वरूपा हैं, देवों के उद्देश्य से हविर्दान करते समय 'स्वाहा' मन्त्र-स्वरूपा हैं, पितृगणों के उद्देश्य से द्रव्यदान करते समय 'स्वधा'-मन्त्र-स्वरूपा हैं; आप अमृतस्वरूपा, सर्वलोकों की पालनकारिणी, प्रातः मध्याह्न एवं सायंसन्ध्यारूपा, रात्रिरूपिणी, दीप्तिरूपा हैं; आप पृथिवी हैं, आप ग्रन्थार्थधारणावती बुद्धि हैं; आप अस्तिक्यबुद्धिरूपा हैं एवं आप विद्यादेवी हैं ॥2॥

हे शोभने देवि ! आप यज्ञसम्पादक विद्यारूपिणी हैं, आप महावाक्यरूप ब्रह्मविद्यारूपा हैं, आप वेद की रहस्य-विद्या-स्वरूपा हैं, आप आत्मज्ञानस्वरूपा हैं एवं आप मुक्ति-फल-दायिनी हैं ॥3॥

हे देवि ! आप तर्कविद्या, वेदविद्या, कृष्यादिविद्या हैं एवं आप ही अर्थशास्त्र हैं । आप शान्ता हैं । आप शान्त पदार्थ के रूप में इस जगत् को पूर्ण की हुई हैं ॥4॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः ।
 अध्यास्त देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः ॥5॥
 त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
 विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम् ॥6॥
 दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद् वान्यद्धनादिकम् ।
 भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणानृणाम् ॥7॥
 शरीरारोग्यमैश्वर्यं मपरिपक्षक्षयः सुखम् ।
 देवि त्वद्वृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥8॥
 त्वमम्बा सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता ।
 त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ॥9॥
 मानं कोषं तथा कोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम् ।
 मा शरीरं कलत्रञ्च त्यजेथाः सर्वपावनि ॥10॥
 मा पुत्रान् मा सुहृद्वर्गान् मा पशून् मा विभूषणम् ।
 त्यजेथा देवदेवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलाश्रये ॥11॥

हे देवि ! आपको छोड़कर और कौन ऐसी हैं, जो देवदेव गदाधारी विष्णु के सर्वयज्ञरूपी एवं योगिगणों के द्वारा चिन्तनीय शरीर में (= वक्ष में) अवस्थान कर सकती हैं ? ॥5॥

हे देवि ! पहले आपके द्वारा परित्यक्त समस्त त्रिभुवन नष्टप्राय हो गया था । इस समय पुनः आपके द्वारा (यह त्रिभुवन) वर्द्धित हो गया है ॥6॥

हे महाभाग्यवति देवि ! आपकी कृपा दृष्टि से मानव का सब कुछ अर्थात् स्त्री, पुत्र, गृह, बन्धु या अन्य धन प्रभृति सर्वदा परिपूर्ण हो जाता है ॥7॥

हे देवि ! आपकी कृपादृष्टि जिन लोगों के ऊपर वर्षित होती है, उन मानवों के लिए शरीर का आरोग्य ऐश्वर्य, शत्रुओं का नाश तथा सुख दुर्लभ नहीं होता है ॥8॥

हे जननि ! आप समस्त प्राणियों की माता हैं । आप देवदेव महादेव हैं । आप विष्णु हैं; आप ही जगत्-पिता ब्रह्मा हैं । आप ही विष्णु-रूप में चराचर जगत् को व्याप्त करती हुई अवस्थित हैं ॥9॥

देवदेव विष्णु के वक्षःस्थल-स्थिते ! समस्त जगत् पवित्रकारिणि देवि ! आपमेरे अर्थ, धान्यगृह, गृह, परिच्छद (वस्त्र), शरीर, कलत्र, पुत्रसमूह, बन्धुवर्ग सभी पशु एवं अलङ्कार - इन सभी का परित्याग न करें ॥10-11॥

सत्येनाशौच-सत्त्वाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः ।
 त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले ॥12॥
 त्वयावलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः ।
 कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥13॥
 स श्लाघ्यो गुणी धन्यः स, स कुलीनः स बुद्धिमान् ।
 स शूरः स च विक्रान्तो, यस्त्वया देवि वीक्षितः ॥14॥
 सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः ।
 पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ॥15॥
 न मे वर्णयितुं शक्ता गुणाञ्जिह्वा हि वेधसः ।
 प्रसीद देवि पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षीः कदाचन ॥16॥

पराशर उवाच —

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह हृष्टा शतक्रतुम् ।
 शृण्वतां देवदेवानां प्रादुर्भूता स्थिता द्विज ॥17॥

हे निर्मले देवि ! आप जिन मानवों का परित्याग कर देती हैं, वे सद्यः सद्यः ही (=तत्क्षण ही) सत्य, सम्यक् शौच, बल, शील, प्रभृति गुणों से रहित बन जाते हैं ॥12॥

हे देवि ! (पक्षान्तर में) आप जिनके प्रति कृपा पूर्वक अवलोकन करती हैं, वे सभी लोग (आपके अवलोकन से) पूर्व निर्गुण होने पर भी, तत्क्षण ही शील प्रभृति गुणों एवं वंश तथा ऐश्वर्य के द्वारा युक्त बन जाते हैं ॥13॥

हे देवि ! आप जिसके प्रति कृपापूर्वक अवलोकन करती हैं, वह व्यक्ति प्रशंसनीय, गुणी, धन्य, कुलीन (उच्चवंशीय), बुद्धिमान, वीर एवं पराक्रमयुक्त बन जाता है ॥14॥

हे विष्णुप्रिये ! जगद्धात्री ! आप जिसके निकट से विमुख हो जाती हैं, उसके शील प्रभृति समस्त गुण भी तत्क्षण ही विगुण (विकल) बन जाते हैं ॥15॥

हे पद्मपत्रनयने देवि ! ब्रह्मा की जिह्वा भी आपके समस्त गुणों के वर्णन करने में समर्थ नहीं होती है । हे देवि ! आप प्रसन्न होवें । कदापि हमें त्याग न करें ॥16॥

पराशर ने कहा — हे ब्राह्मण ! इस प्रकार (इन्द्र के द्वारा) स्तुत होकर लक्ष्मीदेवी आनन्दित होकर देवताओं में आविर्भूता होकर वहीं अवस्थान करती हुई, इन्द्र से सम्यक् प्रकार से कहने लगीं ॥17॥

श्रीरुवाच —

परितुष्टास्मि देवेश स्तोत्रेणानेन हेतुना ।
वरं वृणीष्व यस्त्विष्टो वरदाहं समागता ॥18॥

इन्द्र उवाच —

वरदा यदि देवि त्वं वरार्हो यदि वाप्यहम् ।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याण्यमेष मे ह्यर्थितो वरः ॥19॥
स्तोत्रेण यस्तवैतेन त्वां स्तोष्येत् पद्मसम्भवे ।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयस्तु वरो मम ॥20॥

लक्ष्मीरुवाच —

त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ सन्त्यजामि न वासव ।
दत्तो वरो मया त्वां तु स्तोत्रेण परितुष्टया ॥21॥
यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः ।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखी ॥22॥

लक्ष्मी ने कहा — हे देवाधिपते ! (आपके) इस स्तोत्र से मैं सन्तुष्ट हूँ । आपको जो अभीष्ट है, उसी के अनुसार वर की प्रार्थना करें । मैं वरदायिनी बनकर उपस्थित हुई हूँ ॥18॥

इन्द्र ने कहा — हे देवि ! यदि आप वरदायिनी बनी हैं, और मैं यदि वर को ग्रहण करने योग्य बना हूँ, तो आप त्रैलोक्य का परित्याग न करें — यही मेरा प्रार्थित वर है ॥19॥

हे पद्मसम्भूते ! इस स्तोत्र के द्वारा जो आपकी स्तुति करेगा, आप उसका परित्याग न करें — (यही) मेरा (प्रार्थित) द्वितीय वर है ॥20॥

लक्ष्मी ने कहा — हे देवश्रेष्ठ वासव ! मैं त्रैलोक्य का परित्याग नहीं करूँगी । आपके स्तोत्र से सन्तुष्ट होकर मैं आपको यह वर देती हूँ ॥21॥

जो मानव प्रातःकाल एवं सायंकाल इस स्तोत्र के द्वारा मेरा गुणगान करेगा, मैं उसके निकट से विमुख नहीं होऊँगी ॥22॥

पराशर उवाच —

एवं वरं ददौ देवी देवराजाय वै पुरा ।
 मैत्रेय ! श्रीर्महाभागा स्तोत्राराधनतोषिता ॥23॥
 भृगोर्वंशे समुत्पन्ना श्रीः पूर्वमुदधेः पुनः ।
 देवदानवयत्नेन प्रसूतामृतमन्थने ॥24॥
 एवं यदा जगत्स्वामी देवदेवो जनार्दनः ।
 अवतारं करोत्येव तदा श्रीस्तत्सहायिनी ॥25॥
 पुनश्च पद्मादुद्धृता यदादित्योऽभवद्धरिः ।
 यदा च भार्गवो रामस्तदाभूद्धरणी त्वियम् ॥26॥
 राघवत्वेऽभवत् सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनि ।
 अन्येषु चावतारेषु विष्णोरेषा सहायिनी ॥27॥
 देवत्वे देवदेहेयं मानवत्वे च मानवी ।
 विष्णोर्देहानुरूपां वै करोत्येषात्मनस्तनूम् ॥28॥

पराशर ने कहा — हे मैत्रेय ! पूर्वकाल में महाभाग्यवती लक्ष्मी देवी इस स्तोत्ररूप आराधना के द्वारा सन्तुष्ट होकर देवराज इन्द्र को इस प्रकार वर प्रदान की थी ॥23॥

पूर्वकाल में लक्ष्मी भृगुवंश में उत्पन्न हुई थी । पुनः अमृत-मन्थन के उद्देश्य से देव एवं दैत्यों के प्रयत्न से (लक्ष्मी) समुद्र से आविर्भूता हुई थीं ॥24॥

इस प्रकार देवदेव जगत्स्वामी जनार्दन जब अवतीर्ण होते हैं, तब लक्ष्मीदेवी उनकी साहाय्यकारिणी बन जाती हैं ॥25॥

विष्णु जब आदित्य-अवतार में अवतीर्ण हुए थे, तब लक्ष्मी पुनः पद्म से आविर्भूता हुई थीं और जब भृगुवंश में परशुराम अवतीर्ण हुए थे, तब यही लक्ष्मी 'पृथिवी' बनी थीं ॥26॥

श्रीरामचन्द्र के अवतार (काल) में लक्ष्मीदेवी सीता बनीं थी । कृष्णावतार में (लक्ष्मी ही) रुक्मिणी बनी थीं । अन्यान्य अवतारों में ये विष्णु की सहायिका बनी थीं ॥27॥

भगवान् विष्णु देवतारूप में अवतीर्ण होने पर, लक्ष्मी देवदेह को धारण करती हैं, (विष्णु) मानवरूप में अवतीर्ण होने पर मानवदेह को धारण करती हैं । यह लक्ष्मी एवं विध प्रकार से विष्णु के (धारण किये गये) देह के अनुसार अपना शरीर धारण करती हैं ॥28॥

यश्चैतच्छृणुजाज्जन्म लक्ष्म्याः स्तोत्रं पठेन्नरः ।
 श्रियो न विच्युतिस्तस्य गृहे यावद् कुलत्रयम् ॥२९॥
 पठ्यते येषु गेहेषु सुभक्त्या श्रीस्तवो मुने ।
 अलक्ष्मीः कलहो वाधा न तेष्वास्ते कदाचन ॥३०॥
 एतत्ते कथितं ब्रह्मन् यस्मात्त्वं परिपृच्छसि ।
 क्षीराब्धौ श्रीर्यथा जाता पूर्वं भृगुसुता सती ॥३१॥
 इति सकलविभूत्यवाप्तिहेतु स्तुतिरियमिन्द्रमुखोद्भूता हि लक्ष्म्याः ।
 अनुदिनमनु पठ्यते नृभिर्यैर्वसति न तेषु कदाचिदप्यलक्ष्मीः ॥३२॥

इति श्रीविष्णुपुराणे पराशर-मैत्रेय-संवादे
 लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥२॥

जो मानव लक्ष्मीदेवी के जन्म (कथा) का श्रवण करता है एवं उनके इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके गृह में (उसके परवर्ती) तीन वंश पर्यन्त लक्ष्मी से विच्युति नहीं होती है ॥२९॥

हे मुने ! जिन गृहों में परम भक्ति के साथ लक्ष्मी-स्तोत्र का पाठ किया जाता है, उन सभी गृहों में कदापि अलक्ष्मी, कलह एवं वाधा (विघ्न) नहीं आती है ॥३०॥

हे ब्रह्मन् ! पूर्वकाल में लक्ष्मी भृगुकन्या बनकर क्षीरसमुद्र से जिस प्रकार आविर्भूता हुई थीं, उसका विवरण आपको दिया गया, क्योंकि आपने यही पूछा था ॥३१॥

जो मानव समस्त विभूतियों के प्राप्ति के हेतुस्वरूप, इन्द्र के मुख से उच्चारित, लक्ष्मी के इस स्तोत्र का पाठ करता है, उन मानवों में कदापि अलक्ष्मी वास नहीं करती हैं ॥३२॥

इति सौभाग्यलक्ष्मी का द्वितीय अध्याय समाप्त ॥२॥

तृतीयोऽध्यायः

(श्रीसूक्तम्)

त्वं श्रीरूपेन्द्रसदने मदनैकमाता,
ज्योत्स्नासि चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये ।
सूर्ये प्रभासित-जगत्त्रितये प्रभासि,
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ॥1॥

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्ति-
र्वेधास्त्वया जगदिदं विविधं विदध्यात् ।
विश्वम्भरोऽपि विभृयादखिलं भवत्या,
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ॥2॥

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजत-स्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरन्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥3॥

(श्रीसूक्तम्)

आप उपेन्द्र (विष्णु) के गृह में श्रीस्वरूपिणी हैं, आप मदन की एकमात्र जननी हैं, चन्द्र के समान मनोहर वदन से, हे देवि ! आप चन्द्र में ज्योत्स्ना-स्वरूपा हैं, त्रिभुवनप्रकाशक सूर्य में आप प्रभास्वरूपा हैं । अपने प्रणामकारिगणों की रक्षयित्री, हे मातः लक्ष्मी ! आप सर्वदा प्रसन्न होवें । अथवा हे शरण-योग्ये ! आप नमस्कारकारियों के प्रति सर्वदा प्रसन्न होवें ॥1॥

हे लक्ष्मी प्रणामकारिगणों की रक्षयित्री ! आप, अग्नि में सर्वदा दहन के लिए अनुकूल शक्ति हैं; ब्रह्मा आपके द्वारा इस विचित्र जगत् की सृष्टि करते हैं; विश्वम्भव विष्णु भी आप ही के द्वारा सम्पूर्ण जगत् का पालन करते हैं । आप सर्वदा, नमस्कारकारिगणों के प्रति प्रसन्न होवें ॥2॥

हे अग्निदेव ! आप सुवर्ण वर्ण सदृश वर्णविशिष्टा हैं । (हरिणी के सदृश) रूपवती, समस्त ऐश्वर्य-प्रापिका, सुवर्ण एवं रजत की माला-धारिणी चन्द्र-सदृश प्रकाशमाना हैं, आप मुझे सुवर्णमयी लक्ष्मी को प्राप्त करवा दें ॥3॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥4॥

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥5॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥6॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये,
अलक्ष्मी मे नशतां त्वां वृणोमि ॥7॥

हे अग्नि देव ! आप मुझे उन अविच्युत लक्ष्मी को प्राप्त करवा दें, जिन लक्ष्मी को प्राप्त होने पर मैं सुवर्ण, गो, अश्व एवं पुत्र, मित्र एवं दास-दासी रूप परिजनों को भी प्राप्त हो जाऊँगा ॥4॥

जिन लक्ष्मीदेवी के अग्र में अश्व धावित होता है, मध्य स्थल में रथ चलता है, जो हस्ति के शब्द से जगत् को प्रबोधित करती हैं, उन लक्ष्मी का मैं आह्वान करता हूँ, वह श्रीदेवी मेरे ऊपर प्रसन्न होवें ॥5॥

जो विकसित पद्म के समान हास्ययुक्ता, सुवर्णतुल्य कान्तियुक्ता, जल से स्नान किये के समान स्निग्धदेहा, उज्ज्वल कान्तियुक्ता स्वयं तृप्ता बनकर जीव गणों को तृप्त करने वाली, पद्म पर स्थिता, पद्म के समान वर्णविशिष्टा हैं, उन श्री (लक्ष्मी) देवी का मैं आह्वान करता हूँ ॥6॥

चन्द्र के समान आनन्ददायिनी, प्रकृष्ट दीप्तिमती, यश के द्वारा प्रकाशमाना, त्रिभुवन में श्रीरूपिणी, देवगणों के द्वारा सेविता, उदार (सरल) ईकार-स्वरूपिणी उन लक्ष्मीदेवी के शरण को मैं प्राप्त कर रहा हूँ । मेरी अलक्ष्मी नष्ट हो जावें । हे देवि ! मैं आपकी प्रार्थना कर रहा हूँ ॥7॥ (ई-कार का अर्थ है 'लक्ष्मी' । 'ई-कार रूप बीज के द्वारा लक्ष्मी को समझाया जाता है । 'श्री लक्ष्मी का बीजमन्त्र है । 'श' अर्थात् श्रेयः । 'र' अर्थात् काम । 'ई' अर्थात् प्रदात्री । जो श्रेयोरूप काम्य को प्रदान करती हैं, वह 'श्री' हैं 'श्री' के ऊपर जो अर्धमात्रा या चन्द्रबिन्दु है, उसका अर्थ है 'तुरीय चैतन्य')।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो,
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु,
मायाऽन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥८॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥९॥
क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वा निर्णुदे मे गृहात् ॥१०॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां त्वामिहोपह्वये श्रियम् ॥११॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमणीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१२॥

हे आदित्य सदृश उज्ज्वलवर्ण युक्ते ! हे लक्ष्मि ! आपकी तपस्या के द्वारा अर्थात् आपकी इच्छा-मात्र से वट, अश्वत्थ प्रभृति वनस्पति एवं बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ है । आपकी इच्छा से उन वृक्षों के समस्त फल, मेरे बाह्य एवं आन्तर अलक्ष्मी को अपसारित करें ॥८॥

देवसखा कुबेर की भी कीर्ति रत्नों के साथ मेरे निकट उपस्थित होवें । इस सु-राज्य में प्रादुर्भूत होकर देवसखा मुझे कीर्ति एवं सम्पद् प्रदान करें ॥९॥

क्षुधा एवं पिपासा-रूप मलों से युक्ता, ज्येष्ठ अलक्ष्मी का मैं नाश कर दूँगा । हे देवि लक्ष्मि ! आप मेरे गृह से समस्त अनैश्वर्य एवं असम्पद को दूर करें । (लक्ष्मी की अपेक्षा अलक्ष्मी ज्येष्ठा हैं - ऐसा अनेक शास्त्रों में कहा गया है) ॥१०॥

सुगन्धाश्रय, अपराजेय, गवादि पशुओं के द्वारा सर्वदा युक्त जगत्कर्त्री, समस्त प्राणियों की इश्वरी लक्ष्मी देवी, आपको मैं यहाँ पर आह्वान् कर रहा हूँ ॥११॥

हे देवि ! मेरे मनोरथ एवं संकल्प पूर्ण हों, ऐसा करें । मैं जिससे सत्य वाक्य बोलने में समर्थ बनूँ । मेरे गवादि पशु एवं अन्न प्रचुर रहें, ऐसा करें । श्री एवं यश मुझे प्राप्त होवें ॥१२॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम ।
 श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥13॥
 आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्कित वस मे गृहे ।
 निजदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥14॥
 आर्द्रा यः करणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
 चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥15॥
 आर्द्रा यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
 सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥16॥
 तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
 यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दासोऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥17॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रे श्रीसूक्तं नाम

तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥3॥

कर्दम अर्थात् पृथिवी के द्वारा (पृथिवी से) समस्त प्रजागण उत्पन्न होते हैं । हे कर्दम ! (=कर्दमाधिष्ठात्री देवता) आप मुझमें अवस्थान करें । आप (कर्दम-देवता) मेरे वंश में पद्ममालाधारिणी जननी श्री को वास करावें ॥13॥

हे कर्दमदेव ! जलदेवता स्निग्ध द्रव्यों की सृष्टि करें । आप मेरे गृह में सर्वदा वास करें । आप अपनी निज देवी जननी श्री को मेरे वंश में वास करावें ॥14॥

हे अग्ने ! जो स्निग्धदेहा, यष्टिधारिणी, पिङ्गलवर्णा, पद्ममालाधारिणी आनन्ददायिनी एवं सुवर्णवर्णा हैं, उन लक्ष्मीदेवी को मुझे प्राप्त करवा दें ॥15॥

हे अग्ने ! जो स्निग्धदेहा, यष्टिधारिणी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णमाल्यधारिणी, सूर्य के समान दीप्तिमती एवं सुवर्णमयी हैं, उन लक्ष्मी को मुझे प्राप्त करवा दें ॥16॥

हे अग्निदेव ! मुझे उन अविच्युता लक्ष्मी को प्राप्त करवा दें, जिनके प्राप्त होने पर मैं प्रचुर सवर्ण गो, दासी, अश्व एवं परिजनवर्ग को प्राप्त हो जावेंगे ॥17॥

इति सौभाग्यलक्ष्मी तन्त्र में 'श्रीसूत्र' नामक

तृतीय अध्याय समाप्त ॥3॥

चतुर्थोऽध्यायः

(लक्ष्मीचरित्रम्)

कैलास शिखरे रम्ये नानारत्नविमण्डिते ।
नानावृक्षलताकीर्णे विहङ्गगणशोभिते ॥1॥
नानाकुसुमगुल्मैश्च वेष्टिते च गणावृते ।
देवदानवगन्धर्व-किन्नरैरूपशोभिते ॥2॥
मन्दमारुतसंवीते पार्वतीपरमेश्वरौ ।
समासीनौ कथां चक्राते तौ नित्यमुदान्वितौ ।
भक्त्या देवं प्रणम्याथ पार्वती परिपृच्छति ॥3॥

श्रीपार्वत्युवाच —

देवदेव महेशान सर्वाङ्गम विशारद ।
त्वमेव शरणं देव लोकानां दुःखनाशनः ॥4॥
कमलायाश्च माहात्म्यं ब्रूहि मे प्रमथाधिप ।
केनोपायेन देवी तु गृहे भवति सुस्थिरा ॥5॥

(लक्ष्मीचरित्र)

नाना प्रकार के रत्नों के द्वारा विभूषित, बहुविध वृक्ष एवं लताओं के द्वारा व्याप्त, पक्षिकुल से शोभित, अनेक प्रकार के पुष्पों एवं गुल्मों के द्वारा वेष्टित, प्रमथगणों के द्वारा परिव्याप्त, देव-दानव, गन्धर्व एवं किन्नरों के द्वारा उपशोभित, मन्द-मन्द वायु प्रवाह से युक्त रमणीय कैलास पर्वत के शिखरदेश में अवस्थान करते हुए सर्वदा आनन्दयुक्त पार्वती एवं महादेव वार्तालाप कर रहे थे । अनन्तर पार्वती ने महादेव को भक्तिपूर्वक प्रणाम कर प्रश्न किया - ॥1-3॥

श्री पार्वती ने कहा — हे देवदेव, महेश्वर, सर्वशास्त्रज्ञ ! हे देव ! आप सभी के शरणस्थल हैं, समस्त लोकों के दुःख-नाशकर्त्ता हैं ॥4॥

हे प्रमथाधिपते ! आप मुझे लक्ष्मी के माहात्म्य को बतावें एवं किस उपाय का अवलम्बन करने पर, गृह में लक्ष्मीदेवी सुस्थिर बनकर निवास करती हैं - इसे भी बतावें ॥5॥

श्रीशिव उवाच —

साधु साधु महाभागे यत्त्वया परिपृच्छ्यते ।
 सारात् सारतरं लोके गुह्याद् गुह्यतरं महत् ॥6॥
 सर्वपापहरं पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् ।
 सर्वमन्त्रमयं साक्षात् सर्वयज्ञफलप्रदम् ॥7॥
 चिन्तनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः ।
 विना जपेन होमेन विना ध्यानेन तपसा ।
 फलञ्च लभते मर्त्यो लक्ष्मीमाहात्म्य कीर्तनात् ॥8॥
 प्राणस्वरूपमेतत्तु न कस्मैचित् प्रकाशितम् ।
 तव स्नेहान्महादेवि कथयामि समासतः ॥9॥

श्रीशिव उवाच —

तप्तकाञ्चनवर्णाङ्गी रामां राजीवलोचनाम् ।
 नानालङ्कारभूषाढ्यां रामस्य वामतः स्थिताम् ॥10॥
 चिन्तामणिगृहेरत्नसिंहासनस्थितां सतीम् ।
 एवं सञ्चिन्त्येद् यस्तु स भवेत् कमलाप्रियः ॥11॥

श्रीशिव ने कहा — हे महाभाग्यवति ! साधु, साधु आपने जो जिज्ञासा की है, वह लोक में सार से भी सारतर है एवं गोपनीय से भी गोपनीयतर तथा महत् है ॥6॥

लक्ष्मी का माहात्म्य समस्त पापों का हरण करता है । यह पुण्य है । यह समस्त देवताओं के द्वारा किये गये नमस्कार से समन्वित है, समस्त मन्त्रस्वरूप है, समस्त यज्ञों के साक्षात् फलप्रदानकारी है । इसका यत्नपूर्वक चिन्तन करना चाहिए एवं इसका पाठ करना चाहिए । जप, होम, ध्यान एवं तपस्या के अतिरिक्त भी मनुष्य लक्ष्मी के माहात्म्य का कीर्तन करने पर (इससे अधिकतर) फललाभ करता है ॥7-8॥

हे महादेवि ! यह लक्ष्मी-माहात्म्य प्राणस्वरूप है । यह किसी के भी निकट अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है । आपके प्रति स्नेह-वश मैं इस (लक्ष्मी-माहात्म्य) को सम्पूर्ण रूप से बता रहा हूँ ॥9॥

शिव ने कहा — जो व्यक्ति तप्तकाञ्चनवर्ण (तपे हुए सोने के समान वर्ण) से विशिष्ट, मनोहर, पद्मसदृशनेत्रयुक्त, नाना अलङ्कारों से सुशोभित, रामचन्द्र के वाम में अवस्थित चिन्तामणि-गृह में रत्न-सिंहासन पर विराजित, सती लक्ष्मी देवी का इस प्रकार चिन्तन करता है, वह लक्ष्मी का प्रिय बनता है ॥10-11॥

सदाचाररता यत्र आस्तिका मानवास्तथा ।

न विरोधो गृहे यत्र तत्र लक्ष्मीर्वसेद् ध्रुवम् ॥12॥

योऽधर्मञ्च परित्यज्य धर्मञ्चापि निषेवते ।

कमला निश्चला तस्मिन् सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥13॥

अतिथेः सेवको यश्च ज्ञानयज्ञतपोरतः ।

कमला निश्चला तस्य सत्यं सत्यं वदामि ते ॥14॥

पतिपरायणा यत्र यत्र नारी सुरूपिणी ।

गेहिनी धर्मिणी यत्र तत्र लक्ष्मीर्विराजते ॥15॥

केशसंस्करणञ्चैव आदर्शं मुखदर्शनम् ।

देवानाञ्च पितृणाञ्च तर्पणं दन्तधावनम् ॥16॥

दिवसस्याग्रभागे तु न कुर्याद् यो हि मानवः ।

तं दृष्ट्वा कमला क्षिप्तं दूरतः परिवर्जयेत् ॥17॥

ग्रामे तीर्थे तथा क्षेत्रे तथान्यपथि मध्यतः ।

मलमूत्र-परित्यागी अलक्ष्म्याः स प्रियः सुतः ॥18॥

जहाँ मनुष्य सदाचार में रत रहता है एवं आस्तिक है, जिस गृह में विरोध (झगड़ा) नहीं होता है, वहीं पर लक्ष्मी निश्चल रूप से अवस्थान करती हैं ॥12॥

जो मनुष्य अधर्म का परित्याग कर धर्म की सेवा करता है, लक्ष्मी देवी उसके निकट निश्चल बनती हैं । हे पार्वति ! यह सत्य, सत्य है ॥13॥

जो व्यक्ति अतिथि का सेवक है एवं ज्ञानयज्ञ तथा तपस्या में रत है, लक्ष्मी उसके निकट निश्चला बनकर रहती हैं । आपको मैं यह सत्य, सत्य ही बता रहा हूँ ॥14॥

जिस गृह में नारी पतिपरायणा एवं सुरूपा है, गृहस्वामिनी धर्मशीला है, वहीं पर लक्ष्मी विराजिता रहती हैं ॥15॥

जो मनुष्य दिन के प्रारम्भ में (अर्थात् प्रातःकाल) सर्वप्रथम - केशसंस्कार, दर्पण में मुखदर्शन, देवता एवं पितृ-पुरुष का तर्पण तथा दन्तधावन नहीं करता है, उसे देखकर लक्ष्मी चंचल होकर दूर से ही उसका वर्जन कर देती हैं ॥16-17॥

जो (मनुष्य) ग्राम में, तीर्थ में, जमीन पर, रास्ते में, रास्ते के बीच में मल-मूत्र का परित्याग करता है, वह अलक्ष्मी का प्रिय पुत्र बनता है ॥18॥

मलं मूत्रं तथा केशं कपालं भस्म चैव हि ।
 न पादेन स्पृशेद् यो हि लक्ष्मीं समभिकाङ्क्षति ॥१९॥
 नग्नो भूत्वा न च स्नाति न च शेते उलङ्घकः ।
 लक्ष्मीर्विराजते तस्मिन् सत्यं ब्रूमि हि शङ्करि ॥२०॥
 दशाहीनं तथा छिन्नं वस्त्रं मलिनदूषितम् ।
 घृणया त्यज्यते येन स भवेत् कमलाप्रियः ॥२१॥

इति रुद्रयामले शिवगौरीसंवादे कमलाप्रीतिसाधनं नाम
 लक्ष्मीचरित्रं समाप्तम् ॥४॥

जो व्यक्ति लक्ष्मी की आकाङ्क्षा करता है, उसे अपने पैर से मल, मूत्र, केश, मनुष्य की खोपड़ी एवं भस्म को स्पर्श नहीं करना चाहिए ॥१९॥

हे शङ्करि ! जो व्यक्ति नग्न होकर स्नान नहीं करता है एवं नग्न होकर शयन नहीं करता है, उस व्यक्ति में लक्ष्मी विराज करती हैं । यह मैं सत्य बता रहा हूँ ॥२०॥

जो मनुष्य दशा (= किनारा)-रहित, छिन्न, मलिन एवं दोषादि से युक्त वस्त्र को घृणापूर्वक परित्याग कर देता है, वह लक्ष्मी का प्रिय बनता है ॥२१॥

इति सौभाग्यलक्ष्मी ग्रन्थ में लक्ष्मीचरित्र नामक
 चतुर्थ अध्याय समाप्त ॥४॥

पञ्चमोऽध्यायः

(लक्ष्मीस्तोत्रम्)

श्रीशङ्कर उवाच —

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रं मनुत्तमम् ।
पठनाच्छ्रवणाद् यस्य वरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥1॥
गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्वदेव नमस्कृतम् ।
सर्वमन्त्रमयं साक्षाच्छृणु पर्वतनन्दिनि ॥2॥
अनन्तरूपिणीं लक्ष्मीमपारगुणसागरीम् ।
अणिमादिसिद्धिदात्रीं शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥3॥
आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा सदा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥4॥
इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमन्त्र स्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥5॥

लक्ष्मीस्तोत्र

(शङ्कर-कथित-अ-कारादि क्ष-कारान्त वर्णग्रथित)

श्री शङ्कर ने कहा — अनन्तर श्रेष्ठ लक्ष्मी स्तोत्र को बता रहा हूँ, उत्तम व्यक्ति जिसका पाठ या श्रवण कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है ॥1॥

हे पर्वतपुत्रि ! यह लक्ष्मीस्तोत्र गोपनीय से गोपनीयतर है । यह पुण्यदायक है । समस्त देवताओं के द्वारा नमस्कृत (प्रशंसित) यह समस्त मन्त्रस्वरूप है । इसे साक्षात् (मेरे निकट से) सुने ॥2॥

अनन्तरस्वरूपिणी, अपारगुण समुद्रतुल्या, अणिमादि अष्टसिद्धिदात्री लक्ष्मीदेवी को मैं मस्तक के द्वारा (= मस्तक झुकाकर) प्रणाम करता हूँ ॥3॥

आप आपद से उद्धारकारिणी हैं, आप संसार के भी आदि में स्थिता हैं, आप मङ्गलमयी, परा-शक्ति-स्वरूपिणी, सभी के आदि में वर्तमान हैं, आप समस्त जीवों के लिए आनन्ददात्री हैं, आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥4॥

हे जगन्मातः ! आप चन्द्रवदना, जीवों के इष्ट-प्रदात्री इष्टमन्त्रस्वरूपिणी एवं इच्छामयी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥5॥

उमा उमापतेस्त्वं त्वं उत्कण्ठ कुलनाशिनी ।
 उर्वीश्वरि जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥6॥
 ऐरावतपतेः पूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिणी ।
 औदार्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥7॥
 कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मष नाशिनी ।
 कृष्णचित्तहरा कर्त्ति शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥8॥
 कन्दर्पदमना देवी कल्याणी कमलानना ।
 करुणार्णवसम्पूर्णा शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥9॥
 खञ्जनाक्षी खगनासा देवि खेदविनाशिनी ।
 खञ्जरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥10॥
 गोविन्दवल्लभा देवि गन्धर्वकुलपावनी ।
 गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥11॥

हे देवि लक्ष्मि जगन्मातः ! आप उमापति महादेव की उमास्वरूपिणी हैं, जीवों के उत्कण्ठाओं की नाशकारिणी हैं, पृथिवी की ईश्वरी हैं । आपको नमस्कार ॥6॥

हे लक्ष्मि देवि ! आप इन्द्र की पूज्या हैं, ऐश्वर्य प्रदानकारिणी हैं, उदारत एवं गुणसम्पन्ना हैं, आपको नमस्कार ॥7॥

हे देवि ! हे कर्त्ति ! आप कृष्ण के वक्षःदेश में स्थिता, कलि के पापों की नाशकारिणी हैं, आप कृष्ण के चित्त की हरणकारिणी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥8॥

हे देवि ! आप मदन की दमनकारिणी, कल्याणी (मङ्गलमयी), पद्मानना एवं करुणारूप समुद्र के द्वारा परिपूर्ण हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥9॥

हे देवि ! आपकी चक्षु खञ्जन पक्षी के समान सुन्दर है, गरुड़ की नासिका के सदृश आपकी नासिका है, आप जीवों की दुःख-विनाशिनी हैं, खञ्जन पक्षी की गति के समान आपकी गति है । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥10॥

हे देवि ! आप गोविन्दप्रिया, गन्धर्वों को पवित्रकारिणी एवं गोलोकवासिनी हैं । हे मातः ! आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥11॥

ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी ।
 गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥12॥
 घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी ।
 घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥13॥
 चतुर्वेदमयी चिन्त्या चित्तचैतन्यदायिनी ।
 चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥14॥
 चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
 चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मी देवि नमाम्यहम् ॥15॥
 चपला चतुराध्यक्षा चरमे गतिदायिनी ।
 चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥16॥
 छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्यनाशिनी ।
 छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥17॥

हे देवि ! हे मातः ! आप ज्ञानदायिनी, गुणप्रदायिणी, गुणों की परिचालयित्री, कल्याणकारक गुणों के आश्रय एवं गन्धपुष्पधारिणी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥12॥

हे देवि ! आप 'घनश्याम' अर्थात् श्रीकृष्ण की प्रिया हैं, घोर संसार से जीवों की तारणकारिणी हैं, घोरपापों की अपहरणकारिणी हैं । मैं आपको मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥13॥

हे देवि ! आप चतुर्वेदस्वरूपिणी, जीवों के लिए चिन्तन-योग्या, चित्त को चेतनादायिनी एवं ब्रह्मा के द्वारा पूज्या हैं । मैं आपको मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥14॥

हे देवि लक्ष्मि ! आप चैतन्यस्वरूपिणी एवं कोटिचन्द्रतुल्यप्रभाविशिष्टा हैं । आपकी नख-प्रभा चन्द्र एवं सूर्य के समान दीप्तिशील है । मैं आपको मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥15॥

हे लक्ष्मि ! आप चञ्चला, दक्षा, अध्यक्षा (परिचालिका), अन्तिम समय में जीवों की गतिदायिनी एवं चराचर की ईश्वरी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥16॥

हे जननि ! आप छत्र एवं चँवर-शोभिता हैं, दुष्टव्यक्ति के छल एवं चतुरता की नाशकारिणी हैं, समस्त छिद्रों (अपराधों) की नाशकारिणी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥17॥

जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणी ।
 जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥18॥
 जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी ।
 जीवात्मनी च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥19॥
 झिञ्झीरवस्वना देवि झञ्जावातनिवारिणी ।
 झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥20॥
 टङ्ककदायिनी त्वं हि त्वञ्च टक्काररूपिणी ।
 ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी ।
 डमरुप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥21॥
 तप्तकाञ्चनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणी ।
 त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥22॥
 त्रैलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी ।
 त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥23॥

आप जगन्माता, जगत्-कर्त्री, जगत् की आधारभूता, जयप्रदानकारिणी एवं जानकी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥18॥

हे मातः ! आप सीतापति की प्रिया हैं, मिथिलाधिपति जनक के लिए आनन्ददायिनी हैं, जीवों की आत्मस्वरूपिणी हैं । आपको मैं मस्तक अवनत करके प्रणाम करता हूँ ॥19॥

हे देवि ! झिञ्झिर-शब्द-सदृश आपका कण्ठस्वर मधुर है । आप झञ्झावायु-निवारणकारिणी हैं, डिण्डिमवाद्यप्रिया हैं आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥20॥

हे मातः ! आप मनुष्य को द्रव्य देती हैं, आप ट-काररूपिणी हैं, आप ढक्का प्रभृति वाद्य-प्रिया हैं, डम्फ वाद्य सुनकर आप आनन्दित होती हैं, आप डमरु-वाद्य को पसन्द करती हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥21॥

हे लक्ष्मीदेवि ! तप्तकाञ्चन के वर्ण के समान आपकी अङ्गकान्ति है; आप त्रिभुवन के लोगों (जीवों) की तारणकारिणी हैं; आप त्रिलोक की जननी हैं । मैं आपको अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥22॥

हे मातः ! आप त्रिलोक में सर्वातिशायी सौन्दर्यवती हैं; जीवों के त्रिविध दुःख-निवारिणी हैं; सत्त्व, रजः एवं तमो-रूप तीन गुणों की आश्रय हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥23॥

त्रैलोक्यमङ्गला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया ।
 त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥24॥
 दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्र्यापदविनाशिनी ।
 द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥25॥
 देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी ।
 दिव्याभरणभूषाङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥26॥
 दामोदरप्रियात्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी ।
 दयामयी दयाध्यक्षा (दयाध्यक्षी) शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥27॥
 ध्यानातीता धराध्यक्षा (धराध्यक्षी) धनधान्यप्रदायिणी ।
 धर्मदा धैर्यदा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥28॥
 नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनरोहिणी ।
 नवयौवनचार्वङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥29॥

आप त्रिभूवन में मङ्गलमयी हैं, आपके चरणद्वय समस्त तीर्थों के मूल हैं; आप भूत-भविष्य-वर्तमान-रूप त्रिकाल-दर्शिनी हैं; आप समस्त जीवों की त्राणकर्त्री हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥24॥

हे मातः ! आप दुर्गति-निवारिणी, दारिद्र्य एवं विपद-नाशिनी हैं; आप द्वारकावासिनी हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥25॥

देवगण बड़े कष्ट सहकर आपकी आराधना करते हैं, आप देवगणों के दुःख एवं शोक का नाश करती हैं; आपके अङ्ग दिव्य अलङ्कारों से भूषित हैं । मैं आपको अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥26॥

आप दामोदर (कृष्ण) की प्रिया हैं । आप साधक के लिए दिव्य योग का प्रदर्शन करती हैं । आप दयामयी एवं दया की परिचालिका हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥27॥

हे जननि ! आप ध्यान के अतीत हैं, पृथिवी की अध्यक्षा हैं, आप धन एवं धान्य-दायिनी हैं, आप धर्म एवं धैर्यप्रदायिनी हैं । मैं आपको अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥28॥

आप नव गोरोचना-सदृश गोरवर्णा एवं नन्द के नन्दन श्रीकृष्ण की गृहिणी हैं । आप नव-यौवनान्विता चारु अङ्गयुक्ता हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥29॥

नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी ।
 नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥३०॥
 निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा ।
 निर्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥३१॥
 पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी ।
 पराशक्तिः पराभक्तिर्लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥३२॥
 पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्द-प्रदायिनी ।
 परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३३॥
 पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।
 पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३४॥
 पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी ।
 प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३५॥

हे लक्ष्मीदेवी ! आप विविध रत्नादि अलङ्कारों से भूषित हैं । फिर आप नाना रत्नों को प्रदान भी करती हैं । हे नितम्बशालिनी, आप कमलनयना हैं । आपको नमस्कार ॥३०॥

हे लक्ष्मीदेवी ! आप निर्विकार, नित्यरूपा, परमात्मा में सम्मिलित जीव के लिए प्रेमानन्ददायिनी हैं । आप निराश्रय की गति-प्रदायिनी हैं । आपको नमस्कार ॥३१॥

हे लक्ष्मीदेवी ! आप पूर्णानन्दमयी, पूर्णसनातन ब्रह्मरूपिणी हैं । आप परमशक्ति एवं पराभक्ति-रूपिणी हैं । आपको नमस्कार ॥३२॥

हे लक्ष्मि ! आपका मुख पद्म पूर्ण चन्द्र-सदृश है । आप परमानन्दप्रदायिनी हैं । आप परमार्थरूप मोक्षदायिनी हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥३३॥

(हे देवि !) आपका नेत्रत्रय श्वेतपद्म-सदृश है । आप पुण्डरीकाक्ष विष्णु की गृहिणी हैं । आप माणिक्यधारिणी हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥३४॥

हे जननि ! अप पद्मोपरि समासीना, 'पद्मा' नाम से ख्याता एवं पद्ममाला धारिणी हैं । आप ॐ-कार स्वरूपिणी हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥३५॥

फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणी विमोहिनी ।
 फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३६॥
 विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री, विश्वधात्री विश्वेश्वरी ।
 विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥३७॥
 विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमन्त्र स्वरूपिणी ।
 वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥३८॥
 विष्णुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी ।
 विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥३९॥
 भक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तानुग्रहकारिणी ।
 भवार्णव-त्राणकर्त्री लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥४०॥

हे मातः ! आपका मुखकमल प्रकाशमान चन्द्रसदृश है, अपनी सर्पसदृश वेणी के द्वारा आप सभी को विमुग्ध करती हैं, आप अनन्तशय्याशायी विष्णु की प्रिया हैं, मैं आपको अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥३६॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप विश्व के सृजन, पालन एवं धारणकारिणी हैं, आप विश्व की ईश्वरी हैं, विश्वजनों की आराध्या हैं, जबकि आप विश्व के बाह्य हैं अर्थात् आप विश्व के साथ असंसृष्टा हैं । आपको नमस्कार ॥३७॥

हे देवि ! आप विष्णु की प्रिया हैं । आप विष्णु की शक्ति, बीजमन्त्र स्वरूपिणी, वरदानकरिणी, वाक्सिद्धियुक्ता हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ । (प्रत्येक देवता का बीजमन्त्र या मूल मन्त्र है । बीज मन्त्र एवं देवता अभिन्न हैं, जिस प्रकार नाम एवं नामी अभिन्न हैं । बीज में जिस प्रकार विशाल वृक्ष सूक्ष्म रूप से अवस्थित रहता है, उसी प्रकार बीजमन्त्र में देवता अवस्थित हैं । यहाँ पर लक्ष्मी देवी को 'समस्त जगत् की ईश्वरी' अर्थात् 'समस्त देवताओं की बीजमन्त्र स्वरूपिणी' कहा गया है ।) ॥३८॥

हे महादेवि ! हे लक्ष्मीदेवि ! आप वेणुवाद्यप्रिया, वंशीवाद्य होने पर आनन्दिता तथा विद्युत् के समान गौरी हैं । आपको नमस्कार (वेणु = पतली बाँस से निर्मित वाद्ययन्त्र; 'वंशी' = विशिष्ट बाँस से निर्मित वाद्ययन्त्र) ॥३९॥

हे लक्ष्मीदेवी ! आप भक्ति एवं मुक्ति प्रदानकारिणी हैं; आप भक्त के प्रति अनुग्रहकारिणी हैं; आप संसार-समुद्र से जीव की त्राणकारिणी हैं । आपको नमस्कार ॥४०॥

भक्तिप्रिया भागीरथी भक्तमङ्गलदायिनी ।
 भयदा भयदात्री च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥41॥
 नमोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी ।
 मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥42॥
 महाधन्या महामान्या माधवमनोमोहिनी ।
 मुखरा प्राणहन्त्री च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥43॥
 यौवनपूर्णसौन्दर्या योगमाया योगेश्वरी ।
 युग्मश्रीफलवक्षाश्च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥44॥
 युग्माङ्गदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः ।
 यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥45॥
 रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालङ्कारधारिणी ।
 रूपेन्दुकोटि-सौन्दर्या लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥46॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप भक्तों की प्रिया हैं; आप भागीरथीस्वरूपिणी हैं; आप भक्तों की मङ्गलदायिनी हैं; आप भयखण्डनकारिणी एवं अभयदायिनी हैं । आपको नमस्कार ॥41॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप भक्त की अभीष्टदायिनी, महामोहरूप माया के विनाशकारिणी, मोक्षदात्री एवं मानदायिनी हैं । आपको नमस्कार है ॥42॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप अतिशय धन्या एवं अतिशय पूज्या हैं । आप माधव के मनोमोहिनी हैं । जो लोग कटु एवं कुत्सित वाक्य कहते हैं, आप उन लोगों की प्राणविनाशिनी हैं । आपको नमस्कार ॥43॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप यौवनपूर्णा हैं । अतः सौन्दर्यातिशायिनी हैं । आप योगमाया हैं; आप योगियों की ईश्वरी हैं । युग्म बिल्व (बेल) फल के समान आपका वक्ष युग्म-स्तन विशिष्ट है । आपको नमस्कार ॥44॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप केयूरद्वय से भूषिता हैं । आप युवतियों के मस्तक-मणिस्वरूपा हैं । आप यशोदानन्द की पत्नी हैं । आपको नमस्कार ॥45॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप सातिशय रूप एवं यौवनयुक्ता हैं, रत्नों के अलंकारों को धारण करती हैं । आप रूप में कोटिचन्द्रों के सौन्दर्य से समन्विता हैं । आपको नमस्कार ॥46॥

रमा रमा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा ।
 राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥47॥
 लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी ।
 ललनाप्रीतिदात्री च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥48॥
 विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वं हि वन्दिता ।
 विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥49॥
 शुभ्रकाञ्चनगौराङ्गी शङ्खकङ्कणधारिणी ।
 शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥50॥
 षट्चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्यप्रदायिनी ।
 षोडशी वयसा त्वं हि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥51॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप हरि में रत हैं । आप जीवों को परमात्मा के साथ सम्मिलित करती हैं । आप सामन्त-राजगुणों के एकच्छत्राधिपति राजा की भी ईश्वर हैं । आप प्रसन्न होने पर दूसरे को राज्य दान करती हैं और रूष्ट होने पर राज्य का नाश कर देती हैं । आपको नमस्कार ॥47॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप लीलामयी एवं अतिशय लावण्ययुक्ता हैं; आप लोगों पर अनुग्रह करती हैं । आप स्त्रीगणों को प्रीति प्रदान करती हैं । आपको नमस्कार ॥48॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप विद्याधरी (देवयोनिविशेष की स्त्री) हैं । आप विद्या हैं; आप धनदायिनी हैं; आप जीवगणों की वन्दिता हैं; आप विन्ध्यपर्वतवासिनी हैं, आपको नमस्कार ॥49॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप शुद्ध स्वर्ण के समान गौराङ्गसम्पन्ना हैं; हस्त में शंख-निर्मित कंगन एवं कंगन धारण करती हैं । आप सभी को मङ्गल प्रदान करती हैं । आप उत्तम स्वभावयुक्ता हैं । आपको नमस्कार ॥50॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञा नामक षट्चक्रों का भेदन करती हैं । आप ऐश्वर्य, वीर्य, यशः, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य — इन षडैश्वर्यों को प्रदान करती हैं । आप सदा ही षोडशवर्षीया बनी रहती हैं, आपको नमस्कार ॥51॥

सदानन्दमयी त्वं हि सर्वसम्पत्तिदायिनी ।
 संसार-तारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥52॥
 सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा ।
 सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥53॥
 सर्वसङ्कटहन्त्री च सत्यसत्त्वगुणान्विता ।
 सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥54॥
 हेमाङ्गी च हास्यमुखी हरिचेतोविमोहिनी ।
 हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥55॥
 क्षेमकरी क्षमादात्री क्षौमवासविधारिणी ।
 क्षीरमध्या च क्षेत्राङ्गी लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥56॥

श्रीशङ्कर उवाच —

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तवं शुभम् ।
 पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥57॥

हे देवि ! आप सदानन्दमयी हैं; आप समस्त सम्पत्तियों के दान में समर्था हैं; आप जीवों का संसार से उद्धार करती हैं । मैं आपको अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥52॥

हे देवि ! आप सुन्दर केशयुक्ता हैं; आप सुखदायिनी हैं; आप सुन्दरी हैं एवं मन को अतिशय आनन्दप्रदानकारिणी हैं; देवगणों की ईश्वरी हैं; सिद्धिदात्री हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥53॥

हे देवि ! आप जीवों के समस्त संकटों का नाश करती हैं; आप सत्य एवं सत्त्वगुणयुक्ता हैं; आप सीतापति रामचन्द्र की प्रिया हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥54॥

हे देवि ! आप सुवर्ण के समान अंगविशिष्टा हैं; आपका मुखकमल हास्ययुक्त है; आप हरि के चित्त-विमोहन-कारिणी हैं; आप हरि के पादपद्म की प्रिया हैं । आपको मैं अवनत मस्तक से प्रणाम करता हूँ ॥55॥

हे लक्ष्मीदेवि ! आप मङ्गलकारिणी हैं; आप जीवों को सहनशीलता प्रदान करती हैं; आप पट्टवस्त्र-परिहिता हैं; आपका मध्यदेश दुग्ध के समान शुद्ध कृश है; आपके समस्त अङ्ग तीर्थस्वरूप हैं । आपको नमस्कार ॥56॥

शङ्कर ने कहा — प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में लक्ष्मीदेवी के अ-कारादि से क्ष-कार पर्यन्त शुभ स्तव का यत्नपूर्वक पाठ करें । करुणामयी,

पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी ।
 वाञ्छा-कल्पलता साक्षाद् भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी ॥58॥
 इदं स्तोत्रं पठेत् यस्तु शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
 इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥59॥
 इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः ।
 तच्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः ॥60॥
 शृणुयाच्छ्रावयेद् यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि ।
 राजानो वशमायान्ति त्वं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि ॥61॥
 तं दृष्ट्वा दुष्टसङ्घाश्च पलायन्ते दिशो दश ।
 भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसाः पन्नगादयः ।
 विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्तनात् ॥62॥
 सुराश्च असुराश्चैव गन्धर्वाः किन्नरादयः ।
 प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा ॥63॥

वाञ्छाकल्प-लतासदृशी, भोग एवं मोक्षदायिनी लक्ष्मीदेवी की यत्नपूर्वक पूजा करें ॥57-58॥

हे पार्वति ! जो व्यक्ति इस स्तोत्र का पाठ करता है या श्रवण करता है, उसे इष्टसिद्धि प्राप्त होती है । यह सत्य, सत्य है ॥59॥

जो भक्तियुक्त होकर इस महापुण्य स्तोत्र का पाठ करता है, उसे देखकर वादी भी मूक (=वाक्शक्तिरहित) बन जाता है । यह सत्य है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥60॥

हे पर्वतपुत्रि ! जो व्यक्ति इस लक्ष्मीस्तोत्र का श्रवण करता है या दूसरे को श्रवण कराता है; पाठ करता है या दूसरे के द्वारा पाठ करवाता है; राजागण भी उसे देखकर उसके वशीभूत बन जाते हैं ॥61॥

जो इस स्तोत्र को सुनता है या सुनाता है; पढ़ता है या पढ़वाता है अथवा इस स्तोत्र का जो कीर्तन करता है, उसे देखकर समस्त दुष्टलोग दस दिशाओं में पलायन कर जाते हैं । भूत, प्रेत, ग्रह, यक्ष, राक्षस एवं सर्पादि (उसे देखकर) भयार्त होकर अपसरण करते हैं ॥62॥

उन लक्ष्मी स्तोत्र के पाठकारी को देखकर देवता, असुर, गन्धर्व, किन्नर प्रभृति सर्वदा भक्तिपूर्वक आनन्द के साथ उसे प्रणाम करते हैं ॥63॥

धनार्थी लभते राज्यं पुत्रार्थी च सुतं लभेत् ।
 राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥64॥
 ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ।
 महापापोपपापं च तरन्ति स्तवकीर्तनात् ॥65॥
 गद्यपद्यमयी वाणी वदनात्तु प्रजायते ।
 अष्टसिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात् ॥66॥
 वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत् सुतम् ।
 पठनात् स्मरणात् सत्यं क्वचमि ते गिरिनन्दिनि ॥67॥
 भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
 भक्त्या सम्पूजयेद् यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा ॥68॥
 धारयेद्दक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकाङ्क्षया ।
 योषिद् वामभुजे धृत्वा सर्वसौख्यमयी भवेत् ॥69॥

इस श्रेष्ठ स्तव के कीर्तन के फलस्वरूप धनार्थी धन, पुत्रार्थी पुत्र एवं राज्यार्थी राज्य का लाभ करता है ॥64॥

इस स्तव का कीर्तन करने पर मानव ब्राह्मणहत्या, सुरापान, चौर्य, गुरुपत्नीगमन प्रभृति (कार्यों) से जनित महापातकों एवं समस्त उपपातकों से तर जाता है (= पार पा जाता है) ॥65॥

इस लक्ष्मी स्तोत्र का कीर्तन करने से स्तोत्र-पाठकारी के मुख से गद्य एवं पद्यमयी वाणी (वाक्य) आविर्भूत होने लगती है और वह स्तोत्रपाठकारी अष्ट सिद्धियों (अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व एवं यत्रकामावसायित्व) को प्राप्त कर लेता है ॥66॥

हे पर्वतनन्दिनी ! इस स्तोत्र का पाठ या स्मरण करने से वन्ध्या पुत्र को प्राप्त करती है एवं गर्भिणी पुत्र का प्रसव करती है । मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि यह सत्य है ॥67॥

जो पुरुष रोचना एवं कुङ्कुम के द्वारा भूर्जपत्र पर इस स्तोत्र को लिखकर भक्तिपूर्वक गन्ध, पुष्प एवं अक्षत के द्वारा पूजा करता है, वह सिद्धि की आकाङ्क्षा करते हुए दक्षिण बाहु में इसे धारण करें एवं स्त्री वाम बाहु में इसे धारण करें । ऐसा करने पर वो समस्त सुखों को प्राप्त करते हैं ॥68-69॥

विषं निर्विषतां याति, अग्निर्याति च शीतताम् ।
 शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥70॥
 बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।
 बैकुण्ठे च वसेन्नित्यं वच्मिं सत्यं सुरेश्वरि ॥71॥

इति रुद्रयामले शिवगौरीसंवादे
 अकारादिक्षकारान्तवर्णग्रथितं लक्ष्मीस्तोत्रम् ॥5॥

इस स्तव के माहात्म्य से विष भी निर्विष बन जाता है, अग्नि शीतल बन जाती है, समस्त शत्रुगण भी मित्र बन जाते हैं ॥70॥

हे देवगणेश्वरि ! और अधिक कहने का क्या प्रयोजन, इस स्तव के प्रभाव से स्तवपाठकारी वैकुण्ठ में नित्य वास करता है । यह मैं आपको सत्य बता रहा हूँ ॥71॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीग्रन्थ में
 पञ्चम अध्याय समाप्त ॥5॥



षष्ठोऽध्यायः

(कमलास्तोत्रम्)

ॐकाररूपिणी देवि विशुद्धसत्त्वरूपिणी ।
देवानां जननी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥1॥
तन्मात्रञ्चैव भूतानि तव वक्षःस्थलं स्मृतम् ।
त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥2॥
देव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस किन्नरैः ।
स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥3॥
लोकातीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता ।
विद्वज्जनकीर्तिता च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥4॥
परिपूर्णा सदा लक्ष्मि त्रात्री तु शरणार्थिषु ।
विश्वाद्या विश्वकर्त्री च प्रसन्ना भव सुन्दरी ॥5॥

कमलास्तोत्र

हे देवि ! आप ॐकार स्वरूपिणी हैं; रजः एवं तमः से रहित केवल सत्त्वस्वरूपिणी हैं; आप देवताओं की जननी हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें । (यहाँ पर ॐकार एवं उसके वाच्य को अभिन्न मानकर, लक्ष्मी को यहाँ पर 'ॐकार-स्वरूपिणी' कहा गया है) ॥1॥

हे सुन्दरी ! पञ्चतन्मात्रा अर्थात् पञ्च सूक्ष्मभूत एवं पञ्च स्थूलभूत आपके वक्षःस्थल के रूप में प्रतीत होते हैं । आप वेद के द्वारा ज्ञेया हैं । आप प्रसन्न होवें ॥2॥

हे लक्ष्मि ! देवता, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस एवं समस्त किन्नर सर्वदा आपकी स्तुति करते रहते हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें ॥3॥

हे सुन्दरि ! आप भूरादि लोकों के अतीत हैं, भेदातीत हैं, फिर भी समस्त भूतों के द्वारा वेष्टित हैं, विद्वानों के द्वारा कीर्तित हैं । आप प्रसन्न होवें ॥4॥

हे लक्ष्मि ! आप सर्वदा पूर्णा हैं, आपके शरणप्रार्थिगणों का आप त्राण करती हैं । आप विश्व के आदि हैं, विश्व की कर्त्री हैं । आप प्रसन्न होवें ॥5॥

ब्रह्मरूपा च सावित्री त्वद्दीप्त्या भासते जगत् ।
 विश्वरूपा वरेण्या च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥6॥
 क्षित्यप्तेजोमरु द्रव्योमपञ्चभूतस्वरूपिणी ।
 बन्धादे; कारणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥7॥
 महेशे त्वं हैमवती कमला केशवेऽपि च ।
 ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥8॥
 चण्डी दुर्गा कालिका च कौशिकी सिद्धिरूपिणी ।
 योगिनी योगगम्या च प्रसन्ना भव सुन्दरी ॥9॥
 बाल्ये च बालिका त्वं हि यौवने युवतीति च ।
 स्थविरे वृद्धरूपा च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥10॥
 गुणमयी गुणातीता आद्या विद्या सनातनी ।
 महत्तत्त्वादि संयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥11॥

हे सुन्दरि ! आप ब्रह्मा के स्वरूप-विशिष्टा सावित्री हैं; आपकी दीप्ति से जगत् प्रकाशित होता है । विश्वजगत् आपका स्वरूप है; आप सभी की वरणीया हैं । आप प्रसन्न होवें ॥6॥

हे सुन्दरि ! पृथिवी, जल, तेज, वायु एवं आकाशरूप पञ्चभूत आपका स्वरूप है । आप बन्धन, जन्म-मृत्यु प्रभृति के कारण हैं । आप प्रसन्न होवें ॥7॥

हे सुन्दरि ! आप महेश्वर की प्रिया हैमवती दुर्गा हैं; आप विष्णु की प्रिया लक्ष्मी हैं; आप ब्रह्मा की प्रियतरा ब्रह्माणी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥8॥

हे सुन्दरि ! आप चण्डी, दुर्गा, काली, कौशिकी एवं सिद्धिस्वरूपिणी हैं; आप योगिनी हैं एवं योग के द्वारा प्राप्या हैं । आप प्रसन्न होवें ॥9॥

हे सुन्दरी ! आप बाल्यकाल में बालिकारूपा, यौवन में युवती एवं वार्द्धक्य में वृद्धरूपा हैं । आप प्रसन्न होवें ॥10॥

हे सुन्दरि ! आप सत्त्व, रजः एवं तमोरूप गुणत्रय स्वरूपिणी हैं; फिर उक्त गुणों के अतीत भी हैं, आप आद्यारूपा हैं, आप नित्य विद्या (=चिन्मयीविद्या) स्वरूपिणी हैं । फिर आप महत् प्रभृति तत्त्वों के आश्रय भी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥11॥

तपस्विनी तपः सिद्धिः स्वर्गसिद्धिस्तदर्थिषु ।
 चिन्मयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥12॥
 त्वमादिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकारणम् ।
 त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छाचारा त्वमेव हि ॥13॥
 चराचराणां भूतानां बहिरन्तस्त्वमेव हि ।
 व्याप्यव्यापकरूपेण त्वं भासि भक्तवत्सले ॥14॥
 त्वन्मायया हतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः ।
 गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात् सदा ॥15॥
 तावत् सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा ।
 यावन्न जायते ज्ञानं चेतसा नान्यगामिना ॥16॥
 (त्वज्ज्ञानात्तु) त्वदज्ञानात् सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु ।
 रमन्ते विषयान् सर्वानन्ते दुःखप्रदान् ध्रुवम् ॥17॥

हे सुन्दरि ! आप तपस्यापरायणा हैं, फिर भी तपस्या से प्राप्त होने वाली सिद्धिरूपा हैं । आप स्वर्गप्रार्थिगणों के लिए स्वर्गसिद्धिस्वरूपा हैं । आप चिन्मयी प्रकृति (= 'जड़ा प्रकृति' कदापि नहीं) हैं । अप प्रसन्ना होवें ॥12॥

हे देवि ! आप जगत् के आदि अर्थात् उत्पत्ति के कारण हैं; आप ही (जगत् के) स्थिति-कारण हैं एवं प्रलय काल में आप ही लय-कारण हैं । आप अपनी इच्छा से काम करती हैं ॥13॥

हे भक्तवत्सला देवि ! आप चर एवं अचर, समस्त भूतों के बाहर एवं भीतर विद्यमान हैं । आप व्याप्य एवं व्यापक रूप में प्रकाशित होवें ॥14॥

आपकी माया से समस्त जीवों में से आत्मतत्त्वज्ञान अपहृत हो जाते हैं । इसलिए वे परलोक के या आत्मज्ञान (प्राप्ति) के साधन से भ्रष्ट होकर अविवेक हेतु पाप एवं पुण्य-वश सर्वदा संसार में आवागमन करते रहते हैं ॥15॥

जबतक चित्त आत्मतत्त्व से भिन्न अन्य किसी विषय में गमन नहीं करता है - (ऐसी अवस्था चित्त की आ जाती है), जबतक चित्त के द्वारा चैतन्यरूप आत्मतत्त्व को जाना नहीं जाता है, तब तक शुक्ति में रजत-दर्शन के समान, जगत् सत्य-रूप में प्रतिभासित होता है ॥16॥

आपके (ज्ञान के विषय में) अज्ञानता के कारण प्राणिगण सर्वदा पुत्र; द्वारा गृह प्रभृति से युक्त होकर, परिणाम में वस्तुतः दुःखप्रद है - एवं विध विषयों में रत रहते हैं ॥17॥

त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् ।
 चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥18॥
 ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माख्या ब्रह्मसंश्रया ।
 व्यक्ताव्यक्ता च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥19॥
 अचला सर्वगा त्वं हि मायातीता महेश्वरि ।
 शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥20॥
 सर्वकायनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी ।
 अनन्ता निष्फला त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥21॥
 सर्वेश्वरी सर्ववन्द्या अचिन्त्या परमात्मिका ।
 भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥22॥
 ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमङ्गला ।
 इन्द्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये ॥23॥

हे सुन्दरि ! हे देवगणों की ईश्वरि ! आपकी आज्ञा से ही आकाश में सूर्य एवं चन्द्र सर्वदा भ्रमण करते हरते हैं । आप प्रसन्न होवें ॥18॥

हे देवेश्वरि ! आप ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर की जननी हैं; आप ब्रह्मनाम-धारिणी हैं; आप ब्रह्माश्रिता हैं; आप व्यक्त एवं अव्यक्त हैं अर्थात् कार्य एवं कारण-स्वरूप है अथवा आप स्थूल एवं सूक्ष्म स्वरूप हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें ॥19॥

हे महेश्वरि ! आप चलनवर्जिता हैं, पुनः सर्वत्र गमन भी करती हैं । आप मायातीता हैं; शिव की आत्मस्वरूपा हैं, सर्वदा एकरूपा, नित्या हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें ॥20॥

हे सुन्दरि ! आप समस्त जीवों के समस्त शरीरों को नियन्त्रित करती हैं; आप समस्त भूतों के ईश्वर के भी ईश्वरी हैं । आप देश, काल एवं वस्तु-परिच्छेदरहिता एवं अवयवशून्या हैं । आप प्रसन्न होवें ॥21॥

हे सुन्दरि ! आप सभी की ईश्वरी हैं; सभी के लिए वन्दनयोग्या हैं; आप अचिन्तनीया हैं; आप परमात्मस्वरूपा हैं; आप जीवों को भोग एवं मुक्ति प्रदानकारिणी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥22॥

हे देवि ! आप ब्रह्मलोक में ब्रह्माणी स्वरूपा हैं; बैकुण्ठ में सर्वमङ्गला हैं, अमरावती नामक इन्द्रपुर में इन्द्राणी हैं; वरुण के पुर में आप अम्बिका हैं ॥23॥

यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा ।
 महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥24॥
 नैऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी ।
 पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥25॥
 सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी ।
 भद्रकाली च लङ्कायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥26॥
 रामेश्वरी सेतुबन्धे सिंहले देवमोहिनी ।
 विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥27॥
 कालिका त्वं कालिघट्टे कामाख्या नीलपर्वते ।
 विरजा औड्रदेशे त्वं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥28॥
 वाराणस्यामन्नपूर्णा अयोध्यायां महेश्वरी ।
 गयासुरी गयाधाम्नि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥29॥
 भद्रकाली कुरुक्षेत्रे कृष्ण कात्यायनी ब्रजे ।
 महामाया द्वारकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥30॥

आप यम के भवन में कालरूपा हैं, कुबेर के गृह में शुभा नामधारिणी हैं, अग्निकोण में महानन्दा हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें ॥24॥

नैऋत् दिशा में आप रक्तदन्ता हैं, वायुकोण में मृगवाहिनी हैं, पाताल में वैष्णवीस्वरूपा हैं । हे सुन्दरि ! आप प्रसन्न होवें ॥25॥

हे सुन्दरि ! आप मणिद्वीप में सुरसा हैं, ईशानकोण में शूलधारिणी हैं, लङ्का में भद्रकाली हैं । आप प्रसन्न होवें ॥26॥

हे सुन्दरि ! आप सेतुबन्ध में रामेश्वरी हैं, सिंहल में देवमोहिनी हैं, श्रीक्षेत्र में आप विमला हैं । आप प्रसन्न होवें ॥27॥

हे सुन्दरि ! आप कालीघाट में कालिका हैं, नीलपर्वत पर कामाख्या हैं, उड़ीसा (उड़िष्या) देश में आप विरजा हैं । आप प्रसन्न होवें ॥28॥

हे सुन्दरि ! आप वाराणसी में अन्नपूर्णा हैं, अयोध्या में महेश्वरी हैं, गया क्षेत्र में गयासुरी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥29॥

हे सुन्दरि ! आप कुरुक्षेत्र में भद्रकाली हैं, ब्रज में कात्यायनी हैं, द्वारका में महामाया हैं । आप प्रसन्न होवें ॥30॥

क्षुधा त्वं सर्वजीवानां वेला च सागरस्य हि ।
 महेश्वरी मथुरायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥31॥
 रामस्य जानकी त्वञ्च शिवस्य मनोमोहिनी ।
 दक्षस्य दुहिता चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥32॥
 विष्णुभक्तिप्रदा त्वञ्च कंसासुर विनाशिनी ।
 रावणनाशिनी चैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥33॥
 लक्ष्मीस्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः ।
 सर्वज्वरभयं नश्येत् सर्वव्याधि-निवारणम् ॥34॥
 इदं स्तोत्रं महापुण्यमापदुद्धार कारणम् ।
 त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत् सततं नरः ॥35॥
 मुच्यते सर्वपापेभ्यस्तथा तु सर्वसङ्कटात् ।
 मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ॥36॥
 समस्तं च तथा चैकं यः पठेद् भक्तितत्परः ।
 स सर्वदुष्करं तीर्त्वा लभते परमां गतिम् ॥37॥

हे सुन्दरि ! आप समस्त जीवों की क्षुधास्वरूपिणी हैं, समुद्र की वेलाभूमि अर्थात् तटभूमि हैं, मथुरा में आप महेश्वरी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥31॥

हे सुन्दरि ! आप रामचन्द्र की जानकी हैं, शिव के मनोमोहनकारिणी हैं, दक्ष की कन्यास्वरूपिणी हैं । आप प्रसन्न होवें ॥32॥

हे सुन्दरि ! आप साधक को विष्णुभक्ति प्रदान करती हैं, आपने कंसासुर का विनाश किया था, रावण का नाश भी आपने किया था । आप प्रसन्न होवें ॥33॥

जो व्यक्ति भक्तियुक्त होकर इस पुण्यजनक लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करता है, उसके सभी ज्वर नष्ट हो जाते हैं एवं सर्वरोग निवृत्त हो जाते हैं ॥34॥

जो मानव इस महापुण्यजनक एवं आपद् उद्धार के कारक स्तोत्र का तीन सन्ध्याओं में या एक सन्ध्या में नियत रूप से पाठ करता है, वह समस्त पापों से एवं समस्त सङ्कटों से, पृथिवी, स्वर्ग एवं रसातल में मुक्त हो जाते हैं । इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ॥35-36॥

जो व्यक्ति परायण होकर इस सम्पूर्ण स्तोत्र का पाठ करता है अथवा एक श्लोक का पाठ करता है, वह समस्त दुःसाध्यों का अतिक्रमण कर परम गति (लक्ष्मीलोक की प्राप्ति) को प्राप्त करता है ॥37॥

सुखदं मोक्षदं स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिसंयुतः ।
 स तु कोटि-तीर्थफलं प्राप्नोति. नात्र संशयः ॥३८॥
 एका देवी तु कमला यस्मिंस्तुष्टा भवेद् सदा ।
 तस्यासाध्यं तु देवेशि नास्ति किञ्चिज्जगत्त्रये ॥३९॥
 पठनादपि स्तोत्रस्य किं न सिद्धति भूतले ।
 तस्मात् स्तोत्रवरं प्रोक्तं सत्यं सत्यं हि पार्वति ॥४०॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रे कमलास्तोत्रम् ॥६॥

जो भक्तियुक्त होकर सुखदायक एवं मोक्षदायक इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह कोटितीर्थों का फल प्राप्त करता है । इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ॥३८॥

हे देवेश्वरि (पार्वति) ! एक लक्ष्मीदेवी सर्वदा जिसके ऊपर सन्तुष्ट रहती हैं, त्रिजगत् में उसके लिए असाध्य कुछ भी नहीं रहता है ॥३९॥

इस स्तोत्र के पाठ-मात्र से भी जगत् में क्या सिद्ध नहीं हो सकता है ? इसलिए हे पार्वति ! इस स्तोत्र राज का कथन किया गया । यह सत्य, सत्य है ॥४०॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में षष्ठ अध्याय समाप्त ॥६॥



सप्तमोऽध्यायः

(लक्ष्मीकवचम्)

लक्ष्मी मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः ।
नारायणी शीर्षदेशे सर्वाङ्ग श्रीस्वरूपिणी ॥1॥
रामपत्नी तु प्रत्यङ्गे रामेश्वरी सदाऽवतु ।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा ॥2॥
जयदात्री धनदात्री पाशाक्ष-मालिनी शुभा ।
हरिप्रिया हरिरामा जयङ्करी महोदरी ॥3॥
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्ण मनोमोहिनी ।
जयङ्करी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभङ्करी ॥4॥
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूट-निवासिनी ।
भयं हरतु भक्तानां भवबन्धं विमुञ्चतु ॥5॥
कवचं तन्महापुण्यं यः पठेद् भक्तिसंयुतः ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा मुच्यते सर्वसङ्कटात् ॥6॥

लक्ष्मीकवच

लक्ष्मी मेरे अग्र भाग की रक्षा करें; कमला मेरे पृष्ठ देश की रक्षा करें ।
मस्तक भाग में नारायणी एवं श्रीस्वरूपिणी देवी मेरे समस्त अंगों की रक्षा
करें ॥1॥

रामपत्नी रामेश्वरी मेरे प्रत्यङ्ग (उपाङ्ग) की सर्वदा रक्षा करें । विशालाक्षी,
योगमाया, कौमारी, चक्रिणी, जयदात्री, धनदात्री, शुभा, पाशाक्षमालिनी, हरिप्रिया,
हरिरामा, जयङ्करी, महोदरी, कृपा-परायण देवी, कृष्ण-मनोमोहिनी, जयङ्करी,
महारौद्री, सिद्धिदात्री, शुभङ्करी, सुखदा, मोक्षदा, चित्रकूट निवासिनी देवी — ये
भक्तों के भय का हरण करें एवं संसार-बन्धन का मोचन करें ॥2-5॥

जो व्यक्ति भययुक्त होकर इस महापुण्यजनक कवच को तीन सन्ध्याओं में
या एक सन्ध्या में पाठ करता है, वह समस्त संकट (विपद्) से मुक्त हो जाता
है ॥6॥

कवचस्यास्य पठनं धनपुत्रविवर्धनम् ।
 भीतिविनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥7॥
 भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुङ्कुमेन तु ।
 धारणाद् गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥8॥
 अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।
 मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्यास्य प्रसादतः ॥9॥
 गर्भिणी लभते पुत्रं वन्ध्या च गर्भिणी भवेत् ।
 धारयेद् यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके ॥10॥
 यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुवद् भवेत् ।
 मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले ॥11॥
 पठेद् वा पाठयेद् वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
 सर्वपाप-विमुक्तः स लभते परमां गतिम् ॥12॥

लोकों में ख्यात इस कवच का पाठ, धन एवं पुत्र का वर्धक है एवं तीनों लोकों में भय का नाशक है । रोचना एवं कुङ्कुम के द्वारा इस कवच को भूर्जपत्र पर लिखकर, कण्ठ में धारण करने पर समस्त विषयों में सिद्धि प्राप्त होती है ॥7-8॥

इस कवच के माहात्म्य से अपुत्रक पुत्र को, धनार्थी धन को एवं मोक्षार्थी मोक्ष को प्राप्त होता है ॥9॥

यदि गर्भिणी इस कवच को कण्ठ में धारण करती है अथवा इसे वामबाहु में धारण करती है, तो वह पुत्र-लाभ करती है और यदि वन्ध्या इसे कण्ठ में या वाम बाहु में धारण करती है, तो वह गर्भवती बनती हैं ॥10॥

जो नियम-परायण बनकर भक्तिपूर्वक इस कवच का पाठ कता है, वह विष्णु के समान बन जाता है । इस पृथिवी पर उसे मृत्यु-भय या रोगभय - किञ्चिन्मात्र भी नहीं रहता है ॥11॥

जो व्यक्ति इस कवच का स्वयं पाठ करता है या दूसरे को पाठ कराता है; इसे स्वयं सुनता है या दूसरे को सुनाता है; वह समस्त पापों से मुक्त होकर परम गति अर्थात् मोक्ष का लाभ करता है ॥12॥

सङ्कटे विपदे घोरे तथा च गहने वने ।
 राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः ।
 पठनाद्भारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम् ॥13॥
 अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं शृणुयाद् यदि ।
 सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम् ॥14॥
 शृणुयाद् यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।
 सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वबन्ध्याद्विमुच्यते ॥15॥
 मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं श्रवणं यदि ।
 रोगी रोगाद् विमुच्येत, पठनान्मास-मध्यतः ॥16॥
 लिखित्वा भूर्जपत्रे च अथवा ताड़पत्रके ।
 स्थापयेन्नियतं गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥17॥
 शृणुयाद्भारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
 यः पुमान् सततं तस्मिन् प्रसन्नाः सर्वदेवताः ॥18॥

इस कवच का पाठ या धारण करने से सङ्कट में, भयङ्कर विपत्ति में, घोर अरण्य में, राजगृह में, नौका में एवं युद्ध में उसे निश्चितरूप से जय-प्राप्त होती है ॥13॥

पुत्रहीना स्त्री या वन्ध्या स्त्री यदि तीन पक्ष पर्यन्त इस कवच का श्रवण करता है, तो वह दीर्घायु यशस्वी एवं सुपुत्र का लाभ करता है ॥14॥

जो व्यक्ति शुद्धचित्त से ब्राह्मण के मुख से दो महीने पर्यन्त इस कवच का श्रवण करता है, वह समस्त काम्यों को प्राप्त होता है एवं समस्त बन्धन से विमुक्त हो जाता है ॥15॥

जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है, वह यदि इस कवच का श्रवण तीन महीने पर्यन्त करे, तो उसका पुत्र (उसके बाद) नहीं मरता है, बल्कि जीवित रहता है । रोगी इस कवच का श्रवण करने पर एक महीने के अन्दर रोग से मुक्त हो जाता है ॥16॥

इस कवच को भूर्जपत्र या ताड़-पत्र पर लिखकर यदि नियमित रूप से (स्थिर रूप से) गृह में रखा जाता है, तो अग्निभय एवं चौर-भय कदापि नहीं रहता ॥17॥

जो पुरुष प्रतिदिन इस कवच का श्रवण करता है अथवा धारण करता है अथवा पाठ कराता है, उसके ऊपर समस्त देवतागण प्रसन्न हो जाते हैं ॥18॥

बहुना किमिहोक्तेन सर्वजीवेश्वरेश्वरी ।

आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रह कारिणी ॥

धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥१९॥

इति तन्त्रोक्तं लक्ष्मीकवचं समाप्त ॥७॥

और अधिक बताने का क्या प्रयोजन ? जो व्यक्ति इस कवच को धारण करता है या पाठ करता है, समस्त जीवों के ईश्वर के भी ईश्वरी, आद्याशक्ति, भक्ति के प्रति अनुग्रहकारिणी लक्ष्मीदेवी सर्वदा निश्चलरूप से स्थिर बनकर, उसमें वास करती हैं ॥१९॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में सप्तम अध्याय समाप्त ॥७॥



अष्टमोऽध्यायः

(कमलाप्रीतिसाधनम्)

मानसे सारसे रम्ये नानामुनि-समावृते ।
प्रजापतिं समासीनं नारदो वाक्यमब्रवीत् ॥1॥

नारद उवाच —

भो भो देव महाभाग सर्वलोकपितामह ।
कमला साधनं पुण्यं वक्तुमर्हसि तत्त्वतः ॥2॥
केनोपायेन भो देव नरो दुःखहरो भवेत् ।
केनोपायेन भो ब्रह्मन् चञ्चला अचला गृहे ॥3॥

ब्रह्मोवाच —

साधु पुष्टं महाभाग मुनिपुङ्गव नारद ।
परितुष्टोऽस्मि ते वत्स वक्ष्यामि यत् तवेप्सितम् ॥4॥

कमलाप्रीतिसाधन

किसी एक समय मनोहर मानस-सरोवर में अनेक मुनियों के द्वारा परिवेष्टित होकर अवस्थित ब्रह्मा से नारद मुनि ने जिज्ञासा की - ॥1॥

नारद ने कहा — हे देव ! महाभाग्यवान् ! समस्त लोकों के पितामह ! आप यथायथरूप में पुण्यकारक लक्ष्मी के साधन (लक्ष्मी की प्रीति के लिए उपयुक्त साधन) हमें बतायें ॥2॥

हे देव ! किस उपाय के अवलम्बन से मानव अपने दुःख को दूर कर सकता है ? हे ब्रह्मन् ! किस उपाय के अवलम्बन से चञ्चला लक्ष्मी गृह में अचला बनकर अवस्थान करती हैं ॥3॥

ब्रह्मा ने कहा — हे महाभाग्यवान् मुनिश्रेष्ठ नारद ! आपने अच्छा प्रश्न किया है । हे वत्स ! मैं आप पर परितुष्ट हूँ । आपके अभीप्सित प्रश्नोत्तर को मैं बता रहा हूँ ॥4॥

पुत्रजन्मनि योगे च रविसंक्रमणे तथा ।
 चन्द्रसूर्यग्रहे चैव यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥5॥
 नित्यमुषसि सन्ध्यायां तथा च भास्करोदये ।
 अशुचिस्पर्शने चैव यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥6॥
 माघे मासि हविष्याशी तथा संयतमानसः ।
 मौनी भूत्वा उषःकाले यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥7॥
 गायायाञ्च कुरुक्षेत्रे तथा वाराणसीपुरे ।
 सागरसङ्गमे चैव यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥8॥
 एकादश्यामामलकीं विष्णवे यः प्रयच्छति ।
 आमलकीजले चैव यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥9॥
 अमावस्यां तथा षष्ठ्यां नवम्यां प्रतिपद्यपि ।
 वर्जयेद्दन्तकाष्ठं तद् यदि श्रीमभिकाङ्क्षति ॥10॥

जो व्यक्ति पुत्र के जन्म होने पर, (ग्रह-नक्षत्रों के) विशेष योग होने पर, सूर्य के संक्रमण में तथा चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥5॥

जो प्रतिदिन ऊषाकाल में, सन्ध्याकाल में, सूर्योदय होने पर, स्नान करता है एवं अशुचि पदार्थ से स्पर्श होने पर स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥6॥

जो संयतचित्त बनकर एवं हविष्यान्न का भोजन करते हुए माघ महीने भर, ऊषाकाल में मौन रहकर स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥7॥

जो गया, कुरुक्षेत्र, वाराणसी एवं सागर-सङ्गम में स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥8॥

जो एकादशी तिथि में विष्णु को आमलक (आँवला) प्रदान करता है एवं आमलक से संयुक्त जल से स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥9॥

यदि कोई लक्ष्मी को प्राप्त करने की इच्छा करता है, तो उसे अमावस्या, षष्ठी, नवमी एवं प्रतिपदा में दन्तकाष्ठ का वर्जन कर देना चाहिए ॥10॥

ज्येष्ठे मासि शुक्लपक्षे तथा च दशमीतिथौ ।

गङ्गातोये च हस्तर्क्षे यः स्नाति स च लक्ष्मीभाक् ॥11॥

विरुद्धा चरणं हिंसां परदारोपसेवनम् ।

पारुष्यानृतपैशुन्यमसम्बद्धाभिभाषणम् ॥12॥

परद्रव्याभिध्यानञ्च मनसानिष्टचिन्तनम् ।

एतत् सर्वं वर्जयेद् यः स भवेत् कमलाप्रियः ॥13॥

ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत् ।

प्रातःसन्ध्यामुपासीत दन्तधावनपूर्विकाम् ॥14॥

उभे मूत्रपूरीषे च दिवा कुर्यादुदङ्मुखः ।

रात्रौ च दक्षिणे कुर्यादुभे सन्ध्ये यथा दिवा ।

छायायामन्धकारे यो लक्ष्मीं समभिकाङ्क्षति ॥15॥

गोमयाङ्गारवाल्मीक-हलाकृष्टे जले शुचौ ।

मार्गमध्ये न त्यजेयुर्मूत्रञ्चापि पूरीषकम् ॥16॥

जो व्यक्ति ज्येष्ठ महीने की शुक्लपक्ष में, हस्ता नक्षत्र में दशमी तिथि में (दशहरा में) गङ्गाजल से स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान् बनता है ॥11॥

शास्त्र-विरुद्ध आचरण, हिंसा, परस्त्री सेवा, निष्ठुर, मिथ्या, खल एवं असम्बद्ध वाक्य का कथन, पर द्रव्य की चिन्ता, मन-ही-मन (किसी की) अनिष्ट का चिन्तन करना - इन सभी कार्यों का जो वर्जन करता है, वह लक्ष्मी का प्रिय बन जाता है ॥12-13॥

जो व्यक्ति लक्ष्मी को पाने की इच्छा करता है, वह ब्राह्म-मुहूर्त्त में उठकर दन्तधावन पूर्वक प्रातःसन्ध्या करें, फिर धर्म एवं अर्थ का चिन्तन करें । दिवा भाग में उत्तराभिमुख होकर छाया में या अन्धकार में मूत्र एवं पुरीष का त्याग करें । रात्रिकाल में दक्षिणाभिमुख होकर मल-मूत्र का त्याग करें । प्रातः काल एवं सन्ध्या के समय, दिन के समान ही छाया में या अन्धकार में उत्तराभिमुख होकर मल-मूत्र त्याग करें ॥14-15॥

(लक्ष्मीवान् बनने के लिए इच्छुक व्यक्ति को) गोमय, अङ्गार, वल्मीक (दीमक का घर), लाङ्गलाकृष्ट भूमि, शुद्ध जल एवं मार्ग - इन स्थानों पर मल-मूत्र का परित्याग नहीं करना चाहिए ॥16॥

अन्तर्जलाद् देवगृहाद् वल्मीकान्मूषिकस्थलात् ।

परेषां शौचशिष्टाञ्च श्मशानानां मृदं त्यजेत् ॥17॥

एकां लिङ्गे मृदं दद्याद्द्वामहस्ते मृदो द्वयम् ।

उभयोर्द्वे च दातव्ये यदि श्रीमभिकाङ्क्षति ॥18॥

विना कारणमन्विष्य न स्नायाच्च पुनः पुनः ।

नोद्वर्तनं स्नानान्ते च यदि श्रीमभिकाङ्क्षति ॥19॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न कुर्यान्मर्मपीडकम् ।

पैशुन्यञ्च त्यजेत् सोऽपि यदि श्रीमभिकाङ्क्षति ॥20॥

इति सौभाग्यलक्ष्म्यां लक्ष्मीप्रीतिसाधनं समाप्तम् ॥8॥

जल में से, देवगृह से, वाल्मीक से, चूहे के बिल से मिट्टी लेकर या दूसरे के शौच से अवशिष्ट मिट्टी लेकर या श्मशान से मिट्टी लेकर शौचकार्य का सम्पादन न करें; इन समस्त स्थानों की मिट्टी का परित्याग करें ॥17॥

यदि कोई श्री (लक्ष्मी) की आकाङ्क्षा करता है, तो उसे शौचकाल में (मूत्र-त्याग काल में) लिङ्ग में एकबार, वामहस्त में दो-बार दोनों हाथों में दो बार मृत्तिका प्रदान करना चाहिए ॥18॥

यदि कोई लक्ष्मी की आकाङ्क्षा करता है, तो उसे किसी कारण का अन्वेषण न करके (= योग आदि कारण को न देखकर, बिना कारण ही) पुनः-पुनः स्नान नहीं करना चाहिए एवं स्नान के बाद उद्वर्तन (अर्थात् तैलादि लगाना) नहीं करना चाहिए ॥19॥

यदि कोई लक्ष्मी की आकाङ्क्षा करता है, तो वह सत्य एवं प्रिय वाक्य बोलें, लोगों के लिए मर्मान्तिक पीड़ादायक वाक्य का त्याग करें एवं पैशुन्य अर्थात् खल वाक्य (अपर के निकट अपर की निन्दा का कथन) का परित्याग करें ॥20॥

इति श्रीसौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में अष्टम अध्याय समाप्त ॥8॥

नवमोऽध्यायः

(लक्ष्मीस्तोत्रम्)

ईश्वर उवाच —

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे ।
यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥१॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया ।
पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीः पद्मधारिणी ॥२॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत् ।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ॥३॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्रोक्तं लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥९॥

लक्ष्मीस्तोत्र

महादेव ने कहा — हे त्रिलोक के जीवों के द्वारा पूजिते ! विष्णुप्रिये ! लक्ष्मीदेवि ! आप जिस प्रकार कृष्ण में सुस्थिरा बनकर रहती हैं, उसी प्रकार मुझमें भी स्थिर बन जायें ॥१॥

जो व्यक्ति लक्ष्मी की सम्यक् रूप से पूजा करके 'ईश्वरी, कमला, लक्ष्मी, चला, भूति, हरिप्रिया, पद्मा, पद्मालया, सम्पत्, उच्चै, श्री एवं पद्मधारिणी' — इन बारह नामों का पाठ करता है, लक्ष्मीदेवी उसके स्त्रीपुत्रादि के साथ स्थिर बनकर रहती हैं ॥२-३॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में नवम अध्याय समाप्त ॥९॥

दशमोऽध्यायः

(लक्ष्मीकवचप्रारम्भः)

ईश्वर उवाच —

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत् साक्षात् सदाशिवः ॥1॥
नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः ।
स भवेत् पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रेषु पारगः ॥2॥
विद्यार्थिना सदा सेव्या विशेषे विष्णुवल्लभा ॥3॥
अस्याश्चतुरक्षरी-विष्णुवनितारूपायाः कवचस्य श्रीभगवान्
शिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वाग्भवीदेवता वाग्भवं बीजम्
लज्जा शक्ती रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम
सुपाण्डित्य-कवित्वसर्वसिद्धिसमृद्धये जपे विनियोगः ॥4॥

लक्ष्मीकवच प्रारम्भ

महादेव ने कहा — हे महेश्वरि ! अनन्तर समस्त काम्यप्रद कवच का कथन कर रहा हूँ; जिस कवच के ज्ञानमात्र से मनुष्य साक्षात् सदाशिव बन जाता है ॥1॥

हे देवेश्वरि ! इस कवच की पूजा करने की आवश्यकता नहीं है । मानव इस कवच-रूप मन्त्र का मात्र जप करने पर ही पार्वतीपुत्र गणेश के समान सर्वशास्त्रों में पारङ्गत बन जाता है ॥2॥

विद्याप्रार्थी, विशेषकर लक्ष्मीदेवी की सर्वदा सेवा करें ॥3॥

यह चार अक्षर — विशिष्ट (लक्ष्मीदेवी) विष्णुवनिता-रूप देवता का जो कवच है, उसकी ऋषि (मन्त्रद्रष्टा) हैं श्रीभगवान् शिव; छन्द है अनुष्टुप्; वाग्देवी (वाग्धिष्ठात्री) हैं देवता; बीज हैं वाग्भव अर्थात् 'ऐं' । शक्ति है लज्जा 'हीं'; 'रमा' है कीलक । यह कवच कामबीज (क्लीं) स्वरूप है । मेरा सुपाण्डित्य, कवित्व एवं सर्वसिद्धि की परिपुष्टि के लिए इस कवच के जप का विनियोग (= अङ्ग या साधनरूप में प्रयोग) किया जा रहा है ॥4॥

ऐङ्करी मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा ।
 हीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शङ्करी ॥5॥
 जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्गण्डयोर्नसि ।
 ओष्ठाधरे दन्तपङ्क्तौ तालुमूले हनौ पुनः ।
 पातु विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी ॥6॥
 कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती ।
 हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ।
 सर्वाङ्गे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ॥7॥
 व्युष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु ।
 सन्धिं पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा ॥8॥
 वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मां हरिगेहिनी ।
 रमा पातु सदा देवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ॥9॥

ऐङ्करी मस्तक की रक्षा करें; वाग्भवी समस्त सिद्धियों की दात्री बनें; 'हीं' चक्षुद्वय के मध्यभाग की रक्षा करें और शङ्करी दोनों चक्षुओं की रक्षा करें । (यहाँ पर 'ऐङ्करी' लक्ष्मीदेवी की ही एक मूर्तिविशेष है । 'वाग्भवी' या 'वाग्देवता' भी लक्ष्मी के ही एक रूप हैं - ऐसा वर्णित है । 'हीं' मन्त्र का प्रतिपाद्य लक्ष्मी की मूर्तिविशेष है । 'शङ्करी' देवी भी लक्ष्मी की एक मूर्तिविशेष हैं ।) ॥5॥

विष्णुवनिता, श्रीवर्णरूपिणी लक्ष्मी मेरे जिह्वा की, मुखवृत्त (मुखमण्डल) की, कर्णद्वय, गण्डद्वय, नासिका, ओष्ठ एवं अधर, समस्त दन्त, तालुमूल एवं हनु (प्रदेश) की रक्षा करें ॥6॥

पार्वती (= लक्ष्मी की एक मूर्तिविशेष) मेरे कर्णद्वय, बाहुद्वय एवं स्तनद्वय की रक्षा करें । कामेशी महादेवी एवं समुन्नति (ये सभी लक्ष्मी की मूर्ति विशेष हैं) मेरे हृदय मणिबन्ध (हाथ की कलाई), ग्रीवा, पार्श्वद्वय एवं सर्वाङ्गों की रक्षा करें ॥7॥

व्युष्टि, महामाया, उत्कृष्टि (= लक्ष्मी की मूर्तिविशेष) - ये सर्वदा मेरी रक्षा करें । शम्भुवल्लभा देवी सर्वत्र मेरे सन्धियों (= हस्तपादादि की सन्धि-स्थलों) की रक्षा करें ॥8॥

वाग्भवी सर्वदा मेरी रक्षा करें, हरिगेहिनी मेरी रक्षा करें, रमा देवी सर्वदा मेरी रक्षा करें, माया स्वराट् स्वयं रक्षा करें ॥9॥

सर्वाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी ।
 विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥10॥
 शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।
 भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सदाऽवतु ॥11॥
 त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु ।
 पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु ॥12॥
 नवदुर्गा सदा पातु कामाख्या सर्वदाऽवतु ।
 योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ॥13॥
 मातरः पान्तु देव्यश्च चक्रस्था योगिनीगणाः ।
 सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वदा ।
 पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥14॥
 इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये ।
 यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥15॥

विष्णुमाया सुरेश्वरी लक्ष्मी मेरे सर्वाङ्ग की रक्षा करें । विजया एवं जया सर्वदा मेरे गृह की रक्षा करें ॥10॥

शिवदूती एवं सुन्दरी सर्वदा मेरी रक्षा करें । भैरवी मेरी सर्वत्र रक्षा करें । भैरुण्डा सर्वदा मेरी रक्षा करें ॥11॥

त्वरिता मेरी नित्य रक्षा करें; उग्रतारा सर्वदा रक्षा करें, कालिका मेरी नित्य रक्षा करें; कालरात्रि सर्वदा रक्षा करें ॥12॥

नवदुर्गा एवं कामाख्या मेरी सर्वदा रक्षा करें । योगिनीगण एवं मुद्रागण सर्वदा मेरी रक्षा करें ॥13॥

समस्त मातृदेवियाँ (षोडश मातृका) एवं चक्रस्थित योगिनीगण (कुछ योगिनियाँ ऐसी हैं, जो सङ्ख्यबद्धरूप में चक्र में या मण्डल में रहती हैं) सर्वत्र समस्त कार्यों में (= उत्पन्न हुए पदार्थों में) एवं समस्त क्रियाओं में सर्वदा मेरी रक्षा करें । देवगणों की देवी, समस्त समृद्धि प्रदानकारिणी, लक्ष्मी मेरी रक्षा करें ॥14॥

इस प्रकार आपको समस्त सिद्धियों के हेतु-स्वरूप इस दिव्य कवच को बताया गया । यदि आप अपने हित की इच्छा करती हैं तो इस (कवच) को जहाँ-तहाँ न बतायें ॥15॥

शठायू भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि ।
 न्यूनाङ्ग अतिरिक्ताङ्गे दर्शयेन्न कदाचन ॥16॥
 न स्तवं दर्शयेद्विव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत् ॥17॥
 कुलीनाय महोच्छ्राय दुर्गाभक्तिपराय च ।
 वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात् कवचमुत्तमम् ॥18॥
 निजशिष्याय शान्ताय धनिने ज्ञानिने तथा ।
 दद्यात् कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम् ॥19॥
 विलिख्य कवचं दिव्यं स्वयम्भूकुसुमैः शुभैः ।
 स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागन्धसमन्वितैः ॥20॥
 गोरोचनाकुङ्कुमेन रक्तचन्दनकेन वा ।
 सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने ॥21॥
 अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च ।
 पूर्वभाद्रपदायोगे स्वात्यां मङ्गलवासरे ॥22॥

हे महेश्वरि ! शठ, भक्तिहीन, निन्दा करने वाला, जिसके शरीर का कोई अङ्ग न्यून (कम) या अधिक है - एवंविध व्यक्ति के निकट कदापि इस कवच को प्रकाशित न करें । ऐसे लोगों को इस दिव्य स्तव को प्रदर्शित न करें, प्रदर्शित करने पर शिवघाती बन जावेंगी ॥16-17॥

उच्च वंश में उद्भूत, स्वयं उन्नत, दुर्गाभक्ति परायण, विशुद्ध वैष्णव — इन्हें इस उत्तम कवच को प्रदान करें ॥18॥

अपने संयतेन्द्रिय शिष्य को एवं ज्ञानवान् धनी को इस सर्वशास्त्रसमन्वित कवच को प्रदान करें — यही बताया गया है ॥19॥

शुभ स्वयम्भूकुसुम के द्वारा, नाना प्रकार के गन्धद्रव्य समन्वित अपने शुक्र या दूसरे के शुक्र के द्वारा अथवा गोरोचना कुङ्कुम के द्वारा या रक्तचन्दन के द्वारा इस दिव्य कवच को लिखकर शुभ तिथि में, शुभ योग में, या रविवार में श्रवणा नक्षत्र में या अश्विनी, कृत्तिका, फाल्गुनी, मघा, पूर्वभाद्रपद नक्षत्र में अथवा मङ्गलवार को स्वाती नक्षत्र में, शुभ योग में, देव मन्दिर में, इस स्तोत्र (कवच) को लिखकर पाठ करें । उत्तम चरित्र-सम्पन्न व्यक्ति आयुष्मान् योग में (ज्योतिषशास्त्रोक्त सत्ताईस

विलिखेत् प्रपठेत् स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये ।
 आयुष्मत्-प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः ॥23॥
 इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्रयोगे तथैव च ।
 कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः ॥24॥
 शून्यागारे श्मशाने वा विजने च विशेषतः ।
 कुमारीं पूजयित्वादौ यजेद्देवीं सनातनीम् ॥25॥
 मत्स्यमांसैः शाकसूपैः पूजयेत् परदेवताम् ।
 धृताद्यैः सोपकरणैः पूपसूपैर्विशेषतः ॥26॥
 ब्राह्मणान् भोजयित्वादौ प्रीणयेत् परमेश्वरीम् ॥27॥
 बहुना किमिहोक्तेन कृते त्वेवं दिनत्रयम् ।
 तदाधरेन्महारक्षां शङ्करेणाभिभाषितम् ॥28॥

योगों में से एक योग-विशेष में) या प्रीतियोग में या ब्रह्मयोग में, विशेषतः इन्द्रयोग में, शुभयोग में या शुक्र योग में, कौलव नामक करण में (ग्यारह करणों में एक करण-विशेष) या बालव करण में या वणिज् करण में (इस कवच को लिखें) ॥20-24॥

शून्य (जन-परित्यक्त) गृह में अथवा श्मशान में, विशेष कर निर्जन में, पहले कुमारी की पूजा कर, सनातनी (नित्या) लक्ष्मी देवी की पूजा करें ॥25॥

मत्स्य, मांस, शाक, दाल, नाना प्रकार के उपकरणों के साथ घृतादि के द्वारा विशेषतः पिष्टक तथा पायस के द्वारा परदेवता लक्ष्मी की पूजा करें । बाद में पहले ब्राह्मणों को भोजन कराकर, परमेश्वरी (लक्ष्मी) को प्रीत करावें ॥26-27॥

और अधिक कहने का क्या प्रयोजन ? इस प्रकार (= पहले इस प्रकार कवच लिखकर, पढ़कर, लक्ष्मी की पूजादि करने की बात कही गयी है - उस प्रकार) तीन दिन करने पर महारक्षा को धारण कर लेंगे । अर्थात् एवं विध अनुष्ठानकारी व्यक्ति समस्त विपत्तियों से रक्षा प्राप्त कर लेते हैं । ऐसा शङ्कर (शिव) ने कहा है ॥28॥

मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः ।

स भवेत् पावतीपुत्रः सर्वशास्त्र विशारदः ॥२९॥

गुरुर्देवो हरः साक्षात् पत्नी तस्य हरप्रिया ।

अभेदेन भजेद् यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥३०॥

पूर्वोक्त प्रकार से जो (व्यक्ति) कवचादि को लिखकर, पढ़कर, कुमारीपूजा कर, फिर लक्ष्मी की पूजा एवं ब्राह्मण भोजनादि को करता है; वह मारण, द्वेषण प्रभृति का लाभ करता है । इस विषय में कोई सन्देह नहीं है एवं वह व्यक्ति पार्वतीपुत्र के समान सर्वशास्त्रविशारद बन जाता है ।

तन्त्र में षट्कर्मों की बात कही गयी है । यथा- मारण, विद्वेषण, स्तम्भन, वशीकरण, उच्चाटन एवं शान्तिकर्म । जिस कार्य या मन्त्रादि के द्वारा दूसरे का विनाश साधन किया जाता है, उसे 'मारण कर्म' कहते हैं ।

जिस कार्य के द्वारा दो लोगों में या अनेक लोगों में परस्पर विद्वेष-उत्पादन किया जाता है, उसे 'विद्वेषण' या 'द्वेषण' कहते हैं ।

जिस कार्य का मन्त्रादि के द्वारा शरीर में विभिन्न अंशों की प्रवृत्ति का रोध किया जाता है, उसे 'स्तम्भन' कहते हैं ।

जिस कार्य के द्वारा दूसरे को वशीभूत किया जाता है, उसे 'वशीकरण' कहते हैं ।

जिस कार्य के द्वारा किसी व्यक्ति को उसके देश या पदवी से च्युत कराया जाता है, उसे 'उच्चाटन कर्म' कहते हैं ।

जिस कार्य के द्वारा अपने रोगादि का नाश या ग्रहदोषादि का दूरीकरण किया जाता है, उसे 'शान्तिकर्म' कहते हैं ।

इन षट्कर्मों की पृथक्-पृथक् प्रक्रियायें हैं । यहाँ पर कहा गया है कि -) जो लक्ष्मीपूजा करके, लक्ष्मीकवच को पूर्वोक्त प्रकार से लिखकर (उसका) पाठादि करता है, वह साधक मारण, विद्वेषणादि षट्कर्मों के फल को प्राप्त होता है । उसे पुनः पृथक्-रूप में षट्कर्मों की प्रक्रिया करने की आवश्यकता नहीं होती ॥२९॥

गुरुदेव साक्षात् शिवस्वरूप हैं और गुरुपत्नी हरप्रिया पार्वती स्वरूपा हैं । जो व्यक्ति गुरु को शिव के साथ अभिन्न रूप में एवं गुरुपत्नी को पार्वती के साथ अभिन्न रूप में भजना करता है, उनके लिए सिद्धि सन्निहित (= पास) होती है ॥३०॥

सर्वदेवमयीं देवीं सर्वमन्त्रमयीं तथा ।
 सुभक्त्या पूजयेद् यस्तु स भवेत् कमलाप्रियः ॥३१॥
 रक्तपुष्पैस्तथा गन्धैर्वस्त्रालङ्करणैस्तथा ।
 भक्त्या यः पूजयेद्देवीं लभते परमां गतिम् ॥३२॥
 नारी वा पुरुषो वापि यः पठेत् कवचं शुभम् ।
 मन्त्रसिद्धिं कार्यसिद्धिं लभते नात्र संशयः ॥३३॥
 पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।
 जपफलमनुमेयं लप्स्यते यद्विधेयम् ।
 स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः ।
 क्षतिपमुकुट-लक्ष्मीर्लक्षणानां चिराय ॥३४॥

इति विश्वसारतन्त्रोक्तं लक्ष्मीकवचं समाप्तम् ॥१०॥

जो व्यक्ति लक्ष्मीदेवी की समस्त देवमयी-रूप में एवं समस्त मन्त्रमयी-रूप में अत्यन्त भक्तिपूर्वक पूजा करता है, वह लक्ष्मी का प्रिय बनता है ॥३१॥
 जो रक्तपुष्प, गन्ध, वस्त्र एवं अलंकारों के द्वारा भक्तिपूर्वक लक्ष्मीदेवी की पूजा करता है, वह परम गति (= देवीलोकप्राप्ति) को प्राप्त होता है ॥३२॥
 स्त्री हो या पुरुष - जो भी इस शुभ कवच का पाठ करता है, वह मन्त्रसिद्धि एवं कार्यसिद्धि का लाभ करता है - इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ॥३३॥
 जो मनुष्य आर्द्रचित्त अर्थात् भक्तियुक्त होकर, इहलोक में नित्य इस कवच का पाठ करता है, वह जप का फल, जो अनुमेय है और प्राप्तव्य (प्राप्त करने योग्य) है, उसका लाभ करता है एवं राजमुकुट प्रभृति लक्ष्मी के चिह्न स्वरूप जो समस्त सम्पद् हैं, उन सम्पद् के चरणों में नत होकर सम्पद् के उच्च पद पर अधिष्ठित हो जाता है ॥३४॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में दशम अध्याय समाप्त ॥१०॥

एकादशोऽध्यायः

(लक्ष्मीमाहात्म्यम्)

अथ वक्ष्ये लक्ष्मीदेव्याः पूजाफलं विधानतः ।
सर्वा वै विफला पूजा कमला पूजनं विना ॥1॥
परिपूर्णफलं नैव जीवहीनं यथा वपुः ॥2॥
यथा यथा देवतायाः पूजनं वा यथा गुरोः ।
तथैव हि च सर्वेषां लक्ष्म्यास्तु पूजनं भवेत् ॥3॥
यथाशक्ति हि वितरेत् कमलायै यदीप्सितम् ।
अशक्यं शक्यमेवं वा दानाभावे फलात्ययः ॥4॥
पुष्पं तस्यै च यद्वत्तं तन्मेरुसदृशं मतम् ।
दत्त मन्यच्च यत्किञ्चिद् भक्ष्यभोज्यादिकं तथा ।
अल्पमप्यथवा तस्य हीनं बहुगुणं भवेत् ॥5॥

लक्ष्मी का माहात्म्य

इसके अनन्तर, विधि के अनुसार लक्ष्मीदेवी की पूजा करने के फल को बता रहा हूँ, क्योंकि लक्ष्मी की पूजा के बिना समस्त पूजा ही व्यर्थ है ॥1॥

जीवहीन (= प्राणहीन) शरीर जिस प्रकार किसी कार्य में समर्थ नहीं है, उसी प्रकार लक्ष्मीपूजा के बिना अन्यान्य पूजा परिपूर्ण रूप में फलदायक नहीं होती है ॥2॥

जिस प्रकार देवता की पूजा या गुरु की पूजा जिस प्रकार (भक्तिपूर्वक यथोचित विधि से) करनी चाहिए, उसी प्रकार सभी (व्यक्तियों) को लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए ॥3॥

जो (स्वयं की) ईप्सित है, उसे यथाशक्ति लक्ष्मी देवी को प्रदान करें । उस ईप्सित वस्तु का दान करना कठिन ही हो या सहज, उसका दान न करने पर, फल की प्राप्ति नहीं होती है ॥4॥

उन लक्ष्मी को जितना (कम भी) पुष्प प्रदान किया जाता है, उसका फल सुमेरु-पर्वत के समान बन जाता है और अन्य जो कुछ भी भक्ष्य पदार्थ (= जिसे दाँत से भली प्रकार चबाकर खाते हैं, वह 'भक्ष्य' है) या भोज्य पदार्थ (= जिस भोजन को साधारण-रूप से खाते हैं, वह 'भोज्य' है) - इन्हें थोड़ी मात्रा में हो या निकृष्ट भी हो - जो कुछ भी लक्ष्मी को प्रदान किया जाता है, उसका फल बहुत गुणा अधिक प्राप्त होता है ॥5॥

कमलापूजनाच्चैव कमलासधनादपि ।
कमलावन्दनादेव कमला सदृशो भवेत् ॥6॥

कमला च भवेद्देवी कमला सर्वदेवता ।
कमला पार्वती साक्षाद् कमला सर्वकारणम् ॥7॥

यस्याः पूजनमात्रेण त्रैलोक्यपूजनं भवेत् ।
कमला च महादेवी त्रिधामूर्तिर्व्यवस्थिता ।
परा चैवापरा चैव तृतीया च परापरा ॥8॥

यत्र काले न किञ्चिद् स्याद्देवासुरमहोरगाः ।
त्रैलोक्यं लयमानञ्च तदाहभूत् कमलात्मिका ॥9॥

भूर्भुवोर्मूर्तिरूपा सा एका पूज्या तु सा भवेत् ।
नित्यक्रमेण देवेशीं पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥10॥

अष्टोत्तरं शतं वापि तन्मन्त्रं प्रजपेत् सुधीः ॥11॥

असुराश्च तथा नागा ये च दुष्टग्रहा अपि ।

भूत वेताल गन्धर्वा डाकिन्यो यक्ष-राक्षसाः ॥12॥

लक्ष्मी की पूजन करने से, लक्ष्मी की आराधना करने से एवं लक्ष्मी की वन्दना करने से (पूजक) लक्ष्मी के सदृश बन जाता है ॥6॥

लक्ष्मी श्रेष्ठ देवता हैं, लक्ष्मी सर्वदेवतास्वरूपिणी हैं, लक्ष्मी साक्षात् पार्वती स्वरूपा हैं, लक्ष्मी सभी के कारण हैं ॥7॥

जिनकी पूजा करने मात्र से त्रैलोक्य की पूजा की जाती है, वह महादेवी लक्ष्मी परा, अपरा एवं तृतीय - परापरा इन तीन मूर्तियों में विशेषरूप से अवस्थित हैं ॥8॥

जिस (प्रलय) काल में कुछ भी नहीं था; देवता, असुर, सर्प प्रभृति नहीं थे; त्रैलोक्य लीन हो गया था, तब समस्त जगत् लक्ष्मीस्वरूप था ॥9॥

वह लक्ष्मी भूलोक एवं भुवर्लोक की मूर्तिस्वरूपा हैं, वह अकेली ही पूज्या बनती हैं । उन देवेश्वरी लक्ष्मी की विधिपूर्वक नित्य पूजा करें ॥10॥

सुधी व्यक्ति लक्ष्मी के मन्त्र का 108 बार प्रतिदिन जप करें ॥11॥

जो मानव लक्ष्मीदेवी की पूजा करता है, उसके ऊपर असुर, नाग, दुष्ट-ग्रह, भूत, वेताल, गन्धर्व, डाकिनीगण, यक्ष, राक्षस, क्रूर देवगण, भू, भुव,

क्रूराश्च देवताः सर्वे भूर्भुवश्चैव भैरवाः ।

पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम् ॥13॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।

ते तुष्टाः परितुष्टाश्च यस्तु लक्ष्मीं प्रपूजयेत् ॥14॥

कमलापूजनाच्चैव कोटिपूजाफलं लभेत् ।

हन्ति विघ्नान् पूजिता सा तथा शत्रुं महोत्कटम् ।

व्याधयः सर्वारिष्टानि पलायन्ते न संशयः ॥15॥

ग्रहा यक्षाः क्षयं यान्ति भूत वेताल पन्नगाः ॥16॥

असुरा गुह्यकाः प्रेता योगिनी गुह्यडाकिनी ।

महामायानि दुर्भिक्षमुत्पातानि सहस्रशः ॥17॥

दुःस्वप्नमपमृत्युश्च अन्ये ये ये उपद्रवाः ।

कमलापूजनादेव न तस्य प्रभवन्ति च ॥18॥

अणिमादिकसिद्धीश्च पातालगुटिकाञ्चनाः ।

चतुष्कं दिव्यवेतालाप्नुयात् कमलार्चनात् ॥19॥

भैरव, पृथिवी - प्रभृति समस्त भूत, चराचर सहित ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव - ये सभी तुष्ट एवं परितुष्ट बन जाते हैं ॥12-14॥

जो मानव लक्ष्मी की पूजा करता है, वह लक्ष्मी की पूजा से ही कोटि पूजाओं का फल प्राप्त करता है । वह लक्ष्मी पूजिता होने पर, समस्त विघ्न एवं अति उत्कट शत्रु का विनाश कर देती हैं । लक्ष्मी पूजक की समस्त व्याधि एवं अमङ्गल उससे दूर पलायन कर जाता है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥15॥

लक्ष्मी की पूजा से ही ग्रह, यक्ष, भूत, वेताल, सर्प, असुर, गुह्यक (अपदेवता-विशेष), प्रेत, योगिनी, गुह्यडाकिनी, समस्त महारोग, सहस्र-सहस्र दुर्भिक्ष एवं उत्पात क्षय को प्राप्त हो जाता है ॥16-17॥

दुःस्वप्न, अपमृत्यु एवं और भी जो समस्त उपद्रव हैं; वे सभी उपद्रव लक्ष्मीपूजा (करने) से ही पूजाकारी के निकट प्रादुर्भूत नहीं होता है ॥18॥

लक्ष्मी की पूजा से अणिमादि अष्टसिद्धियाँ, पातालसिद्धि, गुटिकासिद्धि, अञ्जनसिद्धि - ये चार प्रकार की सिद्धियाँ एवं दिव्य वेताल को प्राप्त किया जाता है । (जिस सिद्धि से पाताल में प्रवेश करने की क्षमता का लाभ होता है, उसे पातालसिद्धि कहते हैं । गोटी (गुटिका) चलाकर चोर प्रभृति को पकड़ना या ईप्सित

यथा यथा तत्प्रियकृत् सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
 महाभये समुत्पन्ने कमलां यः प्रपूजयेत् ।
 तत्क्षणाल्लभते मोक्षं सत्यं सत्यं न संशयः ॥20॥
 ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
 ते तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च कमलां यः प्रपूजयेत् ॥
 गोहत्या स्त्रीवधश्चैव सर्वं पापं प्रणश्यति ॥21॥
 मातरः पितरश्चैव भ्रातरश्चैव सर्वतः ।
 ते तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च कमलां यः प्रपूजयेत् ॥22॥
 भुक्ति-मुक्तिफलं तेषां सौभाग्यं सर्वसम्पदः ।
 विष्णुलोके वसेन्नित्यं त्रिनेत्रो भगवानिव ॥23॥

व्यक्ति को प्राप्त करना, जिस सिद्धि के द्वारा किया जाता है, उसे 'गुटिकासिद्धि' कहते हैं । चक्षु में अञ्जन लगाकर लोगों के निकट से अदृश्य हो जाना या रात्रि में दिन के समान देख सकना, दूर तक देख सकना इत्यादि सिद्धियों को 'अञ्जनसिद्धि' कहते हैं । मन्त्रादि साधन के द्वारा दिव्य (असाधारण) वेताल को प्राप्त होकर, उसके द्वारा नाना प्रकार के अलौकिक कार्यों को अथवा अन्य बहुत कुछ विषयों को जाना जा सकता है । इस सिद्धि को 'वेतालसिद्धि' कहते हैं ॥19॥

साधक जैसे-जैसे (जिस-जिस प्रकार से) लक्ष्मी के प्रिय कार्यों का अनुष्ठान करता जाता है, वैसे-वैसे (उस-उस प्रकार से) वह समस्त सिद्धियों का अधीश्वर बनता जाता है । महाभय के उपस्थित होने पर, जो लक्ष्मी की पूजा करता है, वह तत्क्षण उस भय से मुक्त हो जाता है । यह सत्य-सत्य है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥20॥

जो लक्ष्मी की पूजा करता है, उसके प्रति ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव - ये सन्तुष्ट होते हैं और सभी सन्तुष्ट होते हैं और गोवध, स्त्री वध - प्रभृति समस्त पाप; जो उसने किया है, सभी नष्ट हो जाते हैं ॥21॥

जो लक्ष्मी की पूजा करता है, उसके प्रति मातृगण, पितृगण, भ्रातृगण - सभी प्रकार से सन्तुष्ट होते हैं एवं सभी सन्तुष्ट होते हैं ॥22॥

जो लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं, उन्हें भोग, मोक्ष, सौभाग्य एवं समस्त सम्पद् प्राप्त होते हैं एवं अन्त में त्रिनेत्र भगवान् के समान उसे विष्णुलोक में वास (करने का सौभाग्य) प्राप्त होता है ॥23॥

षष्टिकोटिसहस्राश्वमेधानां स फलं लभेत् ।
प्रतिवर्षञ्च यः कुर्याद्भक्त्या तु कमलार्चनम् ।
विष्णुलोके वसेन्नित्यं सर्वैश्वर्यसमन्वितः ॥24॥

यः करोति हि पुण्यात्मा देवताप्रीतिमाप्नुयात् ।
मनोऽभिलषितं प्राप्य चान्ते मोक्षमवाप्नुयात् ॥25॥

यः करोति विधानेन सर्वान् कामान् समश्नुते ।
इह भुक्त्वाखिलान् भोगान् देववत् प्रियदर्शनः ।
अन्ते देव्यास्तु मिलनं लभते नात्र संशयः ॥26॥

माघे मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यां तिथौ तथा ।
स्नात्वाचम्य च शुद्धात्मा न्यासान् कृत्वा विधानतः ॥27॥

दीपं संस्थाप्य पुरत उत्तराभिमुख स्थितः ।
अथ सावरणां देवीं ध्यात्वा विधिवदर्चयेत् ॥28॥

अष्टोत्तरसहस्रन्तु जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ॥29॥

जो प्रत्येक वर्ष भक्तिपूर्वक लक्ष्मी की पूजा करता है, उसे साठ कोटि हजार अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है एवं अन्त में समस्त ऐश्वर्यों से युक्त होकर नित्य विष्णुलोक में वास करता है ॥24॥

जो पुण्यात्मा लक्ष्मी देवता की प्रीति-प्राप्ति के साधनीभूत कर्मों को करता है, वह मन के अभिलषित को प्राप्त होकर, अन्त में मुक्ति को प्राप्त होता है ॥25॥

जो व्यक्ति विधिपूर्वक लक्ष्मी की पूजा करता है, वह समस्त काम्यों को प्राप्त होता है; इह लोक में सर्वप्रकार के भोग्यों का भोग कर, देवता के समान सुन्दर रूप-विशिष्ट बनकर, अन्त में लक्ष्मीदेवी के साथ मिलित हो जाता है । इसमें सन्देह नहीं है ॥26॥

माघ के महीने में, शुक्ल पक्ष में, पूर्णिमा तिथि में, स्नान-आचमन-पूर्वक शुद्धचित्त होकर, विधिवत् समस्त न्यासों को करके, सम्मुखभाग में प्रदीप को रखकर, स्वयं उत्तराभिमुख होकर अवस्थान करते हुए आवरण देवता के साथ लक्ष्मीदेवी का ध्यान कर विधिपूर्वक पूजा करें । वह अनन्यचित्त होकर एक हजार आठ बार लक्ष्मीमन्त्र का जप करें ॥27-29॥

एवं कृते महालक्ष्मीः प्रीता भवति सर्वदा ।
 सर्वकामसमृद्धात्मा सर्वैश्वर्यसमन्वितः ।
 सर्वलोकैकसामान्यः सञ्चरेच्च यथासुखम् ॥३०॥
 बहुना किमिहोक्तेन लक्ष्मीतत्त्वपरायणः ।
 देव्यर्चकः पुमान् यः स्यात् स च सर्वोत्तमोत्तमः ॥३१॥

इति लक्ष्मीमाहात्म्यं समाप्तम् ॥११॥

इस प्रकार करने पर, (पूर्वोक्त रूप से पूजा एवं जप करने पर) महालक्ष्मी साधक के ऊपर सर्वदा उनकी प्रीत होती हैं; वह साधक (पूजक) समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है; समस्त ऐश्वर्यों से समन्वित हो जाता है; सम्पूर्ण लोकों में असामान्य बनकर, इच्छानुसार सुखपूर्वक विचरण करता है ॥३०॥

और अधिक कहने की क्या आवश्यकता ? जो व्यक्ति लक्ष्मी का तत्त्वपरायण होकर, लक्ष्मी का पूजक बन जाता है, वह समस्त उत्तमों में भी उत्तम बन जाता है ॥३१॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीग्रन्थ में एकादश अध्याय समाप्त ॥११॥

द्वादशोऽध्यायः

(त्रैलोक्यमङ्गलात्मकं नाम लक्ष्मीस्तोत्रम्)

नमः कल्याणदे देवि नमोऽस्तु हरिवल्लभे ।
नमो भक्तिप्रिये देवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥1॥
नमो मायागृहीताङ्गि नमोऽस्तु हरिवल्लभे ।
सर्वेश्वरि नमस्तुभ्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥2॥
महामाये विष्णुधर्मपत्नीरूपे हरिप्रिये ।
वाञ्छादात्रि सुरेशानि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥3॥
उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते ।
रत्नाधारे सुरेशानि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥4॥
विचित्रवसने देवि भवदुःखविनाशिनि ।
कुचभारनते देवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥5॥

त्रैलोक्यमङ्गल लक्ष्मीस्तोत्र

हे कल्याणदायिनि हरिप्रिये देवि ! आपको नमस्कार ! हे भक्तिप्रिये देवि ! आपको नमस्कार । हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥1॥

हे हरिप्रिये ! आपको नमस्कार । आपने माया के द्वारा (अङ्गग्रहण) शरीर-धारण किया है, आपको नमस्कार । हे सर्वेश्वरि ! आपको नमस्कार । हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥2॥

हे महामाये विष्णु की धर्मपत्नी-स्वरूपिणी हरिप्रिये, साधक को उसकी वाञ्छा का दानकारिणी, देवगणों पर नियन्त्रणकारिणी, लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥3॥

उदीयमान सहस्र सूर्यों की दीप्ति के समान दीप्तियुक्ता, त्रिनयनभूषिता, रत्नों का आधार, देवगणों पर नियन्त्रणकारिणी, हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥4॥

हे विचित्रवस्त्रपरिहिते देवि ! संसार-दुःख-नाशकारिणी, स्तनभार से नत, हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥5॥

साधकाभीष्टदे देवि अन्नदानरतेऽनघे ।
 विष्ण्वानन्दप्रदे मातर्लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते ॥6॥
 षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडङ्ग युवती-मये ।
 ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥7॥
 देवि त्वं चन्द्रवदने सर्वसाम्राज्यादयिनी ।
 सर्वानन्दकरे देवि लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते ॥8॥
 पूजाकाले पठेद् यस्तु स्तोत्रमेतत् समाहितः ।
 तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥9॥
 प्रातःकाले पठेद् यस्तु मन्त्रपूजापुरःसरम् ।
 तस्य चान्नसमृद्धिः स्याद्वर्द्धमानो दिने-दिने ॥10॥
 यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।
 प्रकाशात् कार्यहानिः स्यात् तस्माद् यत्नेन गोपयेत् ॥11॥

हे साधक को उसके अभीष्ट को प्रदान-कारिणी ! अन्नदान में रत, निष्पाप, विष्णु को आनन्द-प्रदानकारिणि, हे मातः लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥6॥

हे देवि ! आप षट्कोण यन्त्र-मध्यस्थित पद्म के मध्य में स्थित, षडङ्गयुवती के द्वारा परिवेष्टि (हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्रत्रय, अस्त्र - इन छः अङ्गों की अधिष्ठात्री छः युवतियों के द्वारा परिवेष्टि) ब्राह्मणी, वैष्णवी, माहेश्वरी प्रभृति अष्टशक्ति या नवशक्ति-स्वरूपिणी हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥7॥

हे देवि ! आपका वदन चन्द्रतुल्य है, आप समस्त साम्राज्य की दानकारिणी हैं; आप समस्त प्रकार के आनन्द का दान करती हैं । हे लक्ष्मीदेवि ! आपको नमस्कार ॥8॥

जो एकाग्रचित्त होकर पूजा के समय इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके गृह में लक्ष्मी स्थिर रहती हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥9॥

जो व्यक्ति प्रातःकाल लक्ष्मी की पूजा एवं मन्त्र-जप पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे अन्नसमृद्धि प्राप्त होती है, वह दिनों-दिन वृद्धि (समृद्धिवृद्धि) को प्राप्त होता है ॥10॥

जिस किसी को भी यह मन्त्र प्रदान न करें, इसे कदापि प्रकाशित न करें । इसे प्रकाशित करने पर कार्यहानि होती है । इसलिए यत्नपूर्वक इसे गोपित करके रखें ॥11॥

त्रैलोक्यमङ्गलं नाम स्तोत्रमेतत् प्रकीर्तितम् ।
 ब्रह्मविद्यास्वरूपञ्च महैश्वर्यप्रदायकम् ॥12॥
 पठनाद्धारणान्मर्त्य-स्त्रैलोकैश्वर्यवान् भवेत् ।
 यद्धृत्वा पठनाद्देवाः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥13॥
 ब्रह्मा-विष्णुश्च रुद्रश्च धारणात् पठनात् यतः ।
 सृजत्यवति हरति कल्पे कल्पे पृथक्-पृथक् ॥14॥
 पुष्पाञ्जलाष्टकं देव्यै मूलेनैव पठेत्ततः ।
 युगकालकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥15॥
 प्रीतिमन्योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ।
 वाणी वक्रे वसेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ॥16॥
 भूर्जे विलिख्य गुलिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
 कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि सर्वतपोमयः ॥17॥

‘त्रैलोक्य मङ्गल’ नामक इस लक्ष्मीस्तोत्र का कीर्तन किया गया । यह ब्रह्मविद्यास्वरूप है एवं महा-ऐश्वर्य प्रदायक है ॥12॥

मानव इस स्तोत्र का पाठ करने पर एवं इसे लिखकर अङ्ग में धारण करने पर, त्रैलोक्य के ऐश्वर्य से युक्त बन जाता है । देवतागण जिस (= इस) स्तोत्र को धारण कर, इसका पाठ करने के फलस्वरूप समस्त ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं ॥13॥

जिस (= इस) स्तोत्र के धारण एवं पाठ करने के फलस्वरूप, प्रत्येक कल्प में, पृथक्-पृथक् रूप में, ब्रह्मा सृष्टि करते हैं, विष्णु पालन करते हैं एवं रुद्र संहार करते हैं ॥14॥

लक्ष्मी देवी के मूलमन्त्र से उन्हें (= लक्ष्मी देवी को) आठ बार पुष्पाञ्जलि प्रदान कर, उसके बाद यदि कोई इस स्तोत्र का पाठ करता है, तो वह एक युगकाल पर्यन्त अनुष्ठित पूजा से प्राप्त होने वाले फल को प्राप्त होता है ॥15॥

इस लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करने पर, जो इसका पाठ करते हैं, उनके ऊपर लक्ष्मी एवं सरस्वती परस्पर प्रीति रखती हुई एवं लक्ष्मी उनके गृह में निश्चला बनकर, निवास करती हैं एवं सरस्वती उनके कण्ठ में वास करती हैं । यह सत्य-सत्य है । इसमें सन्देह नहीं है ॥16॥

इस स्तोत्र को भूर्जपत्र पर लिखकर, सोने के ताबीज में भरकर यदि कण्ठ में या दक्षिण बाहु में धारण किया जाता है, तो वह धारणकारी भी अपनी समस्त तपस्याओं के फल को प्राप्त करता है ॥17॥

ब्राह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गोत्रं प्राप्य पार्वति ।
 माल्यानि कौसुमान्येव भवन्त्येव न संशयः ॥18॥
 अस्यापि पठनात् सद्यः कुबेरोऽपि धनाधिपः ।
 इन्द्राद्याः सकला देवा धारणाद् पठनाद् यतः ।
 सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ॥19॥
 पुष्पाञ्जल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव सकृत् पठेत् ।
 संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥20॥
 यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलं त्विदम् ।
 स्तोत्रस्तु परमं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः ॥
 सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥21॥
 पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।
 बहुपुत्रवती भूत्वा वन्ध्यापि लभते सुतम् ॥22॥

हे पार्वति ! इस स्तोत्र को ताबीज में भरकर धारण करने वाले व्यक्ति के शरीर को प्राप्त होकर, ब्रह्म (अस्त्र) प्रभृति अस्त्र एवं सभी शस्त्र पुष्पमाला के समान बन जाते हैं । इसमें सन्देह नहीं है ॥18॥

कुबेर इस स्तोत्र के पाठ करने के फलस्वरूप सद्यः धन के अधिपति बने हैं । इन्द्रादि देवतागण भी इस स्तोत्र के पाठ एवं धारण के फलस्वरूप, समस्त सिद्धियों के ईश्वर बनकर समस्त ऐश्वर्य को प्राप्त हैं ॥19॥

लक्ष्मीदेवी को मूलमन्त्र से आठ बार पुष्पाञ्जलि देकर यदि इस स्तोत्र का एकबार पाठ किया जाता है, तो एक वर्ष पर्यन्त पूजा करने का जो फल है, वह फल प्राप्त होता है ॥20॥

जो पुण्यात्मा इस परम पुण्य त्रैलोक्य-मङ्गल स्तोत्र को धारण करते हैं, वह भी पुण्यात्मागणों में श्रेष्ठ बनकर समस्त ऐश्वर्यों से युक्त होकर, त्रैलोक्य-विजयी बन जाते हैं । पुरुष इसे दक्षिण बाहु में धारण करने पर त्रैलोक्य-विजयी बन जाता है । स्त्री इसे वाम बाहु में धारण करने पर, बहुपुत्रवती बनकर, ऐश्वर्ययुक्ता बन जाती है । वन्ध्या इसे धारण करने पर पुत्र का लाभ करती है ॥21-22॥

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
 पठेद्वा धारयेद्वापि यो नरो भक्तितत्परः ॥23॥
 एतत्तु स्तोत्रमज्ञात्वा योऽर्चयेज्जगदीश्वरीम् ।
 दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥24॥
 यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थफलं भवेत् ।
 यः पठेदुभयोः सन्ध्योस्तस्य विघ्नो न विद्यते ॥25॥
 धारयेद् यः स्वदेहे तु तस्य विघ्नं (विघ्नो) न कुत्रचित् ।
 भूतप्रेतपिशाचेभ्यो भयं तस्य न विद्यते ॥26॥
 रणे च राजद्वारे च सर्वत्र विजयी भवेत् ।
 सर्वत्र पूजामाप्नोति देवीपुत्र इह क्षितौ ॥27॥
 एतत् स्तोत्रं महापुण्यं धर्मकामार्थसिद्धिदम् ।
 यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः ॥28॥

जो मानव भक्तिपरायण होकर इस स्तोत्र का पाठ करता है या इसे शरीर में धारण करता है, ब्राह्म प्रभृति अस्त्र भी उसका (= शरीर का) छेदन नहीं करता है ॥23॥

इस स्तोत्र को न जानकर जो जगदीश्वरी लक्ष्मी की पूजा करता है, वह परम दारिद्र्य को प्राप्त होकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ॥24॥

जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे समस्त तीर्थों के फलों का लाभ होता है और जो उभय सन्ध्याओं (प्रातः एवं सायं) में इसका पाठ करता है, उसका कोई विघ्न नहीं रह जाता है ॥25॥

जो इस स्तोत्र को निज देह में धारण करता है, उसका (किसी भी कार्य में) कहीं भी विघ्न नहीं होता है । भूत-प्रेत, पिशाच से उसे भय नहीं रहता ॥26॥

जो इस स्तोत्र को निज देह में धारण करता है, वह युद्ध में, राजद्वार में, सर्वत्र विजयी बनता है एवं पृथिवी पर सर्वत्र देवीपुत्र के समान पूजा को प्राप्त होता है ॥27॥

यह स्तोत्र अतिशय पुण्यजनक है । यह धर्म, अर्थ, काम एवं ज्ञान-प्रद है । जहाँ-तहाँ इसका कथन न करें । यत्नपूर्वक इसका गोपन करें ॥28॥

गोपितं सर्वतन्त्रेषु सारात्सारं प्रकीर्तितम् ।
 सर्वत्र सुलभा विद्या स्तोत्रमेतत् सुदुर्लभम् ॥२९॥
 शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि ।
 न्यूनाङ्गे अतिरिक्ताङ्गे क्रूरे मिथ्याभिभाषिणे ।
 न स्तवे दर्शयेद्दिव्यं परमं सुदुर्लभम् ॥३०॥
 यत्र तत्र न वक्तव्यं मया तु परिभाषितम् ।
 दत्त्वा तेभ्यो महेशानि नश्यन्ति सिद्धयः क्रमात् ॥३१॥
 मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् ।
 अशुभञ्च भवेत्तस्य तस्माद् यत्नेन गोपयेत् ॥३२॥
 गोरोचनाकुङ्कुमेन भूर्जपत्रे महेश्वरि ।
 लिखित्वा शुभयोगे च ब्रह्मेन्द्रो वैधृतौ यथा ।
 सर्वार्थसिद्धिमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥३३॥

इस स्तोत्र को समस्त तन्त्रों में गोपित रखा गया है । यह सार से भी सार है - ऐसा कहा गया है । सर्वत्र विद्या तो सुलभ है, किन्तु यह स्तोत्र अतिशय दुर्लभ है ॥२९॥

शठ, भक्तिहीन, निन्दक, जिसका अङ्ग न्यून (कम) है, वह; जिसका अङ्ग अधिक है, वह; निष्ठुर एवं मिथ्यावादी - इन समस्त लोगों के निकट, हे महेश्वरि ! इस देवदुर्लभ परम दिव्य स्तोत्र को प्रकाशित न करें ॥३०॥

इस स्तोत्र को जहाँ-तहाँ न बतावें - यह मैं कह रहा हूँ । हे महेश्वरि ! अयोग्य पात्र को, इस स्तोत्र को प्रदान करने पर, क्रमशः समस्त सिद्धियाँ नष्ट हो जाती हैं । जो प्रदान करता है, उसकी सिद्धि नष्ट हो जाती है ॥३१॥

जो व्यक्ति अयोग्य पात्र के निकट इस स्तव को प्रकाशित करता है, समस्त मन्त्र सुदारुण शाप प्रदान कर, उसके निकट से विमुख हो जाता है एवं उसका अशुभ होता है । अतः इसे यत्नपूर्वक गोपित करें ॥३२॥

हे महेश्वरि ! ब्रह्मा एवं इन्द्र वैधृति नामक योग में जिस प्रकार इस (स्तोत्र) को धारण किये थे, उसी प्रकार जो व्यक्ति गोरोचना एवं कुङ्कुम के द्वारा भूर्जपत्र पर इस स्तोत्र को लिखकर शुभ-योग में इसे धारण करता है, वह समस्त सिद्धियों को प्राप्त होता है । यह सत्य, सत्य है । इसमें सन्देह नहीं है । (ज्योतिषशास्त्र में उक्त सत्ताईस योगों में 'वैधृति' नामक योग सत्ताईसवाँ योग है) ॥३३॥

कुमारीं पूजयित्वा तु देवीसूक्तं निवेद्य च ।
 पठित्वा भोजयेद् विप्रान् धनवान् वेदपारगान् ॥३४॥
 नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकभयं भवेत् ।
 वादी मूको भवेद् दृष्ट्वा राजा च सेवकायते ॥३५॥
 मासमेकं पठेद् यस्तु प्रत्यहं नियतः शुचिः ।
 दिवा भवेद्धविष्याशी रात्रौ भक्तिपरायणः ।
 तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥३६॥
 षट्सहस्रप्रमाणेन प्रत्यहं प्रजपेत् सदा ।
 षण्मासैर्वा त्रिभिर्मासैः खेचरो भवति ध्रुवम् ॥३७॥
 अपुत्रो लभते पुत्रमधनो धनवान् भवेत् ।
 अरोगी बलवांस्तस्य राजा च दासतामियात् ॥३८॥
 य एवं कुरुते धीमान् स एव कमलापतिः ।
 स एव श्रीमहादेवस्तस्य पत्नी हरिप्रिया ॥३९॥

कुमारीपूजा करके, देवीसूक्त का पाठ कर बाद में इस लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करके, वेदपराग ब्राह्मणगणों को भोजन करावें । इस प्रकार जो इस अनुष्ठान को करता है, वह धनवान बन जाता है और उसे मनस्ताप, रोग, दुःख, शोक, भय - ये नहीं होते । उसे देखकर वादी मूक (गुंगा) बन जाता है, राजा उसके निकट सेवक के समान आचरण करता है ॥३४-३५॥

जो व्यक्ति एक महीने पर्यन्त शुद्ध, संयत एवं भक्तिपरायण बनकर, हविष्यान्न भोजनपूर्वक, दिवा एवं रात्रि में प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके सभी पुरुषार्थ सिद्ध हो जाते हैं । हे महेश्वरि ! यह सत्य, सत्य है ॥३६॥

जो व्यक्ति छः महीने पर्यन्त या तीन महीने पर्यन्त प्रतिदिन इस स्तोत्र का छः हजार बार जप करता है, वह 'खेचरीसिद्धि' का लाभ करता है, यह निश्चित है ॥३७॥

पूर्वोक्त रूप से जो प्रतिदिन छः हजार बार इस मन्त्र का पाठ करता है, वह अपुत्रक रहने पर पुत्र का लाभ करता है; धनहीन रहने पर धनवान् बन जाता है; वह निरोगी एवं बलवान् बन जाता है । राजा उसके निकट दास बन जाता है ॥३८॥

इस प्रकार जो छः हजार बार जप करता है, वह बुद्धिमान् व्यक्ति लक्ष्मीपति-सदृश बन जाता है; वह महादेव-सदृश बन जाता है; उसकी पत्नी हरि की प्रिया बन जाती है ॥३९॥

बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः ।
 धर्मार्थकाममोक्षञ्च लभते नात्र संशयः ॥40॥
 इति ते कथितं देवि त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम् ।
 लक्ष्मीस्तोत्रं महापुण्यं संसारार्णवतारकम् ॥41॥
 ऋजवे सुचरित्राय विष्णुभक्तिपराय च ।
 दातव्यञ्च प्रयत्नेन परमं गोपनं त्विदम् ॥42॥

इति शङ्करभाषितं
 त्रैलोक्यमङ्गल-नामक-लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम् ॥12॥

यहाँ और अधिक बताने की क्या आवश्यकता ? इस स्तव के प्रभाव से साधक धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का लाभ करता है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥40॥

हे देवि ! इस प्रकार आपको संसारसमुद्र से उद्धार करने वाला 'त्रैलोक्यमङ्गल' नामक, महापुण्य (महापवित्र) इस लक्ष्मीस्तोत्र को मैंने बताया है ॥41॥

सरल, सच्चरित्र एवं विष्णुभक्ति परायण व्यक्ति को यत्नपूर्वक इस स्तोत्र को प्रदान करें (बतावें) । यह (स्तोत्र) अतिशय गोपनीय है ॥42॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीतन्त्र में
 द्वादश अध्याय समाप्त ॥12॥

त्रयोदशोऽध्यायः

(ब्रजविहारः)

कस्त्वं न्वत्र बलानुजस्त्वमिह किं मन्मन्दिराशङ्कया ।
बुद्धं तन्नवनीतकुम्भविवरे हस्तं कथं न्यस्यसि ।
कर्तुं तत्र पिपीलिकापनयनं सुप्ताः किमुद्वोधिता,
बाला वत्सगतिं विवेक्तुमिति संजल्पन् हरिः पातु वः ॥१॥
जीर्णा-तरिः सरिदतीवगम्भीरनीरा,
बाला वयं सकलमित्थमनर्थहेतुः ।
निस्तारबीजमिदमेव कृशोदरीणां,
यन्माधव त्वमसि सम्प्रति कर्णधारः ॥२॥

ब्रजविहार

किसी समय श्रीकृष्ण मक्खन चोरी करने के लिए किसी गोपी के गृह में प्रविष्ट हुए थे । उस समय गोपी निद्रा से जगकर, कृष्ण को देखकर, उनसे पूछने लगी - यहाँ पर तुम कौन हो ? इसके उत्तर में कृष्ण ने कहा - 'मैं बलराम का छोटा भाई हूँ ।' तब गोपी बोलीं - 'तुम यहाँ पर क्यों ?' कृष्ण ने उत्तर दिया - 'मैंने इसे अपना घर समझ लिया था ।' गोपी ने प्रश्न किया - 'मक्खन के भाण्ड में तुमने अपना हाथ क्यों प्रवेश करा दिया है ?' कृष्ण ने उत्तर दिया - 'भाण्ड के अन्दर से चीटियों को हटा देने के लिए इसमें हाथ डाल रखा है ।' गोपी ने कहा - 'यहाँ पर बच्चे सो रहे थे । तुमने उन सभी को जगाया क्यों ?' कृष्ण ने उत्तर दिया - 'बछड़े कितने दूर तक निकल गये, इसे जानने के लिए बच्चों को जगा दिया है ।' इस प्रकार गोपी के साथ जिन हरि ने वार्तालाप किया था, वह आप सभी की रक्षा करें ॥१॥

कृष्ण गोपियों को नौका से यमुना पार करवा रहे थे । उस समय गोपीगण (परस्पर) बता रहीं हैं - 'यह नाव जीर्ण (पुराना) है, जबकि नदी अत्यन्त गहरी पानी से भरी हुई है और हम सभी स्त्रियाँ हैं - ये सब कुछ अनिष्ट के कारणों को देख रही हूँ । परन्तु केवल इतना ही निस्तार का कारण देख रही हूँ कि - हे माधव तुम सम्प्रति हम कृशोदरियों (पतली कमरवालियों) के कर्णधार बने हो ।' (इस श्लोक में श्लोषालङ्कार है । इसलिए इसका और एक अर्थ है -

श्रीश्रीकृष्णो जयति जगतां जन्मदाता च पाता,
हर्ता चान्ते हरति भजतां यश्च संसारभीतिम् ।
राधानाथ; सजलजलदश्यामलः पीतवासा,
वृन्दारण्ये विहरति सदा सच्चिदानन्दरूपः ॥3॥

ज्योतिरूपं परमपुरुषं निर्गुणं नित्यमेकम् ।
नित्यानन्दं निखिलजगतामीश्वरं विश्वबीजम् ।
गोलोकेशं द्विभुजमुरलीधारिणं राधिकेशम् ।

वन्दे वृन्दारकविधिहरिहरव्रातवन्द्याङ्घ्रि पद्मम् ॥4॥

येषां श्रीमद् यशोदासुतपदकमले नास्ति भक्तिर्नराणाम्,
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा ।

येषां श्रीकृष्णलीलालितगुणकथासादरौ नैव कर्णौ,

धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति नितरां कीर्तनस्थो मृदङ्गः ॥5॥

‘भयङ्कर संसार नदी है । शरीर-रूप नौका क्षणस्थायी है । यौवन अनर्थकारक है । इन सभी में भगवान् कृष्ण ही कर्णधार-रूप में अनर्थ-निवृत्ति के हेतु हैं । इनको छोड़कर और कोई उपाय (= अवलम्बन) नहीं है ॥2॥

जो कृष्ण समस्त जगत् के जन्मदाता, पालनकर्ता एवं अन्त में संहारकर्ता हैं, जो लोग कृष्ण की भजना करते हैं, वे (कृष्ण) उनके संसार-भय को दूर करते हैं । जो राधानाथ हैं; पानी भरे हुए मेघ के समान जो श्यामवर्ण हैं; पीतवस्त्रधारी हैं; वृन्दावन में सर्वदा विहार करते हैं; जो सच्चिदानन्दस्वरूप हैं; वह श्रीकृष्ण जयलाभ करते हैं अर्थात् वह सर्वापेक्षा उत्कर्षातिशायी हैं ॥3॥

जो ज्योतिःस्वरूप, परमपुरुष, निर्गुण, एक (अद्वितीय), नित्य, नित्य आनन्दस्वरूप, समस्त जगत् के ईश्वर, विश्व के आदिकारण, गोलोक के अधिपति, द्विभुज एवं मुरलीधारी हैं; देवतागण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर – सभी जिनके पादपद्म की वन्दना करते हैं, उन राधिकेश (कृष्ण) की मैं वन्दना करता हूँ ॥4॥

जिन मानवों की श्रीमद्यशोदानन्दन कृष्ण के पादपद्म में भक्ति नहीं है; जिनकी जिह्वा गोपकन्या के प्रिय (कृष्ण) के गुणों के कथन में अनुरक्त नहीं हैं; जिनके कर्णद्वय श्रीकृष्ण के मनोहर लीलागुणकथा सुनने में आदरयुक्त नहीं हैं; कीर्तनस्थित मृदङ्ग उन्हें कहता है – ‘उन्हें धिक्, उन्हें धिक्, इन्हें धिक्’ – यही अतिशय-रूप में कहता रहता है अर्थात् मृदङ्ग का ‘धिक्तान’ ‘धिक्तान्’ – इत्यादि शब्द जैसे कृष्ण-विमुख व्यक्तियों की निन्दा करते हैं ॥5॥

वृन्दावने वृक्षलताप्रतानै-वृन्दावनेशस्य विहारहेतोः ।
 पुरा विधात्रा रचितान् सुकुञ्जा, जगाम कृष्णः सह राधया सः ॥6॥
 नवीनमेघोपमनीलदेहः, सुपीतपट्टाम्बरयुग्मधारी ।
 स्मिताननः कुण्डलवान् किरीटी, वंशीधरो मालतिमाल्यधारी ॥7॥
 गोपीजनानन्दकरो मुरारि, वृन्दावनेन्द्रो वनमाल्यशोभी ।
 वंशीनिनादेन ब्रजाङ्गनानां, मनांसि सम्मोहितवान् स कामी ॥8॥

गोपीजना यमिह कामदृशा भजन्ते,
 यं भक्तिभाज इह केवलभक्ति भावैः ।
 यं योगिनो हृदिधिया परिचिन्तयन्ति,
 तं केवलं कमललोचनमाश्रयेऽहम् ॥9॥

पूर्वकाल में विधाता (ब्रह्मा) ने वृन्दावनाधिपति श्रीकृष्ण के विहार के लिए वृन्दावन में वृक्ष-लतादि के द्वारा उत्तम कुञ्ज (लतादि के द्वारा आच्छादित स्थान, जिनके मध्य में शून्यस्थान हो) की रचना किया था । वह कृष्ण, उन सभी कुञ्जों में राधा के साथ विहार करते हैं (या विहार करते थे) ॥6॥

श्रीकृष्ण का शरीर नूतन मेघ के समान श्यामवर्ण है; वह अतिशय पीतवर्ण के दो पट्टवस्त्रों को धारण करते हैं (= परिधेय वस्त्र एवं उत्तरीय वस्त्र); उनका वदन ईषद्हास्ययुक्त है, कर्णों में कुण्डल हैं, मस्तक में मुकुट है । वे हस्त में वंशीधारण करते हैं, गलेदेश में मालतीपुष्प की माला धारण करते हैं ॥7॥

गोपीगणों को आनन्दप्रदानकारी, वृन्दावन के अधिपति, वनमाला से शोभित, वह कामी, मुरारी, वंशी के शब्द से ब्रज के स्त्रियों के मन को सम्मोहित कर दिये थे ॥8॥

गोपीगण यहाँ पर (= वृन्दावन में) जिन्हें कामभाव से (= मधुर भाव से) भजना करती हैं; भक्ति मान्गण जिन्हें मनुष्य लोक में केवल भक्तिभाव से भजना करते हैं; योगिगण बुद्धिवृत्ति के द्वारा अपने हृदय में जिनका चिन्तन करते हैं, मैं केवल उन कमल-नयन का आश्रय (= शरण) लेता हूँ ॥9॥

वने वने कुञ्जवने मुरारिः
 परिभ्रमन् भ्राजति राधिका च ।
 सहैव कुञ्जे रमते च राधया,
 पायादपायादिह कृष्ण एकः ॥10॥
 वृन्दारण्ये विहरति सदा वासुदेवो दयालु-
 गोपस्त्रीभिः स्मरशतशरैर्भिन्नहृत्कामुकाभिः ।
 गोपैर्बालैरपि सहचरैः सार्धमानन्दयुक्तै-
 र्योऽसौ कृष्णः परमकरुणस्तं सदा चिन्तयेऽहम् ॥10॥

इति सौभाग्यलक्ष्म्यां ब्रजविहारः समाप्तः ॥13॥

वृन्दावन के प्रत्येक वन में एवं प्रत्येक कुञ्जवन में भ्रमण करते हुए मुरारी एवं राधिका दीप्तिमान् होते हैं; वह राधिका के साथ कुञ्ज में रत रहते हैं; वही एक कृष्ण, इस संसार में विपद् से हमारी रक्षा करें ॥10॥

वृन्दावन में दयालु वासुदेव, मदन के शत शरों से विदीर्ण हृदय वाले, कामुक गोपस्त्रियों के साथ सर्वदा-विहार करतीं हैं एवं सहचर, आनन्दयुक्त, गोप-बालकों के साथ विहार करते हैं, वे जो परम कारुणिक कृष्ण हैं, उनकी हम सर्वदा चिन्तन करते हैं ॥11॥

इति सौभाग्यलक्ष्मीग्रन्थ में
 त्रयोदश अध्याय समाप्त ॥13॥



परिशिष्ट

तत्रादौ पटल

अथ वक्ष्ये श्रियो मन्त्रान् श्रीसौभाग्यफलप्रदान् ।

यस्याः कटाक्षमात्रेण त्रैलोक्यमतिवर्तते ॥१॥

जिस लक्ष्मी के कटाक्ष मात्र से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की जाती है उन्हीं सौभाग्यफलप्रदायक लक्ष्मी के मन्त्रों में कहूँगा ।

अथ लक्ष्म्या एकाक्षरबीजमन्त्रयोगः

लक्ष्मी के एकाक्षर बीजमन्त्र का प्रयोग - शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है : (श्रीं) इत्येकाक्षरबीजमन्त्रः । 'श्रीं' यह एकाक्षर बीजमन्त्र है ।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य भृगुऋषिः । निवृच्छन्दः । श्रीलक्ष्मीर्देवता । मम् धनाप्तये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : भृगुऋषयै नमः शिरसि १ । निवृच्छन्दसे नमः मुखे २ । श्रीलक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां ३ । ॐ श्रें अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां हृदयाय नमः १ । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ श्रें कवचाय हुम् ४ । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करें —

अथ ध्यानम्

ॐ कन्त्याकाञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्त-
हिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानांश्रियम् । बिभ्राणां वरमतब्जयुग्ममभयं हस्तैः
किरीटोज्ज्वलां क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बलसितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥१॥

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य
ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठदेवताः सम्पूज्य
ततः पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु नवपीठशक्तीः पूजयेत् ।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके “ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः” इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पूर्व आदि आठ दिशाओं में इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करें —

ॐ विभूत्यै नमः 1 । ॐ उन्मन्यै नमः 2 । ॐ कान्त्यै नमः 3 । ॐ सृष्ट्यै नमः 4 । ॐ कीर्त्यै नमः 5 । ॐ सन्नत्यै नमः 6 । ॐ पुष्ट्यै नमः 7 । ॐ उत्कृष्ट्यै नमः 8 । पीठमध्ये । ॐ ऋद्ध्यै नमः 9 ।

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं श्रीं कमलासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तरूपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करें । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में अग्न्युत्तारणपूर्वक “श्री कमलासनाय नमः” इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य संस्थापित करके उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें (लक्ष्मी का एकाक्षर बीजमन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र 1) ।

षट्कोणकेसरेषु । अग्निकोणे । ॐ श्रां हृदयाय नमः¹ 1 । नैऋत्ये । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा² 2 । वायव्ये । ॐ श्रूं शिख्यै वषट्³ 3 । ईशान्ये । ॐ श्रैं कवचय⁴ हुम् 4 । पूज्यपूजकयोर्मध्ये । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्⁵ 5 । देवी-पश्चिमे । ॐ श्रः अस्त्राय फट्⁶ 6 ।

इति षडङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥1॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥1॥

इससे षडङ्गों की पूजा करें । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं

प्रथमावरणार्चनम् ।” इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर “पुजितास्तर्पिताः सन्तु ।” यह कहे । इति प्रथमावरण ॥१॥

पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची । तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु विदिक्षु च ।

पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा होनी चाहिये । तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राच्यादि चारों दिशाओं और उपदिशाओं में :

पूर्वे । ॐ वासुदेवाय नमः⁷ वासुदेवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 1 । इति सर्वत्र । दक्षिणे । ॐ संकर्षणाय नमः⁸ संकर्षणश्रीपा0 2 । पश्चिमे । ॐ प्रद्युम्नाय नमः⁹ प्रद्युम्नश्रीपा0 3 । उत्तरे । ॐ अनिरुद्धाय नमः¹⁰ अनिरुद्धश्रीपा0 4 । अग्निकोणे । दमकाय नमः¹¹ दमकश्रीपा0 5 । निऋतिकोणे । ॐ सलिलाय नमः¹² सलिलश्रीपा0 6 । वायव्ये । ॐ गुग्गुलाय नमः¹³ गुग्गुलश्रीपा0 7 । ईशान्ये ॐ कुरुटकाय नमः¹⁴ कुरुटकश्रीपा0 8 । देव्या दक्षिणे । ॐ शङ्खनिधये नमः¹⁵ शंखनिधिश्रीपा0 9 । ॐ वसुधायै नमः¹⁶ वसुधाश्रीपा0 10 । वामे । ॐ पद्मनिधये नमः¹⁷ पद्मनिधिश्रीपा0 11 । ॐ वसुमत्यै नमः¹⁸ वसुमतिश्रीपा0 12 ।

इति द्वादशदेवतानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इससे बारह देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद पत्राग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः¹⁹ बलाकीश्रीपा0 1 । ॐ विमलायै नमः²⁰ विमलाश्रीपा0 2 । ॐ कमलायै नमः²¹ कमलाश्रीपा0 3 । ॐ वनमालिकायै नमः²² वनमालिकाश्रीपा0 4 । ॐ विभीषिकायै नमः²³ विभीषिकाश्रीपा0 5 । ॐ भालिकायै नमः²⁴ भालिकाश्रीपा0 6 । ॐ शाङ्क्यै नमः²⁵ शाङ्करीश्रीपा0 7 । ॐ वसुमालिकायै नमः²⁶ वसुमालिकाश्रीपा0 8 ।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः²⁷ 1 । ॐ रं अग्नये नमः²⁸ 2 । ॐ मं यमाय नमः²⁹ 3 । ॐ क्षं निऋतये नमः³⁰ 4 । ॐ वं वरुणाय नमः³¹ 5 । ॐ यं वायवे नमः³² 6 । ॐ कुं कुबेराय नमः³³ 7 । ॐ हं ईशानाय नमः³⁴ 8 । ईशानपूर्वयोर्मध्ये । ॐ आं ब्रह्मणे नमः³⁵ 9 । निऋतिपश्चिमयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः³⁶ 10 ।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करें । तदुपरान्त उसके बाहर :

ॐ वं वज्राय नमः³⁷ 1 । ॐ शं शक्तये नमः³⁸ 2 । ॐ दं दण्डाय नमः³⁹ 3 । ॐ खड्गाय नमः⁴⁰ 4 । ॐ पां पाशाय नमः⁴¹ 5 । ॐ अं अंकुशाय नमः⁴² 6 । ॐ गं गदायै नमः⁴³ 7 । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः⁴⁴ 8 । ॐ पं पद्माय नमः⁴⁵ 9 । ॐ चं चक्राय नमः⁴⁶ 10 ।

इत्यस्त्राणि पूजयेत् । इत्यवरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्ष जपः । द्वादशसहस्रकमलपुष्पहोमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः । तत्सहस्रं प्रजुहुयात्कमलैर्मधुरोक्षितः ॥1॥

जपान्ते जुहुयान्मन्त्री तिलैर्वा मधुराप्लुतैः ।

बैल्वैः फलैर्वाजुहुयात्त्रिभिर्वा साधकोत्तमः ॥2॥

इत्थं यो भजते देवीं विधिना साधकोत्तमः ।

धनधान्यसमृद्धिः स्याच्छ्रियमाप्नोत्यनिन्दिताम् ॥3॥

वक्षः प्रमाणे सलिले स्थित्वा मन्त्रमिमं जपेत् ।

त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्रं वाञ्छितं लभते धनम् ॥4॥

अशोकवह्नौ जुहुयात्तण्डुलैराज्यलोलितैः ।

वशयत्यचरादेव त्रैलोक्यमपि मन्त्रवित् ॥5॥

जुहुयात्तण्डुलैः शुद्धैरर्काग्नौ नियुतं वशी ।

राज्यश्रियमवाप्नोति राजपुत्रो महीयसीम् ॥6॥

जुहुयात्खादिरे वह्नौ तण्डुलैर्मधुरोक्षितैः ।

राजा वश्यो भवेच्छीघ्रं महालक्ष्मीश्च वर्द्धते ॥7॥

इससे अस्त्रों की पूजा करें । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करें । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है । द्वादशसहस्र कमल पुष्पों से होम करें और तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता । इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है : दीक्षा लेकर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर बारह लाख मन्त्र का जप करे । तदनुसार बारह हजार मधु, घी तथा शकर से युक्त कमलपुष्पों से आहुति देनी चाहिए । जप के बाद साधक

मधु, घी तथा शकर के साथ तिल से होम करे । अथवा मधु, घी तथा शहद से परिप्लुत बेल के फलों से होम करे । इस प्रकार जो उत्तम साधक विधि पूर्वक देवी की उपासना करता है, उसे धन-धान्य की समृद्धि प्राप्त होती है और वह यश से समन्वित लक्ष्मी को प्राप्त करता है । यदि साधक वक्ष-प्रमाण जल में खड़ा होकर इस मन्त्र का तीन लाख जप करे तो वह वाञ्छित धन प्राप्त करता है । साधक अशोक की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में घी से सिक्त चावलों से यदि होम करे तो शीघ्र ही तीनों लोकों को वश में कर लेता है । यदि इन्द्रियजयी राजपुत्र मदार की समिधाओं से प्रदीप्त शुद्ध अग्नि में चावल से दस लाख होम करे तो चिरन्तन राज्यश्री को प्राप्त करता है । यदि साधक खैर की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में मधु, घी तथा शकर से युक्त चावलों से होम करे तो राजा शीघ्र वश में हो जाता है और उसकी महालक्ष्मी बढ़ती है ।

बिल्वच्छायामधिवसन् बिल्वमिश्रहविष्यभुक् ।

सम्बत्सरद्वयं हुत्वा तत्फलैरथवाम्बुजैः ॥8॥

साधकेन्द्रो महालक्ष्मीं चक्षुषा पश्यति ध्रुवम् ।

यदि साधक बेल की छाया में रहता हुआ और बेल से मिश्रित हविष्य का आहार करता हुआ दो वर्ष तक बेल से या कमल से हवन करे तो वह महालक्ष्मी का निश्चित रूप से दर्शन करता है ।

हविषा घृतसिक्तेन पायसेन ससर्पिषा ॥9॥

हुत्वा श्रियमवाप्नोति नियुतं मन्त्रवित्तमः ।

मधुराक्तारुणाम्भोजैर्जुहुयाल्लक्षमादरात् ।

न मुञ्चति रमा तस्य वंशमाभूतसम्प्लवम् ॥10॥

साधक घी से युक्त खीर तथा घी से युक्त हविष्य से दस लाख आहुति देकर लक्ष्मी को प्राप्त करता है । मधु, घी तथा शक्कर से सिक्त लाल कमलों से आदरपूर्वक होम करने से लक्ष्मी उसे नहीं छोड़ती और सारा संसार उसके वश में हो जाता है ।

इत्येकाक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः

अथ चतुरक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं । इति चतुरक्षरो लक्ष्मीबीजात्मको मन्त्रः ।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है - “ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं” यह चार अक्षरों वाला लक्ष्मी बीजात्मक मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6 । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः 1 । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा 2 । ॐ श्रीं शिखायै वषट् 3 । ॐ श्रीं कवचाय हुम् 4 । ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् 5 । ॐ श्रीं अस्त्राय फट् 6 । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें ।

अथ ध्यानम्

ॐ माणिक्यप्रतिमप्रभां हिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्ताग्राहितरत्नकुम्भ-
सलिलैरासिच्यमानां मुदा । हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुजयुगाभीतीर्दधानां हरेः कान्तां
कांक्षितपारिजातलतिकां वन्दे सरोजासनाम् ॥1॥

इति ध्यायेत् । अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् । अस्य पुरश्चरणं
द्वादशलक्षजपः । तथाच : भानुलक्षं हविष्याशी जपेदन्ते सरोरुहैः ।
जुहुयादरुणैः फुल्लैः तत्सहस्रं जितेन्द्रियः ॥1॥ कुर्यात्प्रयोगांस्तत्रस्थान्मनुना
तेन साधकः । निधिभिः सेव्यते नित्यं मूर्तिमद्भिरुपसितैः ॥2॥

इस प्रकार ध्यान करके सब पूजा आदि पूर्ववत् करना चाहिये । इसका
पुरश्चरण बारह लाख जप है । जैसा कि कहा गया है :

साधक हविष्याशी रह कर तथा जितेन्द्रिय होकर बारह लाख मन्त्र का जप
करे । जप के बाद लाल फूले हुए कमलों से बारह हजार होम करे । इसके
बाद साधक मन्त्र से वहाँ के प्रयोग करे । इस सिद्धि से निधियाँ स्वयं मूर्तिमती
होकर साधक की सेवा करती हैं ।

इति चतुरक्षरलक्ष्मीबीजात्मकमन्त्रप्रयोगः

अथ दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा । इति दशाक्षरमन्त्रः ।

शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है - “ॐ नमः कमलवासिन्यै
स्वाहा ।” यह दशाक्षर मन्त्र है ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य दक्षऋषिः विराट्छन्दः श्रीलक्ष्मीर्देवता सर्वेष्टसिद्धये
जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : दक्षऋषये नमः शिरसि 1 । विराट्छन्दसे नमः मुखे 2 । श्रियै देवतायै नमः हृदि 3 । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे 4 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ देव्यै नमोगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ पद्मिन्यै नमस्तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । इति करन्यासः ।

नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यास : ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः 1 । ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा 2 । ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट् 3 । ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् 4 । ॐ कमलायै नमः अस्त्राय फट् 5 । इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यासः¹ ।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें —

अथ ध्यानम्

ॐ आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी तस्ताम्बुजैर्बिभ्रती दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनिसन्निभा । मुक्ताहारविराजमानपृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी पायाद्वः कमला कटाक्षविभवैरानन्दयन्ती हरिम् ॥1॥

एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठशक्तिभिः सहपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य वाहनादिपुष्पान्तरूपचारैः सम्पूज्य देवयाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः ।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्वोक्त पीठशक्तियों के साथ पीठ की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में रख कर फिर ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण की पूजा करें । उसमें क्रम यह है (लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्रयन्त्र देखिये चित्र 2) ।

षट्कोणकेसरेषु । अग्निकोण । ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः¹ ॥1॥ निऋतिकोणे । ॐ पद्मिन्यै नमः² शिरसे स्वाहा 2 । वायव्ये । ॐ विष्णुपत्न्यै नमः³ शिखायै वषट् 3 । ईशान्ये । ॐ वरदायै नमः⁴ कवचाय हुम् 4 । देविपश्चिमे । ॐ कमलरूपायै⁵ नमोऽस्त्राय फट् 5 ।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा-

1. पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमनुं त्यजेत् ।

वरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्विन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इस प्रकार पञ्चाङ्ग की पूजा करें - इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥” साधक यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से विन्दु डाल कर ‘पूजितास्तर्पिताः सन्तु’ यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची । तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्याष्टदलेषु प्राचीक्रमेण ।

इसके बाद पुष्प और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके आठो दलों में पूर्व दिशा के क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः^६ १ । ॐ विमलायै नमः^७ २ । ॐ कमलायै नमः^८ ३ । ॐ वनमालिकायै नमः^९ ४ । ॐ विभीषिकायै नमः^{१०} ५ । ॐ मालिकायै नमः^{११} ६ । ॐ शाङ्कर्यै नमः^{१२} ७ । ॐ वसुमालिकायै नमः^{१३} ८ ।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः । जपदशांशेन होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।

इसके बाद भूपुर में पूर्व आदि क्रम से इन्द्र आदि देवताओं तथा वज्र आदि उनके अस्त्रों की पूजा करें । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करें । इसका पुरश्चरण दश लाख जप है । जप का दशांश होम होता है और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोज करें । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे ।

दशलक्षं जपेन्मन्त्रं मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः ।

दशांशं जुहूयान्मन्त्री मधुराक्तैः सरोरुहैः ॥१॥

इति सम्पूजयेद्देवीं सम्पदामालयं भवेत् ।

समुद्रगयां सरिति कण्ठमात्रे जले स्थितः ॥२॥

त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्री साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् ।

आराध्योत्तरनक्षत्रे देवीं स्रक् चन्दनादिभिः ॥३॥

नन्द्यावर्तभवैः पुष्पैः सहस्रं जुहुयात्ततः ।

पूर्णमास्यां फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः ॥4॥

पञ्चम्यां विशदाम्भोजैः शुक्रवारे सुगन्धिभिः ।

अन्यैर्वा विषदैः पुष्पैः प्रतिमासं विशालधीः ।

स भवेदब्दमात्रेण सर्वदा सम्पदां निधिः ॥5॥

मन्त्रविद् साधक जितेन्द्रिय होकर दश लाख मन्त्र का जप करे । जप का दशांश मधु, घी तथा शक्कर से सिक्त लाल कमलों से होम करें । इस प्रकार जो समुद्र में गिरने वाली नदी में कण्ठमात्र जल में खड़ा होकर देवी की पूजा करता है वह सम्पत्तियों का धाम बन जाता है । उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद तथा उत्तरा फाल्गुनी में माला तथा चन्दन आदि से देवी की पूजा करके तीन लाख जप करने से साधक साक्षात् वैश्रवण बन जाता है । इसके बाद नन्द्यावर्त फूलों से एक हजार होम करें । पूर्णमासी में मधु, घी तथा शक्कर से युक्त वेलों से होम करें । पञ्चमी को बड़े कमल के फूलों से और शुक्रवार को सुगन्धित अन्य बड़े फूलों से हवन करें । इसके बाद पूर्णमासी में घी, मधु तथा शक्कर से युक्त बेल के फलों से होम करें । जो इस प्रकार करता है वह एक वर्ष में समस्त सम्पत्तियों का निधि बन जाता है ।

इति दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

अथ सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीदप्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यं नमः । इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है - “ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः” यह सत्ताइस अक्षरी मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीमहालक्ष्मीदेवता श्रीं बीजं नमः शक्तिः सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि 1 । ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे 2 । ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि 3 । ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये 4 । ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः 5 । ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे । इति ऋष्यादि न्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । इति करन्यासः ।

नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः 1 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा 2 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् 3 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् 4 । ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् 5 । इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें —

अथ ध्यानम्

ॐ सिंदुरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौंदर्यवारान्निधिकोटीरांगदहार कुण्डल-
कटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् । हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां
परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥1॥

इति ध्यात्वा पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं
अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसन मन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा
मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा
आवरणपूजां कुर्यात् ।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को
अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में रख कर पुनः ध्यान
करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक
सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें
(लक्ष्मी सप्तविंशत्यक्षर मन्त्रपूजन यन्त्र देखिये चित्र 3) ।

षट्कोणकेसरों में — अग्निकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय
नमः¹ 1 । निर्वृत्तिकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालयै श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा² 2 ।
वायव्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्³ 3 । ईशान्ये ॐ श्रीं
ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय⁴ 4 । देवीपश्चिमे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै
श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्⁵ 5 ।

1. पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्रतत्र नेत्रमनुं त्यजेत् ।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इस प्रकार पञ्चाङ्गों की पूजा करें । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “ॐ अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥” यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर “पूजितास्तर्पिताः सन्तु” यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य ततोष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण ।

पूज्य और पूजक के बीच में पूर्व दिशा को प्रकल्पित करके पूर्वादि क्रम से आठों दलों में — ॐ श्रीधराय नमः^६ श्रीधरश्रीपादुकां यूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र । ॐ हृषीकेशाय नमः^७ हृषीकेशश्रीपा० २ । ॐ वैकुण्ठाय नमः^८ वैकुण्ठश्रीपा० ३ । ॐ विश्वरूपाय नमः^९ विश्वरूपश्रीपा० ४ । ॐ वसुदेवाय नमः^{१०} वासुदेवश्रीपा० ५ । ॐ सङ्कर्षणाय नमः^{११} सङ्कर्षणश्रीपा० ६ । ॐ प्रद्युम्नाय नमः^{१२} प्रद्युम्नश्रीपा० ७ । ॐ अनिरुद्धाय नमः^{१३} अनिरुद्धश्रीपा० ८ ।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इसके बाद अष्टदलों के बीच पूर्वादि क्रम से — ॐ भारत्यै नमः^{१४} भारतीश्रीपा० १ । ॐ पार्वत्यै नमः^{१५} पार्वतीश्रीपा० २ । ॐ चान्द्र्यै नमः^{१६} चान्द्रीश्रीपा० ३ । ॐ शच्यै नमः^{१७} शचीश्रीपा० ४ । ॐ दमकाय नमः^{१८} दमकाश्रीपा० ५ । ॐ सलिलाय नमः^{१९} सलिलश्रीपा० ६ । ॐ गुग्गुलुवे नमः^{२०} गुग्गुलुश्रीपा० ७ । ॐ कुरुण्टकाय नमः^{२१} कुरुण्टकश्रीपा० ८ ।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में — ॐ अनुरागाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२२} १ । ॐ संवादाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२३} २ । ॐ विजयाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२४} ३ । ॐ वल्लभाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२५} ४ । ॐ मदाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२६} ५ । ॐ हर्षाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२७} ६ । ॐ बलाय महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२८} ७ । ॐ तेजसे महालक्ष्मीबाणाय नमः^{२९} ८ ।

इससे आठ बाणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें । इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इद्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ।

तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च : लक्षं जपेत्फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुरोक्षितैः । दशांशसंस्कृते वह्नौ प्राक्प्रोक्तेनैव वर्त्मना ॥1॥

अनेन विधिना देवीं महालक्ष्मीमुपासते ।

ये तेषु निवसेल्लक्ष्मी रस्मरन्ती निजालयम् ॥2॥

उत्पलैर्जुहुयाल्लक्षं चन्दनाम्भसि लोलितैः ।

शत्रूणां लभते राज्यं विना युद्धेन पार्थिवः ॥3॥

जपन्राजसभां गच्छेत्सम्भाव्येत तया नरः ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि देवताओं तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करे । इस प्रकार अवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पूजा करके जप करें । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है और तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है : एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिए । इसके बाद मधु, घी तथा शक्कर से युक्त बेल के फलों से पूर्वोक्त नियमानुसार दशांश होम करना चाहिए । जो लोग इस विधि से देवी की उपासना करते हैं उनके घर में देवी अपने घर को भूलकर निवास करती हैं । यदि राजा चन्दन के जल में एक लाख कमलों को सिक्त करके हवन करे तो बिना युद्ध के शत्रु के राज्य को प्राप्त करता है ।

दूर्वा देवी महालक्ष्मीर्विष्णुक्रान्ता मधुव्रता ॥4॥

मुशली शत्रुबल्ली च सदाभद्राञ्जलिप्रिया ।

हरिचन्दनकर्पूरचन्दनाकोलरोचनाः ॥5॥

मालूरकेसरौ कुष्ठं सर्वं पिष्ट्वा निशारसैः ।

अष्टोत्तरसहसं तु जपित्वा तिलकक्रियाम् ॥6॥

कुर्वतो मन्त्रिणः सर्ववशे तिष्ठन्त्यहर्निशम् ।

श्रियो मन्त्रं भजेन्मन्त्री श्रीसूक्तान्यपि संजपेत् ॥7॥

भूयसीं श्रियमाकांक्षन् सत्यवादी भवेत्सदा ।

प्रत्यगाशामुखोऽश्नीयात्स्थितः पूर्वं प्रियं वदेत् ॥8॥

पूजयेद् गन्धपुष्पाद्यैरात्मानं नियतः शुचिः ।

शयीत शुद्धशय्यायां तरुण्या सह नान्यथा ॥9॥

नग्नो नावतरेदम्भस्तैलाभ्यक्तो न भक्षयेत् ।
 हरिद्रां न मुखे लिम्पेन्न स्वपेदशुचिः क्वचित् ॥10॥
 न वृथा विलिखेद्भूमिं न बिल्वं द्रोणमम्बुजम् ।
 धारयेन्मूर्ध्नि नैवाद्याल्लोणं तैलं च केवलम् ॥11॥
 मलिनो न भवेज्जातु कुत्सितान्नं न भक्षयेत् ।
 द्रोणपङ्कजबिल्वानि पद्भ्यां जातु न लङ्घयेत् ॥12॥
 सहदेवीमिन्द्रवल्लीं श्रीवल्लीं विष्णुवल्लभाम् ।
 कन्याम्बुजप्रवालं च धारयेन्मूर्ध्नि सर्वदा ॥13॥
 इत्याचारपरो नित्यं विष्णु भक्तो दृढव्रतः ।
 श्रियमाप्नोति महतीं देवानामपि दुर्लभाम् ॥14॥

दूब, सहदेई, लक्ष्मीबल्ली, विष्णुक्रान्ता, मधुव्रता, मुशली, इन्द्रवारुणी, नागरमोथा, लज्जालू, पीतचन्दन, कपूर, श्वेतचन्दन, अंकोल, गोरोचन, बेल, नागकेसर तथा कुष्ठ को हल्दी के रस में पीस कर एक सौ आठ मन्त्र का जप करके तिलक लगाने से मन्त्रिगण साधक के वश में होकर रातदिन तत्पर रहते हैं । अधिक धन की इच्छा करता हुआ सदा सत्याचारी रह कर साधक लक्ष्मी के मन्त्र का जप करे तथा श्रीसुक्त का भी जप करे । पूर्व की ओर मुख करके भोजन करे और पूर्व की ओर मुख करके बैठे तथा सत्य बोले । शुद्ध और जितेन्द्रिय होकर गन्ध-पुष्प आदि से साधक अपनी पूजा नित्य करे । शय्या पर युवती के साथ शयन करे अकेले नहीं । पानी में नङ्गा होकर न उतरे । तेल मर्दन करके भोजन न करे । हल्दी का लेप मुख पर न करे । कहीं पर अपवित्र होकर न शयन करे । व्यर्थ भूमि न कुरेदे । बेल, गूमा या कमल को सिर पर न धारण करे और नमक या तेल अकेले-अकेले न खाये । कभी मलिन न रहे । निन्दित अन्न न खाये । गूमा, बेल तथा कमल को पैरों से कभी न लांघे । सहदेई, इन्द्रवारुणी, लक्ष्मीलता, विष्णुक्रान्ता, घीकुआर, कमल तथा प्रवाल सदा सिरपर धारण करे । इस प्रकार के आचारों से युक्त होकर नित्य विष्णुभक्त और व्रत में निष्ठावान् होकर जो रहता है वह देवदुर्लभ महती समृद्धि को प्राप्त करता है ।

इति सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

अथ द्वादशाक्षर महालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है - ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः । यह द्वादशाक्षर मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीजगन्माता महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि 1 । गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे 2 । श्रीजगन्माता महालक्ष्म्यै नमः हृदि 3 । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये 4 । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे 5 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : मूल से हाथ धोकर ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6 । इति करन्यासः ।

इसके बाद “ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः” से मस्तकादिचरणान्त व्यापक न्यास करें ।

इससे न्यास करके इस प्रकार मन्त्रवर्णन्यास करें -

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि 1 । ॐ ह्रीं नमः मुखे 2 । ॐ श्रीं नमः हृदये 3 । ॐ क्लीं नमः गुह्ये 4 । ॐ सौं नमः पादयोः 5 । इस प्रकार न्यास करके हृदय पर हाथ रखकर सप्तवर्ण न्यास करे । इसमें क्रम यह है : ॐ जं नमः त्वचि 6 । ॐ गत् नमः रक्ते 7 । प्रं नमः मांसे 8 । ॐ सूं नमः मेदसि 9 । ॐ त्यै नमः अस्थि 10 । ॐ नं नमः मज्जायाम् 11 । ॐ मं नमः शुक्रे 12 । इस प्रकार न्यास करें । इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

करन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ सौं वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6 । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः 1 । ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा 2 । ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् 3 । ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् 4 । ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् 5 । ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् 6 । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

एवं न्यासविधिं कृत्वोद्यानस्मरणं कुर्यात् ।

इस प्रकार न्यासविधि करके उद्यान का स्मरण करें । यथा —

चम्पकाशोकपुन्नागपाटलैरुपशोभितम् ।

लवङ्गमालतीबिल्वदेवदारुनमेरुभिः ॥1॥

मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सुपुष्पितैः ।

चन्दनैः कर्णिकारैश्च मातुलिङ्गैश्च वज्जुलैः ॥2॥

दाडिमीलकुचाङ्गोलैः पूगैः कुरवकैरपि ।

कदलीकुन्दमन्दारनालिकेरैरलंकृतैः ॥3॥

अन्यैः सुगन्धिपुष्पाद्यैर्वृक्षसंघैश्च मण्डितम् ।

मालतीमल्लिकाजातीकेतकीशतपत्रकैः ॥4॥

पारन्तीतुलसीनन्द्यावर्तैर्दमनकैरपि ।

सर्वर्तुकुसुमोपेतैर्नमद्भिरुपशोभितम् ॥5॥

मन्दमारुतसंभिन्नकुसुमामोदिदिङ्मुखम् ।

तस्य मध्ये सदोत्फुल्लैः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥6॥

सौगन्धिकैश्च कह्लारैर्नवैः कुवलयरैरपि ।

हंससारसकारण्डैर्भ्रमरैश्चक्रनामभिः ॥7॥

अन्यैः कलकलारावैर्विहंगैरुपशोभितम् ।

महासरसि तन्मध्ये पुलिनेऽतिमनोहरे ॥8॥

परितः पारिजाताद्यं मण्डपं मणिकुट्टिमम् ।

उद्यदादित्यसङ्काशं भास्वरं शशिशीतलम् ॥9॥

चतुर्द्वारसमायुक्तं हेमप्राकार शोभितम् ।

रत्नोपक्लृप्तिसंशोभिकपाटाष्टकसंयुतम् ॥10॥

नवरत्नसमाक्लृप्तं तुङ्गगोपुरतोरणम् ।

हेमदण्डसमालम्बिध्वजादलिपरिष्कृतम् ॥11॥

नवरत्नसमाबद्धस्तम्भराजिविराजितम् ।

सहस्रदीपसंयुक्तदीपं दण्डविराजितम् ॥12॥

तप्तहाटकसंक्लृप्तवातायन मनोहरम् ।

नानावर्णाशुकोद्धुसुवर्णशतकोटिभिः ॥13॥

किङ्किणीमल्लिकायुक्तपाताकाभिरलंकृतम् ।

जातरूपमयै रत्नविचित्रैरतिविस्तृतैः ॥14॥

माणिक्यरत्नवैदूर्यस्वर्णमालावलीयुतैः ।
 अन्तरान्तरसम्बद्धरत्नैर्दृष्टिमनोहरैः ॥15॥
 विचित्रैश्चित्रवर्णैश्च वितानैरुपशोभितम् ।
 सर्वरत्नसमायुक्तं हेमकुट्टिममुज्ज्वलम् ॥16॥
 केतकीमालतीजातीचम्पकोत्पलकेसरैः ।
 मल्लिका तुलसीजातीनन्द्यावर्तकदम्बकैः ॥17॥
 एतैरन्यैश्च कुसुमैरलंकृतमहीतलम् ।
 अम्बुकाशमीरकस्तूरीमृगनाभितमालकैः ॥18॥
 चन्दनागुरुकपूरैरामोदितदिगन्तरम् ।
 एवं सञ्चिन्त्य मनसा मण्डपं सुमनोहरम् ॥19॥
 तन्मध्ये भावयेन्मन्त्री पारिजातं मनोहरम् ।
 तस्याधस्तात्स्मरेन्मन्त्री रत्नसिंहासनं शुभम् ।
 तस्मिन्सञ्चितयेद्देवीं महालक्ष्मीं मनोरमाम् ॥20॥

इत्युद्यानस्मरणं कृत्वा महालक्ष्मीं ध्यायेत् ।

इस प्रकार उद्यान का स्मरण करके महालक्ष्मी का ध्यान करें ।

अथ ध्यानम्

बालार्कद्युतिमिन्दुखण्डविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां रत्नाकल्पविभूषितां कुचनतां
 शालैः करैर्मञ्जरीम् । पद्मं कौस्तुभरत्नमप्यविरतं सम्बिभ्रतीं सस्मितां फुल्लाम्भोज-
 विलोचनत्रययुतां ध्यायेत्परां देवताम् ॥1॥

सिञ्जन्मञ्जीरसंशोभिपदाम्भोजविराजिताम् ।

नवरत्नगणाकीर्णकाञ्चीदामविभूषिताम् ॥2॥

मुक्तामाणिक्यवैदूर्यसम्बद्धोदरबन्धनाम् ।

विभ्राजमानां मध्येन वलित्रितयशोभिताम् ॥3॥

जाह्नवीसरिदावर्तशोभिनाभिविभूषिताम् ।

पाटीरपङ्क कर्पूरकुम्कुमालंकृतस्तनीम् ॥4॥

वारिवाहविनिर्मुक्तमुक्तादामगरीयसीम् ।

वहन्तीमुत्तरासङ्गं दुकूलपरिकल्पिताम् ॥5॥

तप्तकाञ्चनसन्नद्धवैदूर्याङ्गदभूषणाम् ।

पद्मरागस्फुरद्वर्णकङ्कणाढ्यकराम्बुजाम् ॥6॥

माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम् ।
 तप्तहाटकसंकलृप्तमालग्रैवेयशोभिताम् ॥7॥
 विचित्रविविधाकल्पकम्बुसंकाशकन्धराम् ।
 उद्यद्दिनकराकारमणिताटङ्कमण्डिताम् ॥8॥
 रत्नाङ्कितलसत्स्वर्णकर्णपूरोपशोभिताम् ।
 जयाविद्रुमलावण्यललिताधरपल्लवाम् ॥9॥
 दाडिमीफलबीजाभदन्तपंक्तिविभूषिताम् ।
 कलङ्ककाश्यनिर्मुक्तशरच्चन्द्रनिभननाम् ॥10॥
 पुण्डरीकदलाकारनयनत्रय सुन्दरीम् ।
 भूलताजितकन्दर्पकरकार्मुकविभ्रमाम् ॥11॥
 विलसत्तिलपुष्पश्रीविजयोद्यतनासिकाम् ।
 ललाटकान्तिविभवविजिताब्धिसुधाकराम् ॥12॥
 सान्द्रसौरभसम्पन्नकस्तूरीतिलकांकिताम् ।
 मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखाम्बुजाम् ॥13॥
 पारिजातप्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबन्धनाम् ।
 अनर्घ्यरत्नघटितमुकुटाङ्कितमस्तकाम् ॥14॥
 सर्वलावण्यवसतिं भवनं विभ्रमश्रियः ।
 तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम् ॥15॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्यां गृहत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः ।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें । उसमें क्रम यह है (द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्रयन्त्र, देखिये चित्र 4) ।

देव्या दक्षिणे ॐ शङ्करनन्दनाय नमः¹ । शङ्करनन्दनश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः 1 । एवं सर्वत्र¹ । देव्या वामे ॐ पुष्पधन्वने² नमः
पुष्पधन्वश्रीपा० ॥२॥ इति पूजयेत् ।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि
शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् । इति पठित्वा
पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमा
वरणम् ॥१॥

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “ॐ अभीष्टसिद्धिं
मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।” यह पढ़ कर
पुष्पाञ्जलि देकर “पूजितास्तर्पिताः सन्तु” यह कहे । इति प्रथमावरण ॥१॥

इसके बाद षट्कोण-केसरो में - अग्निकोणे ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः³ ।
हृदयश्रीपा० 1 । निर्वृत्तिकोणे । ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसेस्वाहा⁴ । शिरः श्रीपा० 2 ।
वायव्ये ॐ श्रीं शक्तये शिखायै⁵ वषट् । शिखाश्रीपा० 3 । ईशान्ये ॐ क्लीं बलाय
कवचाय⁶ हुम् । कवचश्रीपा० 4 । पूज्यपूजकयामध्ये ॐ सौवीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ।
नेत्रत्रयश्रीपा० 5 । देव्याः पश्चिमे ॐ जगत्प्रसूत्ये नमस्तेजसे अस्त्राय⁸ फट् । अस्त्रश्रीपा० 6 ।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥२॥

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः
प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण ।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान
कर और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से — ॐ
उमायै नमः⁹ । उमाश्रीपा० 1 । ॐ श्रियै नमः¹⁰ । श्रीश्रीपा० 2 । ॐ सरस्वत्यै
नमः¹¹ । सरस्वतीश्रीपा० 3 । ॐ दुर्गायै नमः¹² । दुर्गाश्रीपादुकां पू० 4 । ॐ
धरण्यै नमः¹³ । धरणिश्रीपा० 5 । ॐ गायत्र्यै नमः¹⁴ । गायत्रीश्रीपा० 6 । ॐ
देव्यै नमः¹⁵ । देवीश्रीपा० 7 । ॐ उषायै नमः¹⁶ । उषाश्रीपा० 8 ।

इस प्रकार आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ।

इसके बाद देवी के दक्षिण - ॐ जह्नुसुतायै नमः¹⁷ । जह्नु सुताश्रीपा०
1 । देव्या वामे ॐ सूर्यसुतायै नमः¹⁸ । सूर्यसुताश्रीपा० 2 । ततः पुनर्देव्या दक्षिणे
ॐ शङ्खनिधये नमः¹⁹ । शङ्खनिधिश्रीपा० 3 । पुनर्देव्या वामे ॐ पद्मनिधये
नमः²⁰ । पद्मनिधिश्रीपा० 4 ।

पश्चिमे धृतातपत्रं वरुणं पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति चातुर्थावरणम् ॥४॥

पश्चिमे में आतपत्र (छत्र) धारी वरुण की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति चतुर्थावरण ॥४॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्वादि क्रम से - ॐ सूर्याय नमः²¹ । सूर्यश्रीपा० १ । ॐ सोमाय नमः²² । सोमश्रीपा० २ । ॐ भौमाय नमः²³ । भौमश्रीपा० ३ । ॐ बुधाय नमः²⁴ । बुधश्रीपा० ४ । ॐ बृहस्पतये नमः²⁵ । बृहस्पतिश्रीपा० ५ । ॐ शुक्राय नमः²⁶ । शुक्रश्रीपा० ६ । ॐ शनैश्चराय नमः²⁷ । शनैश्चरश्रीपा० ७ । ॐ राहवे केतवे नमः²⁸ । राहुकेतुश्रीपा० ८ ।

इससे नव ग्रहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति पञ्चमावरण ॥५॥

इसके बाद भूपुर के भीतर - ॐ ऐरावताय नमः²⁹ । ऐरावतश्रीपा० १ । ॐ पुण्डरीकाय नमः³⁰ । पुण्डरीकश्रीपा० २ । ॐ वामनाय नमः³¹ । वामनश्रीपा० ३ । ॐ कुमुदाय नमः³² । कुमुदश्रीपा० ४ । ॐ अञ्जनाय नमः³³ । अञ्जनश्रीपा० ५ । ॐ पुष्पदन्ताय नमः³⁴ । पुष्पदन्तश्रीपा० ६ । ॐ सार्वभौमाय नमः³⁵ । सार्वभौमश्रीपा० ७ । ॐ सुप्रतीकाय नमः³⁶ । सुप्रतीकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ८ ।

इससे आठ दिग्गजों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति षष्ठावरण ॥६॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि देवताओं तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करें —

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य पुनर्ध्यात्वा जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । जपदशांशतो घृतहोमः । पुनः श्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुतं होमः । ततोयुतद्वयमितं तर्पणं कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं जुहुयाद्घृतैः । जुहुयाच्छ्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुतं ततः ॥१॥ तर्पयेत्सतिलैः शुद्धैः सुगन्धैरयुतद्वयम् । आगमोक्तेन विधिना सुगन्धैः सुमनोहरैः । पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैर्देवीमन्वहमादरत् ॥२॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि दान से नीराजनान्त पूजा करके पुनः ध्यान करके जप करे । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है । जप का दशांश घी से होम करना है । पुनः बेल तथा कमल प्रत्येक से दश-दश हजार होम करना है । इसके बाद बीस हजार बार तर्पण करें- ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । बारह लाख जप करना चाहिये । उसका दशांश घी से होम करना चाहिए । इसके बाद बेल तथा कमल प्रत्येक से दश-दश हजार होम करना चाहिये । इसके बाद शुद्ध

सुगन्धित तिल सहित जल से बीस हजार बार तर्पण तथा आगमोक्त विधि से सुगन्धित और सुन्दर फूलों तथा गन्ध, पुष्प, पाद्य आदि से देवी का आदरपूर्वक पूजन करें ।

दूर्वाभिराज्यसिक्ताभिर्जुहुयादायुषे नरः ।
 दशरात्रं समिद्धेऽग्नावष्टोत्तरसहस्रकम् ॥3॥
 गुडूचीराज्यसंसिक्ता जुहुयात्सप्तवासरम् ।
 अष्टोत्तरसहस्रं यः स जीवेच्छरदां शतम् ॥4॥
 हुत्वा तिलान् घृताभ्यक्तान्दीर्घमायुरवाप्नुयात् ।
 आरभ्यार्कं दिनं मन्त्री दशरात्रं दिनेदिने ॥5॥
 आज्याक्तार्कसमिद्धोमादारोग्यं लभते ध्रुवम् ।
 कण्ठमात्रोदके स्थित्वा ध्यात्वा देवीं दिवाकरे ॥6॥
 ऊर्ध्वबाहुर्दशशतमष्टोत्तरमिमं हुनेत् ।
 आरोग्यं लभते सद्यो वाञ्छितान्यपि मन्त्रवित् ॥7॥

मनुष्य आयु की प्राप्ति के लिए प्रदीप्त अग्नि में एक हजार आठ बार घी से सिक्त दूबों से दश रात्रि तक होम करें । घी से युक्त गिलोय से सात दिन तक जो एक हजार आठ बार होम करता है, वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है । रविवार से प्रारम्भ करके दश रात्रियों तक प्रतिदिन जो घी से सिक्त तिलों से होम करता है वह दीर्घायु प्राप्त करता है । घी में सिक्त मदार की समिधाओं से होम करने से मनुष्य निश्चित रूप से आरोग्य प्राप्त करता है । जो साधक कण्ठ तक जल में सूर्यादय के समय खड़ा होकर दोनों हाथों को ऊपर उठा कर देवी का ध्यान करके एक हजार आठ आहुतियों का होम करता है वह तत्काल आरोग्य प्राप्त करता है और उसकी कामनायें भी पूर्ण हो जाती हैं ।

शालीभिर्जुह्वतो नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ।
 अचिरादेव महती लक्ष्मीः सञ्जायते ध्रुवम् ॥8॥
 प्रसूनैर्जुहुयान्मन्त्री लक्ष्मीवल्लीसमुद्भवै ।
 नन्द्यावर्तं समुत्थैश्च सिद्धार्थैश्च घृताप्लुतैः ।
 महतीं श्रियमाप्नोति मान्यते सर्वजन्तुभिः ॥9॥

चावल से नित्य होम करने वाले को भी शीघ्र ही निश्चित रूप से महती लक्ष्मी प्राप्त होती है । घृत से युक्त लक्ष्मीवल्ली (मेषशृङ्गी) और नन्द्यावर्त के पुष्पों

से तथा पीली सरसों से जो साधक होम करता है वह भी महती समृद्ध को प्राप्त करता है तथा समस्त प्राणियों में मान्य होता है ।

मरीचजीरकोन्मिश्रैर्नारिकेलरजः प्लुतैः ।

सगुडैराज्यसम्पक्वैरूपैराज्यलोलितैः ।

जुहुयात्पायसाहारो मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः ॥10॥

अष्टोत्तरशतं नित्यं मण्डलाद्धनदो भवेत् ।

खीर का आहार करता हुआ जितेन्द्रिय होकर जो मन्त्रविद् साधक काली-मिर्च, जीरा तथा नारियल के रज से प्लुत गुड़ सहित घी में पके घृतप्लुत पूओं से एक सौ आठ आहुतियों द्वारा नित्य होम करता है वह उनचास दिन में कुबेर के समान धनवान हो जाता है ।

हविषा गुडमिश्रेण जुहुयादर्थवान्भवेत् ॥11॥

जपा पुष्पाणि जुहुयादष्टोत्तरसहस्रकम् ।

गृहीत्वा प्रजपेद्भस्म नागवल्लीसमन्वितम् ॥12॥

तिलकं तनुयात्तेन सववश्यकरोभवेत् ।

गुड़मिश्रित हविष्य से होम करने से साधक धनवान होता है । जपापुष्पों से एक हजार आठ बार होम करने, उसकी भस्म को नागवल्ली से समन्वित कर जप करके उससे तिलक लगाने से साधक सभी को वश में कर लेता है ।

ब्रह्म वृक्षसमित्पुष्पैर्ब्राह्मणान्वशयेद्वशी ॥13॥

पलाश की समिधाओं और पुष्पों से होम करने से साधक ब्राह्मणों को वश में कर लेता है ।

जातीपुष्पैश्च राजानं वैश्यान् रक्तोत्पलैः शुभैः ।

शूद्रात्रीलोत्पलैर्हुत्वा वशयेन्मन्त्रविन्नरः ॥14॥

चमेली के पुष्पों से होम करने से साधक राजा को, शुभ लाल कमलों से होम करने से वैश्यों को तथा नीले कमलों से होम करने से शूद्रों को वश में कर लेता है ।

पुष्पैर्मधूकजैर्हुत्वा वशमानयति स्त्रियः ।

महुये के पुष्पों से होम करने से साधक स्त्रियों को वश में कर लेता है ।

कृत्वा नवपदात्मानं मण्डलं यन्त्रभूषितम् ॥15॥

अभिषेकं प्रकुर्वीत विधिना सर्वसिद्धये ।

कलशान्स्थापयेत्तेषु पदेषु शुभलक्षणान् ॥16॥

चन्दनालिप्तसर्वाङ्गान् दूर्वाक्षतसमन्वितान् ।
 दुकूलवेष्टितानेतान्पूरयेत्तीर्थवारिणा ॥17॥
 नवरत्नसमाबद्धं कर्षकाञ्चनकल्पितम् ।
 मध्यकुम्भे क्षिपेत्पद्मं यन्त्राढ्यं देशिकोत्तमः ॥18॥
 चन्दनोशीरकर्पूरजातीकङ्कोलकुङ्कुमम् ।
 कुष्ठागरुतमालैलायुतं सम्पिष्य भागतः ॥19॥
 बिलोड्य सर्वकुम्भेषु रत्नान्यापि विनिक्षिपेत् ।
 लक्ष्मीदूर्वासदाभद्रासहदेवीमधुव्रताः ॥20॥
 मुशलीं शक्रवल्लीं च क्रान्तापामार्गपत्रकान् ।
 प्रियंगुमुद्गगोधूमव्रीहींश्च सतिलान्यवान् ॥21॥
 शालितण्डुलमाषांश्च प्रक्षाल्यैतेषु निक्षिपेत् ।
 धात्रीलकुचबिल्वानां कदलीनालिकेरयोः ॥22॥
 फलान्यपि विनिक्षिप्य पुष्पाण्येतानि निक्षिपेत् ।
 पद्मं सौगन्धिकं जातिं मल्लिकां बकुलं तथा ॥23॥
 चम्पकाशोकपुन्नागतुलसीकेतकोद्भवान् ।
 पल्लवान्वटाश्वत्थप्लक्षोदुम्बरशाखिनाम् ॥24॥
 ब्रह्मकूर्चं विनिक्षिप्य चम्पकैः सफलान्वितैः ।
 पिधाय कृम्भवक्त्राणि क्षौमैराच्छादयेत्ततः ॥25॥
 आवाह्य मध्यकलशे महालक्ष्मीं प्रपूजयेत् ।
 यजेदुमाद्याः शिष्टेषु कलशेष्वष्टसु क्रमात् ॥26॥
 गन्धैर्मनोहरैः पुष्पैर्धूपदीपसमन्वितैः ।
 निवेद्य भक्ष्यभोज्यानि तान्स्पृष्ट्वा प्रजपेन्मनुम् ॥27॥

यन्त्रभूषित नवपदात्मक मण्डल को लिख कर (शारदातिलकटीकायां राघवभट्टः
 नवपदात्मानं तृतीयोक्त नवनामयन्त्रभूषित वक्ष्यमाण यन्त्रं तन्मध्य पद्मकर्णिकायां
 लिखेदित्यर्थः) सर्वसिद्धियों के लिए उसका विधिवत् अभिषेक करें । तदनन्तर
 प्रत्येक पद में चन्दन से सर्वाङ्ग लिप्त एवं दूर्वा तथा अक्षतों से समन्वित उत्तम
 लक्षणयुक्त कलशों की स्थापना करें । फिर उन्हें रेशमी वस्त्रों से वेष्टित करके उनमें
 तीर्थों का जल भर दें । उत्तम आचार्य को चाहिये कि नव रत्नों से समाबद्ध एक
 कर्ष स्वर्ण से कल्पित और यन्त्र से संयुक्त पद्म को मध्य कुम्भ में डाल दें ।
 चन्दन, उशीर, कपूर, जाती, कङ्कोल, कुङ्कुम, कुष्ठ, अगर, तमाल तथा एला

समान भाग पीस कर सभी कुम्भों में विलोडित करे तथा रत्न भी डाल दे । लक्ष्मी, दूर्वा, सदाभद्रा, सहदेवी, मधुव्रता, मुशली, शक्रवल्ली क्रान्ता, अपामार्ग, इनके पत्रों को और प्रियंगु, मुद्ग, गोधूम, ब्रीहि, तिल, यव, शालितण्डुल तथा माष इन सबको धोकर उक्त कुम्भों में डाल दें । धात्री, लकुच, बिल्व, कदली तथा नारियल के फलों को भी उनमें डाल दें । पद्म, सौगन्धिक, जाती, मल्लिका, बलुक, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, तुलसी तथा केतकी के पुष्प भी उनमें डालें । वट, अश्वत्थ, प्लक्ष तथा उदुम्बर वृक्षों के पत्रों और सफलान्वित चम्पक के साथ ब्रह्मकूर्च को निक्षिप्त करके कुम्भों के मुखों को बन्द कर क्षौमवस्त्रों से उन्हें ढँक दें । मध्य कलश में लक्ष्मी का आवाहन करके उनकी पूजा करें । शेष आठ कलशों में उमा की पूजा करें । मनोहर गन्धमय पुष्पों से धूप-दीप के साथ भक्ष्य भोज्य द्रव्यों का निवेदन कर उन कुम्भों का स्पर्श करके मन्त्र का जप करें ।

त्रिसहस्रं जपस्यान्ते साध्यमानीय संयतम् ।

संस्थाप्य स्थण्डिले पीठं तस्मिंस्तं विनिवेशयेत् ॥२८॥

रम्यैरावरणैर्वस्त्रैरलंकृत्य तमादरात् ।

सुमङ्गलाभिर्नारीभिः क्षिप्तपुष्पाक्षतान्वितम् ॥२९॥

अर्चितानां द्विजातीनामाशीर्वादपुरःसरम् ।

नदत्सु पञ्चवाद्येषु मुहुर्ते शोभने सुधीः ॥३०॥

मध्यस्थं कुम्भमुत्सृज्य महालक्ष्मीमनुस्मरन् ।

अभिषिञ्चेत्क्रमादन्यैः कलशैरपि देशिकः ॥३१॥

करेणास्य शिरः स्पृष्ट्वा प्रयुञ्जीताशिषं गुरुम् ।

भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु ॥३२॥

रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा ।

अथोत्थायाभिषिक्तः सन् वापसी परिधाय च ॥३३॥

यथाविधि समाचम्य दण्डवत्प्रणमेद्गुरुम् ।

वस्त्रैराभरणैर्धान्यैर्धनैर्गोमहिषादिभिः ॥३४॥

दासीदासैश्च विधिवत्तोषयेद्देवताधिया ।

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दीनांधकृपणैः सह ॥३५॥

महान्तमुत्सवं कुर्याद्भवने बन्धुभिः सह ।

तदा कृतार्थमात्मानं मन्यते मनुजोत्तमः ॥३६॥

अभिषिक्तो नरपतिः परान् विजयतेऽचिरात् ।

पदेच्छुः पदमाप्नोति राजपुत्रो न संशयः ॥३७॥

अभिषिक्ता सती वन्ध्या सूते पुत्रं महामतिम् ।

महारोगेषु जातेषु कृत्याद्रोहेषु देशिकः ॥३८॥

भूतेषु दुर्निमित्तादौ विदध्यादभिषेचनम् ।

सर्वसम्पत्करं पुंसां सर्वसौभाग्यसिद्धिदम् ॥३९॥

सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्धिनिवारणम् ।

गर्भरक्षाकरं स्त्रीणां दीर्घायुर्जनकं परम् ॥४०॥

प्रसूतानामपि स्त्रीणां सूतिकागाररक्षकम् ।

प्रनष्टपुष्पगर्भाणां पुष्पगर्भाभिरक्षणम् ॥४१॥

आसन्नशत्रुभीतानां नाशनं च महीभृताम् ।

अभिषेकमिमं प्राहुरागमार्थविशारदाः ॥४२॥

तीन हजार जप के बाद साधक संयत साध्य को लाकर स्थण्डिल पर पीठ की स्थापना कर उस पर उसे रम्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके आदरपूर्वक बैठाये । उसके ऊपर सुमङ्गली नारियों से पुष्प और अक्षत का प्रक्षेपण कराये । पूजित विप्रों के आशीर्वादपूर्वक पाँच वाद्यों के बजाये जाने पर शुभ मुहूर्त में महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए मध्य में स्थित कलश को उठाकर साधक यजमान को स्नान कराये । इसी प्रकार अन्य कलशों से भी स्नान कराये । गुरु अपने हाथ से यजमान के शिर को स्पर्श करके आशीर्वाद दे कि “तुम्हारा कल्याण हो, मङ्गल हो, लक्ष्मीजी तुम पर प्रसन्न हों । सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें ।” इसके बाद यजमान स्नान करके उठे और दो वस्त्र धारण करे : एक अधोवस्त्र ओर एक उत्तरीय । तदनन्तर यथाविधि आचमन करके गुरु को दण्डवत् प्रणाम करे तथा वस्त्र, आभूषण, धन, धान्य, गाय, भैंस, दास, दासी आदि द्वारा देवबुद्धि से उनका सत्कार करे । इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें । तदनन्तर निर्धन, अन्धे, लङ्गड़े, लूले, अपङ्ग आदि को भोजन करायें । अपने घर में बन्धु-बान्धवों के साथ भारी उत्सव करे । तब वह उत्तम पुरुष अपने को कृतार्थ समझता है । वह अभिषिक्त होकर शत्रुओं को शीघ्र जीत लेता है । पद चाहने वाला राजपुत्र पद प्राप्त करता है । वन्ध्या स्त्री अभिषिक्त होकर अत्यन्त बुद्धिमान् पुत्र को जन्म देती है । महारोग होने पर, कृत्य-द्रोह होने पर, प्राणियों में कोई दैवी बाधा उपस्थित होने पर साधक अभिषेक करे । मनुष्यों को समस्त सम्पत्तियों को देने

वाला, सभी सौभाग्य और सिद्धियों का देन वाला, सभी रोगों को शमन करने वाला, स्त्रियों के गर्भ का रक्षक, दीर्घ आयु का जनक, जच्चा-बच्चा के घर की रक्षा करने वाला, जिन स्त्रियों का रजोधर्म नष्ट हो गया है उनके पुष्प और गर्भ की रक्षा करने वाला, निकट आये शत्रु से डरे हुए राजाओं के शत्रु का नाश करने वाला, आगम शास्त्र के विद्वानों ने इस अभिषेक को कहा है ।

इति द्वादशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

अथ त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठतिष्ठ स्वाहा । यह तेईस अक्षरों वाला मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् । लक्ष्मीः प्रसन्ना भवति द्रव्यं च ददाति । प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपने से लक्ष्मी प्रसन्न हो द्रव्य प्रदान करती हैं ।

इति त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

अथ सिद्धलक्ष्म्येकादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः

मन्त्र इस प्रकार है - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम्

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रजपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि 1 । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे 2 । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि 3 । श्रीं बीजाय नमः लिङ्गे 4 । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः 5 । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ 6 । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु 7 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ सिद्धलक्ष्म्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । ॐ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः 1 । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा 2 । ॐ क्लीं शिखायै वषट् 3 । ॐ श्रीं कवचाय हुम् 4 । ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट् 5 । ॐ नमः अस्त्राय फट् 6 । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

अथ ध्यानम्

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ।

त्रिनेत्रां खड्गशूलाभीपद्मचक्रगदाधराम् ॥1॥

पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम् ।

तेजःपुञ्जधरीं श्रेष्ठीं ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥2॥

इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय धूतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ सिद्धलक्ष्मीपद्मपीठाय नमः इत्यासनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेनावाहनादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य देवीं ध्यात्वा मूलमन्त्रं जपेत् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः । सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च रौप्यदीपमादाय गोघृतेनापूर्य एकादशतन्तुभिः पुष्पवर्तिकां निक्षिप्य मूलेन दीपं समर्पयामि । इति प्रज्वाल्य पूर्वाभिमुखं स्थित्वा शर्कराया नैवेद्यं निवेद्य स्फटिकमालामादाय हृदये धारयन् देवीं ध्यात्वा मन्त्रार्थं स्मरन् त्रिसन्ध्यं मूलमन्त्रमष्टोत्तर शतं प्रतिदिनं जपेत् । जपादौ जपान्ते च स्तोत्रं पठेत् ।

इससे ध्यान करके पूर्वोक्त पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दूध तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर “ॐ सिद्धलक्ष्मी पद्मपीठाय नमः” इस आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके मूलमन्त्र से आवाहन से लेकर पञ्चोपचारों से पूजा करके देवी का ध्यान करके मूलमन्त्र का जप करें । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । उसका दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे और चाँदी का दीपक लेकर गोघृत से भरकर ग्यारह तन्तुओं से पुष्पवर्तिका बनाकर उस दीपक में रख दें । मूलमन्त्र से “दीपं समर्पयामि” इससे जलाकर पूरब की ओर मुख करके शक्कर

का नैवेद्य देकर स्फटिक की माला लेकर हृदय में धारण करते हुए देवी का ध्यान करके मन्त्र के अर्थ का स्मरण करते हुए प्रातः, मध्याह्न तथा सायं तीनों सन्ध्याओं में मूलमन्त्र का एक सौ आठ बार प्रतिदिन जप करें। जप के प्रारम्भ में तथा जप के अन्त में स्तोत्र का पाठ करें।

सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रपाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि 1। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे 2। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदिः 3। श्रीं बीजाय नमो गुह्ये 4। ह्रीं शक्तये नमः पादयौः 5। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ॥7॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः 1। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः 2। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः 3। ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः 4। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5। ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नमः 1। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा 2। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट् 3। ॐ श्रीं दैत्य मालिन्यै कवचाय हुम् 4। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् 5। ॐ क्लीं ब्राह्म्यै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट् ॥6॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इति मन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं च कुर्यात्।

“ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः” इस मन्त्र से तीन ताल द्वारा दिग्बन्धन करे।

अथ ध्यानम्

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्।

त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदाधराम् ॥1॥

पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम्।

तेजःपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बालकुमारिकाम् ॥2॥

इस प्रकार ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करे —

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम् ।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम् ॥1॥

क्लीं अमृतानन्दनीं भद्रां सदात्यानन्ददायिनीम् ।
श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्हिनीम् ॥2॥

तेजः प्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम् ।
ब्राह्मीं च वैष्णीं रौद्रीं कालिकारूपशोभिनीम् ॥3॥

अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययम् ।

(ध्ययेदिति शेषः)

मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवी प्रणव उच्यते ॥4॥

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभम् ।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम् ॥5॥

ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीम् ।
सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥6॥

सर्वमङ्गलामङ्गल्ये शिवे स्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते ।

प्रथमं त्र्यम्बका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा ॥7॥
तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा ।

पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा ॥8॥
वाराहीसप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा ।

नवमं खड्गिणी प्रोक्ता दशमं चैव देविका ॥9॥
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी ।

एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नराः ॥10॥
सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा ।

एकमासं द्विमासं च त्रिमासं च चतुस्तथा ॥11॥
पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत् ।

ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामय पीडितः ॥12॥
जन्मान्तरसहस्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ।

दरिद्रो लभते लक्ष्मीपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ॥13॥

धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च ।
 शाकिनीभूतवेतालसर्पव्याघ्रनिपातने ॥14॥
 राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने ।
 ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकम् ॥15॥
 स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते ।
 सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥16॥

जो मनुष्य देवी के इस स्तोत्र को सदा पढ़ते हैं वे सभी आपत्तियों से मुक्त हो जाते हैं । इसमें विचार नहीं करना चाहिये । एक महीना, दो महीना, तीन महीना, चार महीना, पाँच महीना या छः महीना तीनों सन्ध्याओं में जो सदा इस स्तोत्र को पढ़ता है, वह ब्राह्मण यदि दुःखी हो, दरिद्र हो या रोगी हो तो भी हजारों जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है । दरिद्र लक्ष्मी को प्राप्त करता है और पुत्ररहित पुत्रवान् हो जाता है । अग्नि और चोर का भय उपस्थित होने पर, शाकिनी, डाकिनी, भूत, बेताल, सर्प और व्याघ्र आदि जानवरों का आक्रमण होने पर, राजा के दरबार में, सभास्थल में, कारागृह में वह मनुष्य धन्य, यशस्वी और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है । प्राणियों का हितकारक यह स्तोत्र ईश्वर द्वारा बनाया गया है । ब्राह्मण नित्य इसका पाठ करे तो दारिद्र्य की बाधा नहीं होगी । लक्ष्मी देवी सभी पापों का हरण करनेवाली और सब सिद्धियों को देने वाली हैं ।

इति श्रीब्रह्मपुराणे ईश्वरविष्णुसम्वादे श्रीसिद्धलक्ष्मी
 मन्त्रस्तोत्रविधानं समाप्तम् ।

अथ ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

मन्त्रमहोदधि में धन की वृद्धि करनेवाला ज्येष्ठालक्ष्मी महामन्त्र इस प्रकार बताया गया है — ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रां ज्येष्ठायै नमः ।
 यह सप्तदशाक्षर मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः ज्येष्ठालक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि 1 । अष्टिश्छन्दसे नमो मुखे 2 । ज्येष्ठालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि 3 । ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे 4 । श्रीं शक्तये नमः पादयोः 5 । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु 6 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ज्येष्ठालक्ष्मि तर्जनीभ्यां नमः 2 । स्वयंभुवे मध्यमाभ्यां नमः 3 । ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ज्येष्ठायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6 । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः 1 । ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा 2 । स्वयंभुवे शिखायै वषट् 3 । ह्रीं कवचाय हुम् 4 । ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् 5 । नमः अस्त्राय फट् 6 । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः शिरसि 1 । ॐ ह्रीं नमो भ्रूमध्ये 2 । ॐ श्रीं नमो मुखे 3 । ॐ ज्येष्ठालक्ष्म्यै नमः हृदि 4 । ॐ स्वयंभुवे नमः नाभौ 5 । ॐ ह्रीं नमः आधारे 6 । ॐ ज्येष्ठायै नमः जानुनि 7 । ॐ नमो नमः पादयोः 8 । इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें ।

अथ ध्यानम्

ॐ उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरालेपना सत्कुम्भं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्विभ्रती । पद्मस्था कमलेक्षणा दृढकुचा सौन्दर्यवारान्निधिध्यातव्या सकलाभिलाषफलदा श्रीज्येष्ठलक्ष्मीरियम् ॥1॥ इति ध्यायेत् ।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठदेवताः सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ।

इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके “ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः” इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें :

पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ लोहिताक्ष्यै नमः 1 । ॐ विरूपायै नमः 2 । ॐ कराल्यै नमः 3 । ॐ नीललोहितायै नमः 4 । ॐ समदायै नमः 5 । ॐ वारुण्यै नमः 6 । ॐ पुष्ट्यै नमः 7 । ॐ अमोघायै नमः 8 । मध्ये ॐ विश्वमोहिन्यै नमः 9 ।

इति पीठशक्तीः पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रं निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि । तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात् । इति गायत्रीमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तरूपचारैः सम्पूज्य देवयाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर “ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि । तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात् ।” इस गायत्री मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों से पूजन कर देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें :

पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्षु दिक्षु मध्येदिक्षु च ।

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे ॥१॥” इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि दें । इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में : (ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र 5) ।

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः^१ । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । इति सर्वत्र । ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा^२ । शिरःश्रीपा० २ । स्वयंभुवे शिखायै वषट्^३ । शिखाश्रीपा० ३ । ह्रीं कवचाय^४ हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय^५ वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । नमः अस्त्राय फट्^६ । अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इति षडङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥” यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर “पूजितास्तर्पिताः सन्तु” यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची । तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानते हुये तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से —

ॐ ब्राह्म्यै नमः⁷ । ब्रह्मीश्रीपा० 1 । ॐ माहेश्वर्यै नमः⁸ । माहेश्वरीश्रीपा० 2 । ॐ कौमार्यै नमः⁹ । कौमारीश्रीपा० 3 । ॐ वैष्णव्यै नमः¹⁰ । वैष्णवीश्रीपा० 4 । ॐ वाराह्यै नमः¹¹ । वाराहीश्रीपा० 5 । ॐ इन्द्राण्यै नमः¹² । इन्द्राणीश्रीपा० 6 । ॐ चामुण्डायै नमः¹³ । चामुण्डाश्रीपा० 7 । ॐ महालक्ष्म्यै नमः¹⁴ । महालक्ष्मीश्रीपा० 8 ।

इत्यष्टौ मातरः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति द्वितीयवरणम् ॥2॥

इससे अष्टमाताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति द्वितीयावरण ॥2॥

ततोभूपुरे पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । आज्याक्तमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः । तत्तद्वशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कारान्त उपचारों से पूजा करके जप करें । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । घी से युक्त खीर से दशांश होम करें तथा तत्तद्वशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें । इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे ।

लक्षं जपेत्पायसेन जुहुयात्तद्वशांशतः । आज्याक्तेन यजेत्पीठे वक्ष्यमाणे महाश्रियम् ॥1॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धो मनुर्दद्यादभीप्सितम् ।

एक लाख जप करके उसका दशांश घी मिश्रित खीर से होम करें और वक्ष्यमाण पीठ पर महालक्ष्मी का पूजन करें । इस प्रकार जपादि से सिद्ध मन्त्र अभीप्सित फल देता है ।

इति सप्तदशाक्षरज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

अथ वसुधालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः

मन्त्रो यथा - ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ । यह अट्टाईस अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य वसुधासंज्ञकज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः वसुधाश्रीदेवता ग्लौं बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टप्राप्त्यै जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि 1 । निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे 2 । वसुधाश्रीदेवतायै नमो हृदि 3 । ग्लौं बीजाय नमो लिङ्गे 4 । श्रीं शक्तये नमः पादयोः 5 । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु 6 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ अन्नं देहि ग्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 । ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लौं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । इति करन्यासः ।

पञ्चाङ्गन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः 1 । ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा 2 । ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट् 3 । ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लौं श्रीं कवचाय हुम् 4 । ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् 5 । इति पञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके स्वर्णदीप में देवी का ध्यान करें :

अथ ध्यानम्

ॐ कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये । भूमिश्रियौ वाञ्छितवामदक्षे सञ्चिन्तयेद्देवमुनीन्द्रवन्द्ये ॥1॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके “ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः” इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें —

पूर्वाद्यष्टसुदिक्षु ॐ विमलायै नमः 1 । ॐ मुत्कर्षिण्यै नमः 2 । ॐ ज्ञानायै नमः 3 । ॐ क्रियायै नमः 4 । ॐ योगायै नमः 5 । ॐ प्रह्वायै नमः 6 । ॐ सत्यायै नमः 7 । ॐ ईशानायै नमः 8 । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः 9 ।

इति पीठशक्तीः पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण

प्रोक्ष्य ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तरूपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से बने यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर “ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः” इस मन्त्र से पुष्प और पाद्य का आसन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार पूजा करें (वसुधालक्ष्मी पूजन यन्त्र देखिये चित्र 6) ।

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्येदिक्षु च ।

पुष्पाञ्जलि लेकर ‘ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये । अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे ॥१॥’ इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि दे । इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में —
ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः^१ । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ।
इति सर्वत्र । ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा^२ । शिरः श्रीपा० २ । ॐ
अन्नाधिपये ग्लूँ श्रीं शिखायै वषट्^३ । शिखा श्रीपा० ३ । ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैँ
श्रीं कवचाय^४ हुम् । कवचश्रीपा० ४ । ॐ स्वाहा ग्लौँ श्रीं अस्त्राय फट्^५ ।
अस्त्रश्रीपा० ५ ।

इति णञ्चाङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य :
अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं
प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः
सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इससे पञ्चाङ्गों का पूजन करें । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके “अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥” इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर “पूजितास्तर्पिताः सन्तु” यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची । तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेणाष्टदलेषु चतुर्दिक्षु ।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से अष्टदलों में चारों दिशाओं में — ॐ पृथिव्यै नमः⁷ । पृथ्वीश्रीपा० १ । ॐ अग्नये नमः⁸ । अग्निश्रीपा० २ । ॐ जलाय नमः⁹ । जलश्रीपा० ३ । ॐ मारुताय नमः¹⁰ । मारुतश्रीपा० ४ । आग्नेयादिविदिक्षु च ॐ निवृत्यै नमः¹¹ । निवृत्तिश्रीपा० ५ । ॐ प्रतिष्ठायै नमः¹³ । प्रतिष्ठाश्रीपा० ६ । ॐ विद्यायै नमः¹³ । विद्याश्रीपा० ७ । ॐ शान्त्यै नमः¹⁴ । शान्तिश्रीपा० ८ ।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से — ॐ बलाकायै नमः¹⁵ । बलाकाश्रीपा० १ । ॐ विमलायै नमः¹⁶ । विमलाश्रीपा० २ । ॐ कमलायै नमः¹⁷ । कमलाश्रीपा० ३ । ॐ वनमालायै नमः¹⁸ । वनमालाश्रीपा० ४ । ॐ विभीषायै नमः¹⁹ । विभीषाश्रीपा० ५ । ॐ मालिकायै नमः²⁰ । मालिकाश्रीपा० ६ । ॐ शाङ्कर्यै नमः²¹ । शाङ्करीश्रीपा० ७ । ॐ वसुमालिकायै नमः²² । वसुमालिकाश्रीपा० ८ ।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें । इति तृतीयावरण ॥३॥

ततो भूपूरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्²³⁻³² वज्राद्यायुधानि³³⁻⁴² च सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । घृतान्नेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । जप का दशांश घी से सिक्त अन्न का होम है । होम से दशांश तर्पण और तत्तद्दशांश मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करें । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे ।

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशं घृताप्लुतैः ।

अन्नैर्हुत्वा यजेत्पीठे वैष्णवे वसुधाश्रियौ ॥१॥

इत्थं सपरिवारे यो धरालक्ष्म्यौ जपादिभिः ।

आराधयेत्स लभते महतीमन्नसम्पदम् ॥२॥

आज्याक्तैश्च तिलैर्बिल्वसमिद्धिर्जुहुयाच्छ्रिये ।

साज्येन पायसेनापि फलैः पत्रैश्च बिल्वजैः ॥३॥

जपतामुं महामन्त्रं होमः कार्यो दिनेदिने ।

दशसंख्यै कुबेरस्य मनुनेधमैर्वटीद्भवैः ॥4॥

होम काले कुबेरं तु चिन्तयेदग्निमध्यगम् ।

एक लाख मन्त्रों का जप करें । जप का दशांश घृत से सिक्त अन्न से होम करके वैष्णव पीठ पर वसुधालक्ष्मी का पूजन करें । इस प्रकार सपरिवार जो जप आदि से वसुधालक्ष्मी की पूजन करता है वह महती अन्न सम्पदा प्राप्त करता है । घृत से सिक्त तिलों और बेल की समिधाओं से लक्ष्मी के लिए होम करना चाहिए । इस मन्त्र का जप करने वालों को प्रतिदिन घी सहित खीर, बेल के पत्रों तथा फलों से होम करना चाहिए । कुबेर के मन्त्र (ॐ वैश्रवणाय स्वाहा) से बरगद की समिधाओं द्वारा दश बार होम करे तथा होम के समय अग्नि के मध्य कुबेर का इस प्रकार ध्यान करें ।

कुबेर ध्यानं यथा —

धनपूर्णं स्वर्णकुम्भं तथा रत्नकरण्डकम् ॥5॥

हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकरपादं च तुन्दिलम् ।

वटाधस्ताद्रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननम् ।

एवं कृतहुतो मन्त्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम् ॥6॥

इससे कुबेर का ध्यान करें ।

इति वसुधालक्ष्म्यष्टाविंशत्यक्षर मन्त्रप्रयोगः

कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

श्रीशिव उवाच -

शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने ।

प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत् ॥1॥

श्री शिवजी बोले - हे वरानने ! कमला के एक सौ आठ नाम मैं तुम्हें बताऊँगा जो अत्यन्त गोपनीय हैं । इसे कभी भी प्रकाशित नहीं करना चाहिये ।

महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी ।

महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी ॥2॥

कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाऽद्या भद्रिका निशा ।

जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी ॥3॥

शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा ।

महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही ॥4॥

वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षस्थलस्थिता ।
 विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा ॥5॥
 शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी ।
 गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया ॥6॥
 पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णु प्रियङ्गुरी ।
 गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता ॥7॥
 गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना ।
 गण्डकी सरसूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी ॥8॥
 नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी ।
 किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता ॥9॥
 ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता ।
 कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी ॥10॥
 श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा ।
 इन्दिरा सिन्धुतनया मातङ्गी लोकमातृका ॥11॥
 त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ।
 तरुणी च तमोहन्त्री मङ्गला मङ्गलायना ॥12॥
 मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी ।
 निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता ॥13॥
 सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी ।
 शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी ॥14॥
 गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा ।
 त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता ॥15॥
 चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता ।
 चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा ॥16॥
 सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी ।
 इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम् ॥17॥
 त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः ।
 ययं कामयते कामं तंतं तन्त्रं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥18॥

हे देवि ! मैंने ये रमा के एक सौ आठ नाम तुम्हें बता दिये हैं । जो प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल शान्त चित्त होकर इस स्तोत्र को पढ़ता है वह जो-जो इच्छा करता है वह सब प्राप्त करता है ।

इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण ।

धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले ॥19॥

जो मनुष्य बैकुण्ठपत्नी के इस स्तोत्र को अत्यन्त आदर के साथ पढ़ता है, वह राजाओं से वन्दित होकर मृत्यु के बाद विष्णुधाम को प्राप्त होता है ।

इति कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र

ॐ तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम् ।

एह्येति देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये ॥1॥

आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा ।

आयाह्यायाहि धर्मार्थकाममोक्षमये शुभे ॥2॥

एवंविधैः स्तुतिपदैः सत्यैस्सत्यार्थसंस्तुता ।

कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमात्मना ॥3॥

निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः ।

उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ ॥4॥

सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनम् ।

प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम् ॥5॥

अथेदृशान्महाघोरादारिद्र्यान्नरकात्कथम् ।

मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥6॥

सनत्कुमार उवाच -

पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत् ।

सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान् ॥7॥

किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्ति भूतले ।

तथैव चासान्दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत् ॥8॥

दारिद्र्यान्मरणं श्रेयस्त्विति सञ्चिन्त्य चेतसि ।

क्षीरोदस्योत्तरे कुले जगाम कमलोद्भवः ॥9॥

तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम् ।
 ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासदेवं जगद्गुरुम् ॥10॥
 सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् ।
 सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम् ॥11॥
 सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले ।
 अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम् ॥12॥
 कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम् ।
 योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावासं सुरेश्वरम् ॥13॥
 जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम् ।
 लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमण्डितम् ॥14॥
 आयुधैर्देवद्विश्च चक्राद्यैः परिवारितम् ।
 दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि ॥15॥
 आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहम् ।
 प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः ॥16॥
 शिरस्यञ्जलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह ।
 मनोवाञ्छितसिद्धिं त्वं पूरयस्व महेश्वर ॥17॥
 जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
 नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥18॥
 सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर ।
 प्रसीद मम भक्तस्य छिन्धि सन्देहजं तमः ॥19॥
 एवं स्तुतः स भगवान् ब्राह्मणाऽव्यक्तजन्मना ।
 प्रसादाभिमुखः प्राह हरिविंश्रान्तलोचनः ॥20॥

श्रीभगवानुवाच -

हिरण्यगर्भं तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवाञ्छितम् ।
 तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोसि मम सुव्रत ॥21॥
 केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः ।
 प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवन्तं जनार्दनम् ॥22॥
 चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव ।
 परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम् ॥23॥

दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम् ।
 सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत् ॥24॥
 श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम् ।
 नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युत ॥25॥
 त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।
 इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः ॥26॥

श्रीभगवानुवाच -

महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुषः प्रभो ।
 भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैपाऽनपायिनी ॥27॥
 एकैव वर्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः ।
 सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्त व्यवस्थिता ॥28॥
 सर्वेश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी ।
 प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि ॥29॥
 शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता परा कला ।
 अहं तस्याः परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमम् ॥30॥
 शृणुष्ववावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदम् ।
 देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम् ॥31॥
 श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया ।
 केवला निष्कला शुद्ध व्यापिनी व्योमविग्रहा ॥32॥
 व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा ।
 निर्व्योमा व्योममध्यस्था पञ्चव्योमपदाश्रिता ॥33॥
 अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी ।
 नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा ॥34॥
 ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा ।
 स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला ॥35॥
 अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी ।
 शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी ॥36॥
 मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरङ्गा निरामया ।
 ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी ॥37॥

स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पाऽर्चिः सुनिर्मला ।
 स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता ॥38॥
 अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया ।
 असङ्कीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा ॥39॥
 अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यन्त्रा यन्त्रवाहिनी ।
 अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा ॥40॥
 अग्राह्या ग्राहिका गूढा गम्भीरा विश्वगोपिनी ।
 अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी परा ॥41॥
 अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी ।
 एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी ॥42॥
 सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिध्रुवा गतिः ।
 ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा ॥43॥
 अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा ।
 नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा ॥44॥
 तपोनुदा च जवाला च सुदीप्तिश्चांशु मालिनी ।
 अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्माणदायिनी ॥45॥
 अवदाता सुशुद्धा च आमेघाख्या परम्परा ।
 सन्धानकी शुद्धिविद्या सर्वभूतमहेश्वरी ॥46॥
 लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेन वा ।
 अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः ॥47॥
 सत्या प्रह्ला क्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा ।
 सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा जयोतिष्मत्यमतावहा ॥48॥
 रजोवत्यर्कप्रतिभाऽकर्षिणी कर्षिणी रसा ।
 परा वसुमती देवी कान्तिः शान्तिर्मतिः कला ॥49॥
 कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः ।
 सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा ॥50॥
 अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा ।
 धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा ॥51॥
 शुद्धा ध्वनिः सुतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च ।
 प्रापणी प्राणदा प्रह्ला विश्वा पाण्डुरवासिनी ॥52॥

- अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी ।
 ॥ अनन्तरूपाऽनन्तात्माऽनन्तस्थाऽनन्तसम्भवा ॥५३॥
 महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा ।
 ॥ महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा ॥५४॥
 प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धि गोचरा ।
 ॥ नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी ॥५५॥
 सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका ।
 ॥ सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी ॥५६॥
 नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना ।
 ॥ व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता ॥५७॥
 सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा ।
 ॥ भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता ॥५८॥
 प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा ।
 ॥ कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी ॥५९॥
 निरूपोद्भिन्नसन्ताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया ।
 ॥ महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया ॥६०॥
 महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना ।
 ॥ प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा यशस्करो ॥६१॥
 चिन्ता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शान्तिराप्तातिवर्द्धिनी ।
 ॥ प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा ॥६२॥
 काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा ।
 ॥ सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला ॥६३॥
 वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा ।
 ॥ हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता ॥६४॥
 योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा ।
 ॥ महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया ॥६५॥
 ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा ।
 ॥ त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥६६॥
 सुतारा तारिणी तारा दुर्गा सन्तारिणी परा ।
 ॥ सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा ॥६७॥

गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्यासुशोभिता ।
 अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी ॥68॥
 आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका ।
 गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा ॥69॥
 विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा ।
 सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी ॥70॥
 इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः ।
 श्रुतिर्मेधा धृतिर्हीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता ॥71॥
 अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः कामधुक्करा ।
 प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी ॥72॥
 स्मृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा ।
 सन्ध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती ॥73॥
 कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया ।
 सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी ॥74॥
 सुधौतकनकप्रख्या सुवर्णकमलासना ।
 हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा ॥75॥
 चन्द्रा हिरण्यमयी जयोत्स्ना रम्या शोभा शुभावहा ।
 त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरवरार्चिता ॥76॥
 त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी ।
 पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता ॥77॥
 पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता ।
 विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा ॥78॥
 विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना ।
 महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता ॥79॥
 कालसङ्कर्षिणी घोरा तत्त्वसङ्कर्षिणी कला ।
 जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा ॥80॥
 वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता ।
 नृसिंह भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी ॥81॥
 ऐन्द्री कामधनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा ।
 दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्बीजगत्यात्मदर्शना ॥82॥

- गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना ।
 महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा ॥८३॥
 युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला ।
 त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी ॥८४॥
 महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना ।
 शङ्खिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचेश्वरी ॥८५॥
 भद्रकाली चैव वीरा कौमारी भवमालिनी ।
 कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका ॥८६॥
 वालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका ।
 अजितावर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना ॥८७॥
 वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा ।
 महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया ॥८८॥
 उद्रीतिः पद्ममाला च धमवेगा विभावनी ।
 सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया ॥८९॥
 सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी ।
 हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा ॥९०॥
 सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी ।
 पद्मानना नित्यपुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा ॥९१॥
 महाधना च या शृङ्गी कार्दमी कम्बुकन्धरा ।
 आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा ॥९२॥
 वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा ।
 कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी ॥९३॥
 योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी ।
 कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा ॥९४॥
 कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया ।
 विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥९५॥
 बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता ।
 घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना ॥९६॥
 महादेवेन्द्रमथिनी भृकुटीकुटिलानना ।
 सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी ॥९७॥

आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा ।
 दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी ॥१८॥
 भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी ।
 क्षीराब्धितनया पद्म कमला धरणीधरा ॥१९॥
 रूक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा सशस्विनी ।
 प्रज्ञाधाराऽमिताबुद्धिर्वेदमाता यशोवती ॥१००॥
 समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला ।
 अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्य परागतिः ॥१०१॥
 दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरवत्सला ।
 अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्याधरार्चिता ॥१०२॥
 सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका ।
 विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया ॥१०३॥
 उद्धवा विरजा राज्ञी तापनी विन्दुमालिनी ।
 क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा ॥१०४॥
 हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा ।
 आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया ॥१०५॥
 मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा ।
 सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला ॥१०६॥
 श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना ।
 हंसा हीनकरीं हंसी हृद्या हृत्यकमलालया ॥१०७॥
 सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायते क्षणा ।
 सावित्री सत्यसङ्कल्पा कामदा कामकामिनी ॥१०८॥
 दर्शनीया दृशा दृश्या स्पृश्या सेव्या वराङ्गना ।
 भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना ॥१०९॥
 आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी ।
 श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा ॥११०॥
 अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी ।
 निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूत नमस्कृता ॥१११॥
 बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया ।
 तोषणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना ॥११२॥

उद्याननगरद्वारद्वारहर्म्योपवनवासिनी ।

॥ कूष्माण्डीदारुणा चण्डा किराती नन्दनालया ॥113॥

कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी ।

॥ सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी ॥114॥

जगन्माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा ।

॥ काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा ॥115॥

धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी ।

॥ गान्धर्वी रेवती गङ्गा शकुनी विमलानना ॥116॥

इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया ।

॥ आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया ॥117॥

जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना ।

॥ मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता ॥118॥

व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला ।

॥ रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया ॥119॥

श्रवणा श्रावणा नेत्रा रसनाप्राणचारिणी ।

॥ विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना ॥120॥

वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी ।

॥ अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी ॥121॥

गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती ।

॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा ॥122॥

सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता ।

॥ सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः ॥123॥

अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तु देवता ।

॥ मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना ॥124॥

अनघा धरणिर्धरा धमनी मणिभूषणा ।

॥ राजश्रीरूपसंहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता ॥125॥

जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम् ।

॥ सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया ॥126॥

धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी ।

॥ कद्रुर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी ॥127॥

महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा ।
 सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी ॥128॥
 तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती ।
 रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा ॥129॥
 त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता ।
 साध्याऽदितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगाङ्गा ॥130॥
 चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नाकराश्रया ।
 हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता ॥131॥
 गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया ।
 मरीचिश्चरवसना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा ॥132॥
 सुसूक्ष्मा निर्वृतिस्थला निवृत्तारातिरेव च ।
 मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यावाहा हिरण्यदा ॥133॥
 दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी ।
 भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला ॥134॥
 साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः ।
 कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी ॥135॥
 अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा ।
 सम्पूर्णमण्डला पूषा स्त्रंसिनी सुमनोहरा ॥136॥
 जया पुष्टिकरीच्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला ।
 सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा मृतसञ्जीवनी रणे ॥137॥
 विशल्यकरणी शुभ्रा सन्धिनी परमौषधिः ।
 ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसंहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा ॥138॥
 विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका ।
 नित्योदिता नित्यदृष्टा नित्यकामकरीषिणी ॥139॥
 पद्माङ्गा वज्रचिह्ना च वक्रदण्डा विभासिनी ।
 विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी ॥140॥
 मानिनी मङ्गला मान्या मानिनी मानदायिनी ।
 विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी ॥141॥
 हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी ।
 प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः ॥142॥

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धिनी ।
 अमृताधारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची ॥143॥
 संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यामृता प्रभा ।
 आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता ॥144॥
 सर्वार्थसाधनकरी धानुर्द्धारणिकामला ।
 करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया ॥145॥
 सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी ।
 माला काञ्चनमाला च सद्गङ्गा कनकप्रभा ॥146॥
 प्रक्रियापरमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया ।
 विजृम्भणा च वज्राख्या शृङ्खला कमलेक्षणा ॥147॥
 जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा ।
 मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा ॥148॥
 धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा ।
 धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता ॥149॥
 सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा ।
 सुमुखी सर्वतोभद्रा गुह्य शक्तिर्गुहालया ॥150॥
 हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्र सुधारिणी ।
 व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मगुमन्मयी ॥151॥
 गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती ।
 तिलोत्तमोर्वशी रश्मि स्वामिनी सुरसुन्दरी ॥152॥
 बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहा सिनी ।
 ककुद्भिनी चारुपृष्ठा दृष्टदृष्टफलप्रदा ॥153॥
 काम्यचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी ।
 हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना ॥154॥
 अशेषसुखसौभाग्यसम्पदा योनिरुत्तमा ।
 सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया ॥155॥
 सर्वाङ्गयोनिः साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी ।
 विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते ॥156॥
 परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थला श्रया ।
 सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम ॥157॥

इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम् ।
 परावरेण भेदेन मुख्यगौणेन भागतः ॥158॥
 यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणुयाद्वापि पद्मज ।
 शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥159॥
 श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपानुलेपनैः ।
 भोगैश्च मधुपर्काद्यर्थथाशक्ति जगद्गुरुम् ॥160॥
 तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधर प्रियाम् ।
 ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥161॥
 नानारत्नावीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत् ।
 प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति ॥162॥
 यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा ।
 कारणत्वं न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिश्चराचरे ॥163॥
 तस्मात्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा ।
 सुप्रीता शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि ॥164॥
 एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः ।
 तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा ॥165॥
 तथैवैका परा शक्तिश्श्रीस्तस्य करुणाश्रया ।
 ज्ञानादिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा ॥166॥
 एकैकशक्तिश्श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्तते ।
 परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी ॥167॥
 अनन्तनामधेया च शक्ति चक्रस्य नायिका ।
 जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता ॥168॥
 तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी ।
 सैम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत् ॥169॥
 योयो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः ।
 याया तु नारीभावास्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥170॥
 प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते ।
 अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः ॥171॥
 अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः ।
 महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम् ॥172॥

ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः ।

पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठंस्तोत्रमिदं क्रमात् ॥173॥

दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान् ।

सकामानाञ्च फलदामकामानाञ्च मोक्षदाम् ॥174॥

पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम् ।

महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः ॥175॥

करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना

क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः ।

क्वचिदपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्ता

क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकान्तिः ॥176॥

जो इस नाना रत्नावली स्तोत्र का सदा पाठ करता है उसे लक्ष्मी प्रसन्न होकर सब कुछ देती हैं । संसार की समस्त शक्तियाँ जिस लक्ष्मी में उत्पन्न होती हैं, वे इस चराचर जगत् में कारण रूप में नहीं रहतीं । इसलिए जगन्मता विष्णुवल्लभा लक्ष्मी जिस पर प्रसन्न हो जाती हैं, उसे समस्त शक्तियाँ निश्चित रूप से इष्ट सिद्धि प्रदान करती हैं । एक ही शक्तिमान् विष्णुभगवान् जगत्स्वामी हैं । उनके अंशभूत ब्रह्मा शिव आदि शक्तिमान् हैं । उसी प्रकार एक ही करुणाश्रया श्री शक्ति हैं, जो कि ज्ञान आदि षड्गुण्यमयी और परा प्रकृति कही गयी हैं । एक ही श्री शक्ति हैं । दूसरी शक्तियाँ उसी में निहित हैं । वह परा, परेशी, सर्वेशी, सर्वकारा, सनातनी आदि अनन्त नामों वाली शक्ति-चक्र की नायिका है और इस चराचर जगत् में व्याप्त होकर व्यवस्थित हैं । इसलिए एक ही विश्वरूपिणी श्री को जानना चाहिए । नट जीव के समान सौम्या सौम्यरूप से संस्थित हैं । संसार में जो-जो पुम्भाक है, वह सब विष्णु स्वरूप है । जो-जो नारी भाव हैं उन सब में लक्ष्मी व्यवस्थित हैं । प्रकृति तथा पुरुष से भिन्न तीसरा कुछ भी नहीं है । अधिक कहने से क्या लाभ ? हरि नरनारीमय हैं । परमेश्वर अनेक भेदों से भिन्न किया जाता है । जो विष्णुप्रिया पत्नी महाविभूति लक्ष्मी जी की स्तुति करते हैं, वे शुद्ध चित्त वाले परम लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं । ब्रह्मा जी ने इस स्तोत्र को पाकर इसका क्रम से पाठ करते हुए उनके प्रसाद से अष्टगुणों से युक्त दिव्य ऐश्वर्य को प्राप्त किया । सकाम स्तुति करने वालों को फल देने वाली तथा निष्काम स्तुति करने वालों को मुक्ति देने वाली, पुस्तकाख्या, भयत्रात्री, सितवस्त्रा, त्रिलोचना, महापद्मस्थिता, अजरा लक्ष्मी को मेरा नमस्कार है । करयुगलगृहीत

पूर्ण कुम्भ को धारण किये हुये, क्वचित् अमलगतस्था, शङ्ख पद्माक्षपाणि, क्वचित् पति के अङ्ग पर चामर डुलाती हुई क्वचित् सृणिपाश धारण किये हुये स्वर्ण कान्तिमयी लक्ष्मी जी सुशोभित हैं ॥162-173॥

इति ब्रह्मपुराणे काश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं
पुरुषोत्तमप्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

लक्ष्मीहृदयस्तोत्र

विनियोग : आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः आद्यादि-
श्रीमहालक्ष्मीदेवता अनुष्टुवादिनानाच्छन्दांसि श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः ऐं कीलकम्
आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि 1 । ॐ अनुष्टुवादिनानाच्छन्दोभ्यो
नमो मुखे 2 । ॐ आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये 3 । ॐ श्रीं बीजाय
नमो गुह्ये 4 । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः 5 । ॐ ऐं कीलकाय नमो नाभौ 6 ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु 7 । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः 1 । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः 2 ।
ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः 3 । ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः 4 । ॐ ह्रीं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः 5 । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः 6 । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः 1 । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा
2 । ॐ ऐं शिखायै वषट् 3 । ॐ श्रीं कवचाय हुम् 4 । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय
वौषट् 5 । ॐ ऐं अस्त्राय फट् 6 । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः । इति
हृदयादिन्यासः ।

अथ ध्यानम्

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया । हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं
विचिन्तये ॥1॥

इति ध्यात्वा सम्पूज्य ॐ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि । मम
देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥2॥ इति सम्प्रार्थ्य । ॐ श्रीं ह्रीं ऐं
महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यं सिंहवाहिन्यै स्वाहा । इति मन्त्रं जपित्वा पुनः
पूर्ववद्धृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत् ।

इस प्रकार ध्यान और पूजा करके “ॐ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि ।
मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ।” इससे प्रार्थना करके : “ॐ ह्रीं ऐं

महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा” इस मन्त्र को जप कर पुनः पूर्ववत् हृदयादि षडङ्गन्यास करके स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । यथा —

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानामाद्यां
शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥1॥

श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकामफलावाप्तिसाधनैकसुखावहाम् ॥2॥

स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसाः ।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम् ॥3॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं
समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।

समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥4॥

विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं
विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम् ।

अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीं
नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥5॥

समस्त भूतान्तरसंस्थिता त्वं
समस्त भोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे ।

तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु
त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥6॥

दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्री
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।

दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः
कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥7॥

अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्ट्या मां
त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमंकुरुष्व ।

आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहन्त्री
त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥8॥

शान्त्यै नमोस्तु शरणागतरक्षणायै
 कान्त्यै नमोस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
 क्षान्त्यै नमोस्तु दुरितक्षयकारणाय धात्र्यै
 नमोऽस्तु धनधान्यसमृद्धिदायै ॥9॥
 शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै
 रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै ।
 भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै
 मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥10॥
 लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै
 सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै ।
 धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै
 गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै ॥11॥
 देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै
 भूत्यै नमोऽस्तु भवनार्तिविनाशनायै ।
 दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥12॥
 सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहन्त्र्यै
 नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै ।
 श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै
 नमोनमस्सर्वविभूतिदायै ॥13॥
 जयतुजयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी
 जयतुजयतु पद्मा पद्मसद्भाभिवन्द्या ।
 जयतुजयतु विद्या विष्णु वामाङ्कसंस्था
 जयतुजयतु सम्यक् सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥14॥
 जयतुजयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या
 जयतुजयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा ।
 जयतुजयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या
 जयतुजयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥15॥

जयतुजयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था

जयतुजयतु शुद्ध शुद्धजाम्बूनदाभा ।

जयतुजयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी

जयतुजयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ॥16॥

यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या

रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः ।

जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः

प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते ॥17॥

लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं

त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ।

तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां

समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्य संसूचिकाम् ॥18॥

कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः ।

तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे ॥19॥

यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत् ।

तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय ॥20॥

सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे ।

अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम् ॥21॥

मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला

सदा वैकुण्ठश्रीर्निन्वसतु कला मे नयनयोः ।

वसेत्सत्ये लोके मम् वचसि लक्ष्मीवरकला

श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः ॥22॥

तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत् ।

सूर्यचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रियाः ॥23॥

सर्वमंगलसम्पूर्णा सर्वैश्वर्य समन्विता ।

आद्यादिश्री महालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥24॥

अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञान प्रकाशिका ।

सर्वैश्वर्यप्रदा मेस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता ॥25॥

अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा ।

विननोतु ममश्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता ॥26॥

ऐश्वर्यमंगलोत्पत्तिस्त्वत्कलायान्निधीयते ।
 मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव ॥27॥
 भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि ।
 त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते ॥28॥
 पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः

समागच्छ ममाग्रतस्त्वम् ।
 परम्पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मथ्यच्युते
 न प्रविशादिलक्ष्मि ॥29॥

श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः ।
 नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय ॥30॥
 सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम् ।

वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव ॥31॥
 श्वेद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते ।
 विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे ॥32॥

क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे ।
 त्वकृपादृष्टिसुधया सततं मां विलोक्य ॥33॥
 रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णे हिरण्मये ।

समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम ॥34॥
 स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले ।
 प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव ॥35॥

श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम् ।
 शीघ्रमुद्धृत्य परतः प्रदर्शय समर्पय ॥36॥
 वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धि कृपामये ।

त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे संप्रदर्शय ॥37॥
 विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे ।
 त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय ॥38॥

रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः ।
 न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय ॥39॥
 आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः ।

मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम् ॥40॥

- देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते ।
 मातस्त्वद्धृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वां कुतूहलात् ॥41॥
 उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठसुजागृहि ।
 अक्षयान्हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान् ॥42॥
 निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः ।
 समुन्नतानना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात् ॥43॥
 मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात् ।
 प्रसीद श्रेयसान्दोग्धि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः ॥44॥
 अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मये ।
 सुस्थिरा भव संप्रीत्या प्रसीद वरदा भव ॥45॥
 आनीय त्वं तथा देवि निधीन्मे सम्प्रदर्शय ।
 अद्य क्षणेन सहसा दत्त्वा संरक्ष मां सदा ॥46॥
 मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि ।
 अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥47॥
 समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे ।
 प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय ॥48॥
 भुवङ्गता भासि लक्ष्मि यत्रयत्र हिरण्मयी ।
 तत्रतत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय ॥49॥
 क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरण्मये ।
 मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय ॥50॥
 फलद्वाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि ।
 प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे ॥51॥
 अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते ।
 वैभवैर्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते ॥52॥
 समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा ।
 करुणारसनिष्पन्दनेत्रद्वयविलासिनी ॥53॥
 सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके ।
 करुणा सुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु ॥54॥
 सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते ।
 स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु ॥55॥

सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयापय ।
 सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥56॥
 आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामांकसंस्थिते ।
 प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम् ॥57॥
 प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे ।
 अचला भव संप्रीत्या सुस्थिरा भव मदगृहे ॥58॥
 यावत्तिष्ठन्ति देवाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति ।
 यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि ॥59॥
 चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिनेदिने ।
 तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम् ॥60॥
 यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे ।
 तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह ॥61॥
 योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना ।
 तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह ॥62॥
 नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते
 नारायणोपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते ।
 नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव
 तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः ॥63॥
 विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः
 सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ।
 दयासुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः
 सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः ॥64॥
 न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि
 सद्भक्तचिन्तामणिकामधेनो ।
 विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना
 गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे ॥65॥
 आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीजं
 त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम् ।
 त्वया धृताश्चाब्जभवाण्ड सङ्घाश्चित्रं
 चरित्र तव देवि विष्णोः ॥66॥

ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः ।
 महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम् ॥67॥
 अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्ता-सूक्तानि यानि च ।
 तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम् ॥68॥
 भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः ।
 इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं ब्रजे ॥69॥
 अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः ।
 इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरणं ब्रजे ॥70॥
 तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित् ।
 इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ॥71॥
 त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते ।
 यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे ॥72॥
 क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना ।
 न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः ॥73॥
 यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी ।
 वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला ॥74॥
 यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी ।
 दयापयोधरस्तन्यसुधाभिरभिषिञ्च माम् ॥75॥
 मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे ।
 पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणाञ्च न मे मितिः ॥76॥
 पापिनामहमेवाग्र्यो दयालूनां त्वमग्रणीः ।
 दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये ॥77॥
 विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता ।
 आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः ॥78॥
 कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः ।
 विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे ॥79॥
 माता पिता त्वं गुरुसद्गतिः
 श्रीस्त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता ।
 अन्यत्र मन्ये जगदेकनाथे
 त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये ॥80॥

आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना
 विशुद्धविज्ञानसुखेकदोग्धी ।
 अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता
 प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना ॥81॥

अशेषवाग्जाड्यमलापहन्त्री
 नवंनवं स्पष्टसुवाक्यप्रदायिनी ।
 ममेह जिह्वाग्रसुरङ्गनर्तकी भव
 प्रसन्ना वदने च मे श्रीः ॥82॥

समस्तसम्पत्सुविराजमाना
 समस्ततेजश्चयभासमाना ।
 विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना
 वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना ॥83॥

सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं
 प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्धी ।
 सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव
 श्रीर्हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥84॥

सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः
 सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री ।
 सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव
 श्रीर्हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥85॥

समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी
 समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा ।
 अन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी
 हिरण्यमयी मे नयने प्रसन्ना ॥86॥

देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं
 देवाधिनाथभवदेवगणाधिवन्द्ये ।
 मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे
 पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना ॥87॥

मा वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते

मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे ।

मातः समर्पय मुदा करुणा कटाक्षं

माङ्गल्यबीजमिह नः सृजः जन्म मातः ॥८८॥

कटाक्ष इह कामधुक्तव मनस्तु चिन्तामणिः

करः सुरतरुः सदा नवनिधि स्त्वमेवेन्दिरे ।

भवे तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं

मुखं तव कलानिधिर्विविधवाञ्छितार्थप्रदम् ॥८९॥

यथा रसस्पर्शनतोऽयसोपि

सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते ।

कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाम

मंगलानामपि मंगलं त्वम् ॥९०॥

देहीति नास्तीति वचः

प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये ।

अतः सदाऽस्मिन्नभयप्रदा त्वं

सहैव पत्या मयि सन्निधेहि ॥९१॥

कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या

श्रीस्ते कलामहि रसेन रसायनेन ।

आस्तां यतो मम शिरः करदृष्टिपादस्पृष्टाः

सुवर्णवपुषः स्थिरजंगमाः स्युः ॥९२॥

आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्मपत्नी

त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि ।

आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदेपदे

मे निधिदर्शनम् स्यात् ॥९३॥

आद्यादिलक्ष्मी हृदयं पठेद्यः स

राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति ।

महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये

श्रीः स्थिरतां प्रयाति ॥९४॥

अस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा ।

तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत् ॥९५॥

इदं रहस्यं हृदय सर्वकामफलप्रदम् ।
जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥१६॥
त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम् ॥१७॥
महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे ।
इदं श्रीहृदयम् जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत् ॥१८॥
अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम् ।
ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम् ॥१९॥
नरेण वाऽथवा नार्य्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते ।
जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते ॥१००॥
य आश्विने मासि च शुक्लपक्षे

रमोत्सवे सन्निहिते सुभक्त्या ।

पठेत्तथैकात्तरवारवृद्ध्या लभेत्स

सौवर्णमयीं सुवृष्टिम् ॥१०१॥

य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी ।
स मन्दभाग्योपि रमाकटाक्षाद्भवत्सहस्राक्षशताधिकश्रीः ॥१०२॥
श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढं कनिष्ठाम् ।
गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रियम् ॥१०३॥
पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधाथसिद्धिम् ।
सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम् ॥१०४॥
वादार्थसिद्धिं जनवश्यताञ्च वयःस्थिरत्वं ललनासुभोगम् ।
पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि जन्मजन्मनि ॥१०५॥
अथ शिरोबीजम् । ॐ यं हं कं लं पं श्रीम् ॥१०६॥

ध्यायल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखी कोटिबालार्कभासं
विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।
बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं सवर्णपात्रं
भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदा मह्यमप्यच्युतश्रीः ॥१०७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥१०८॥

इति श्रीअथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्

लक्ष्मीसूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥1॥

ताम आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥2॥

अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।

श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥3॥

कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकरामार्द्रां

ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां

तामिहोपह्वये श्रियम् ॥4॥

चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं

श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये

अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥5॥

आदित्यवर्णे तपसोधिजातो

वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसानुदन्तु

मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः ॥6॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।

प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिं मृद्धिं ददातु मे ॥7॥

क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥8॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥9॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥10॥

कर्द्धमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रमकर्द्धम् ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतं वस मे गृहे ।
 निच देवोम्मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥
 आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
 सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥13॥
 आर्द्रां यः करणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
 चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥14॥
 ताम्म आवह जातवेदो

लक्ष्मी मनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
 दास्योश्चान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥
 यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
 श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥16॥

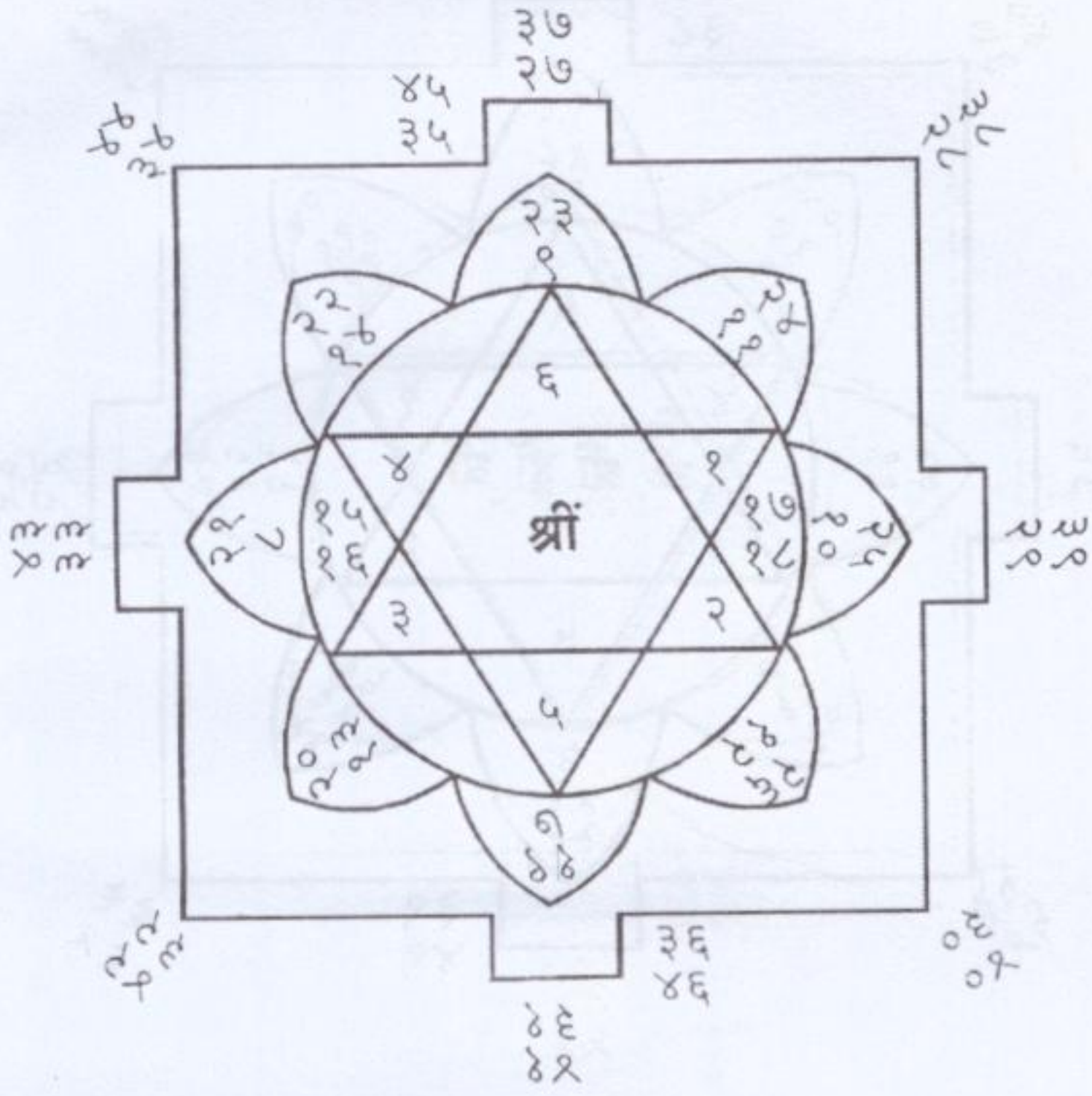
इति श्रीसूक्तम्



यन्त्र चित्रावली

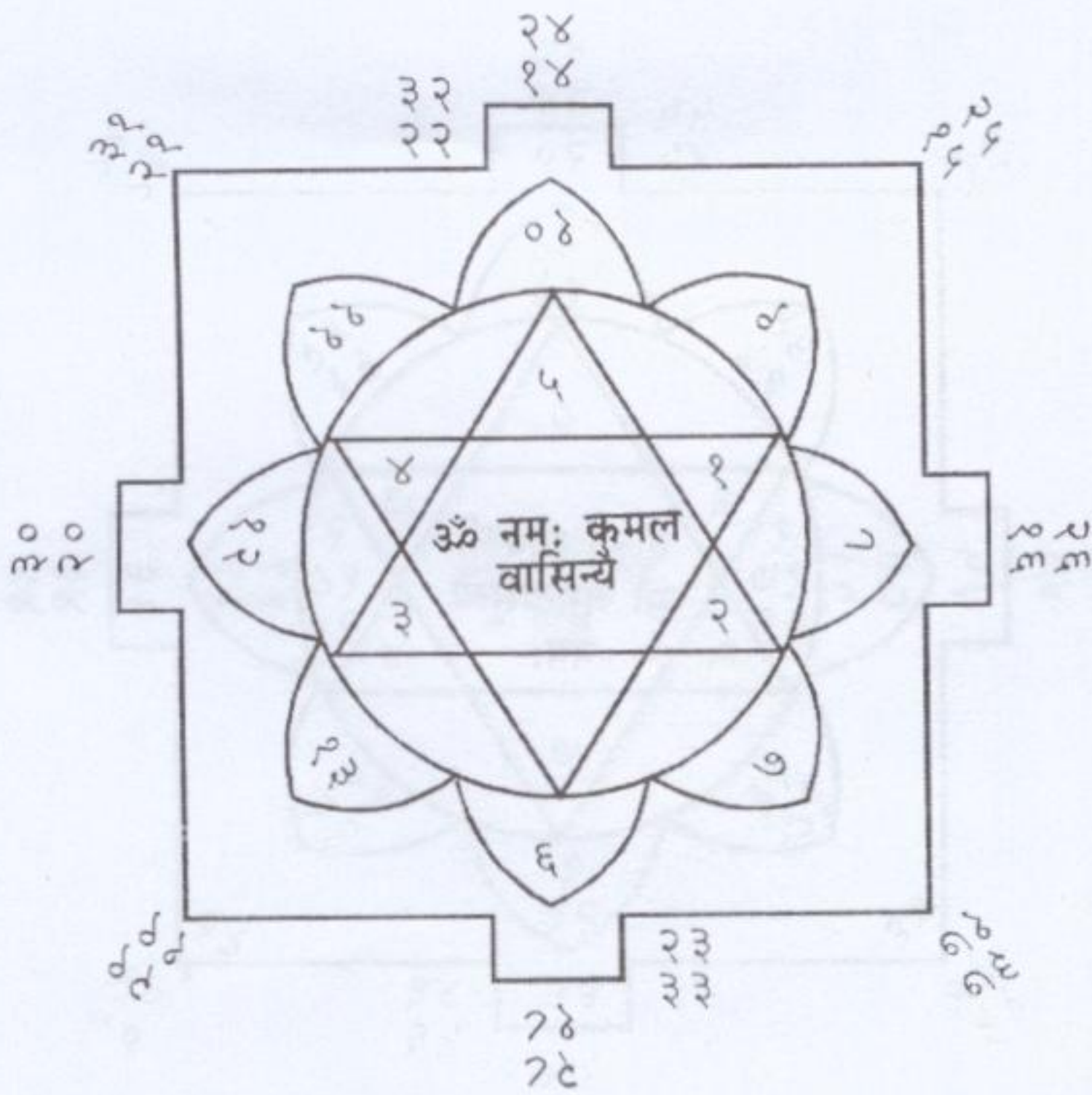
चित्र संख्या 1

लक्ष्म्येकाक्षरबीजमन्त्रपूजनम्

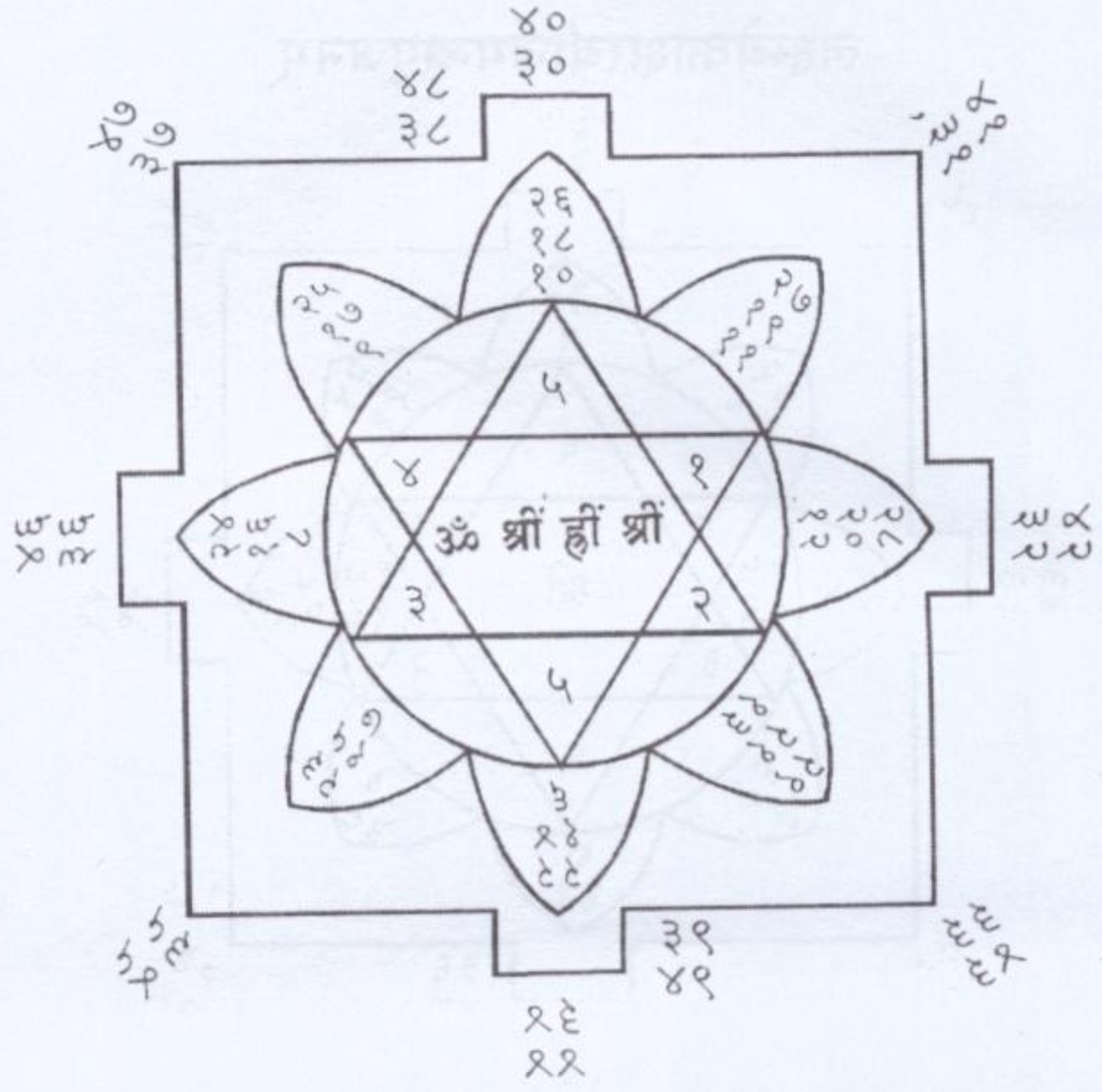


चित्र संख्या 2

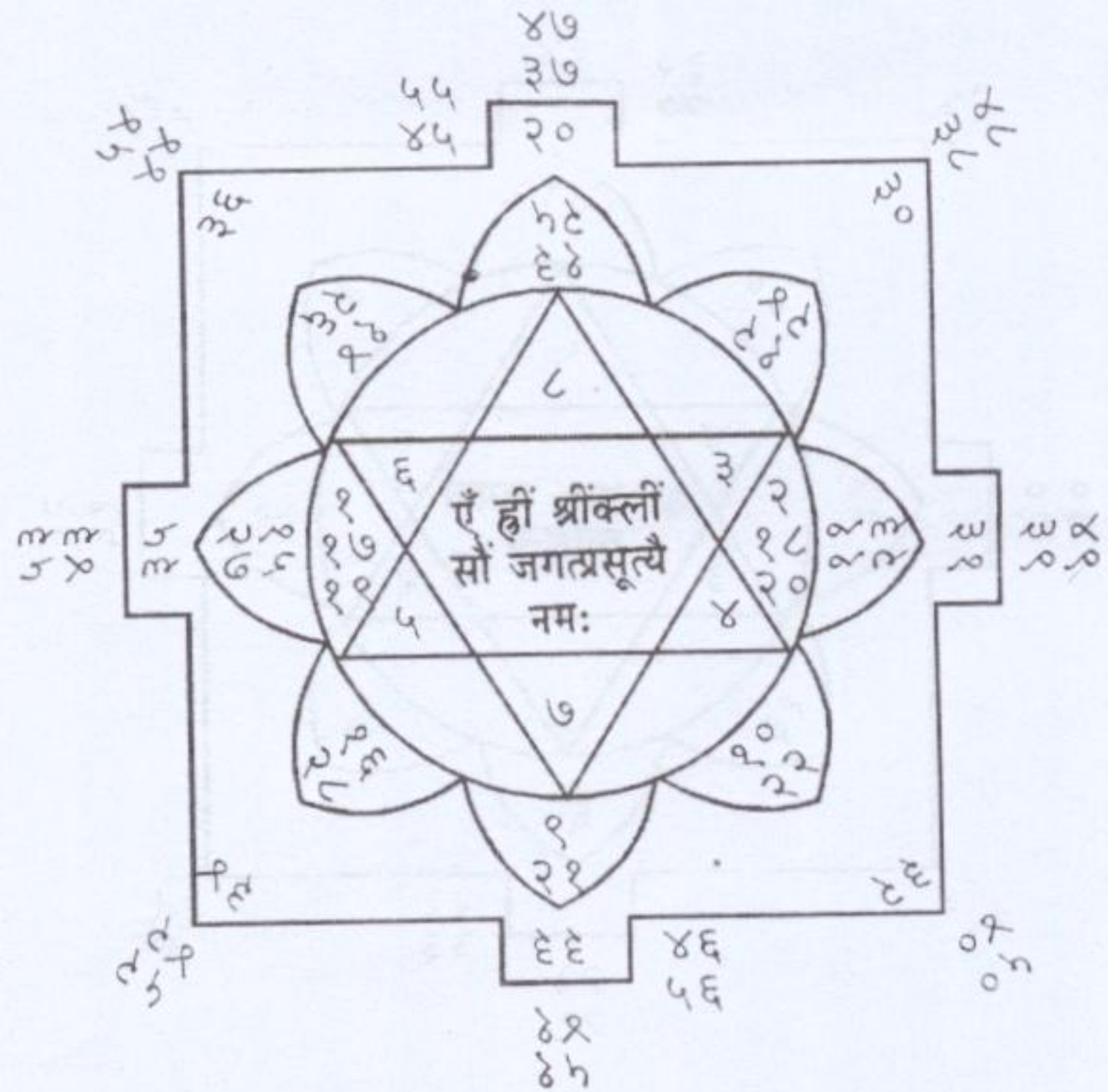
लक्ष्मीदशाक्षरमन्त्रयन्त्रम्



चित्र संख्या 3
लक्ष्मीसप्तविंशत्यक्षरमन्त्रपूजनम्

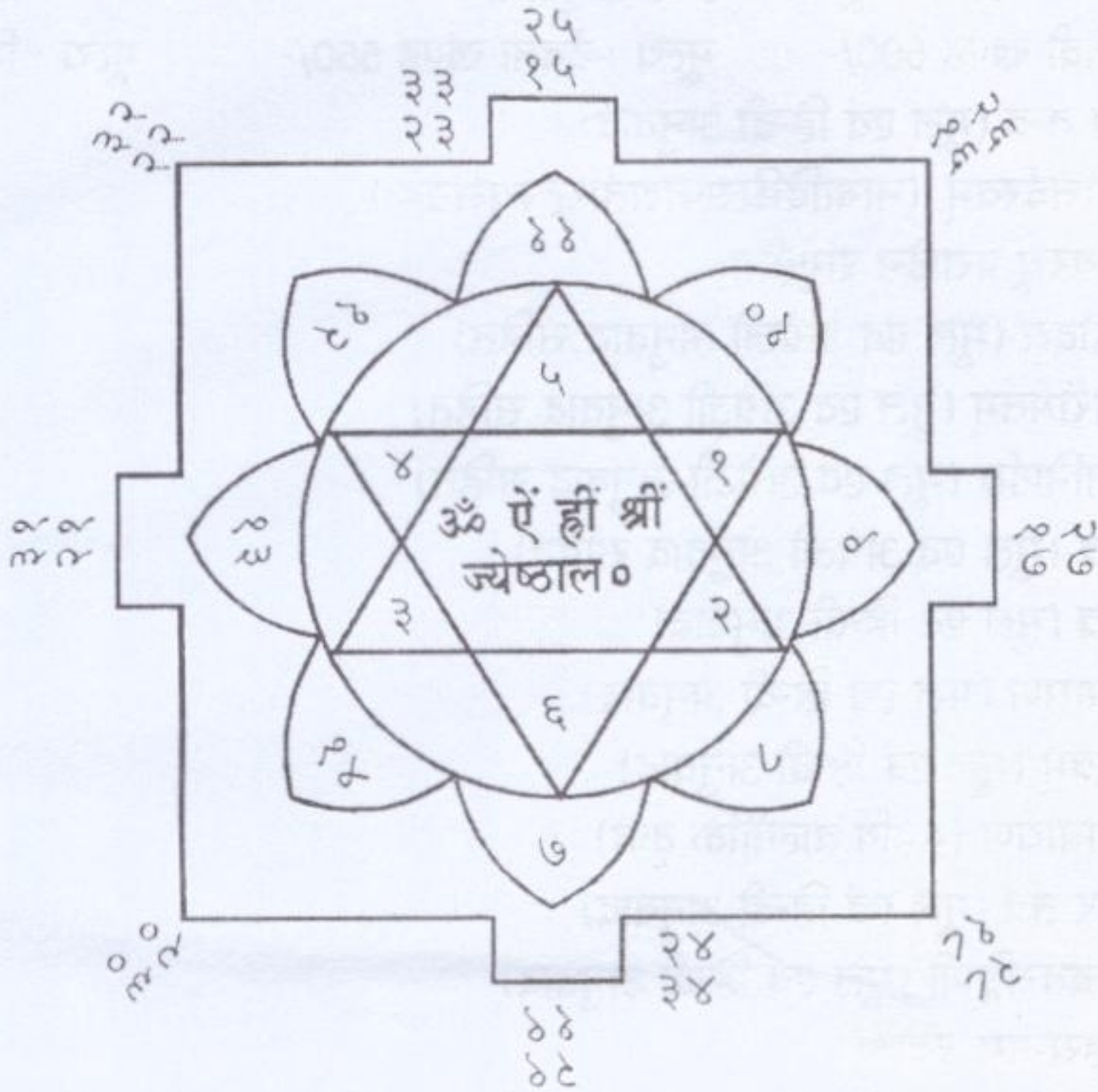


चित्र संख्या 4
द्वादशाक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रयन्त्रम्



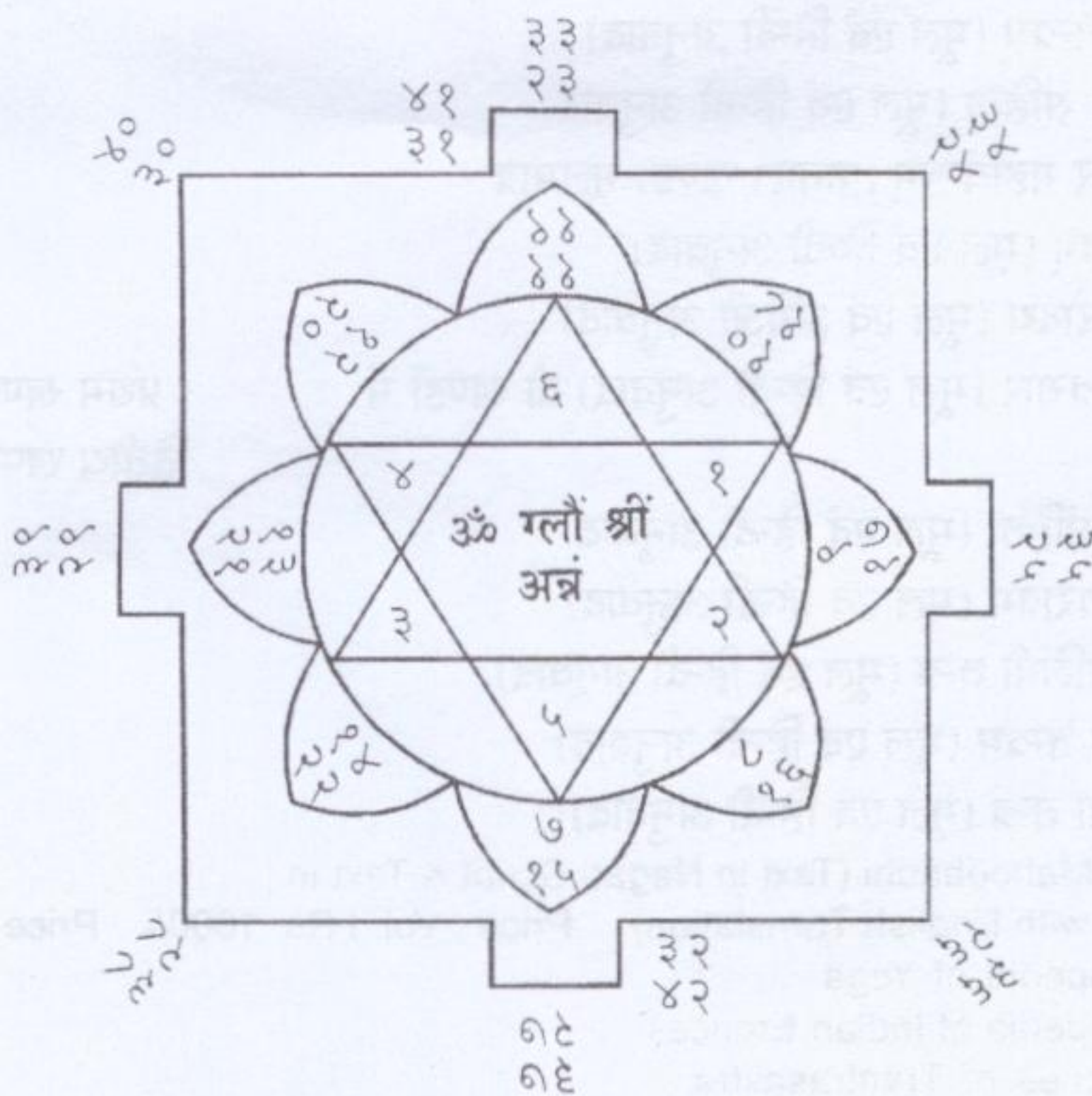
चित्र संख्या 5

ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रपूजनयन्त्रम्



चित्र संख्या 6

वसुधालक्ष्मीपूजनयन्त्रम्



हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

- | | | |
|-----|---|--|
| 1. | मन्त्र महोदधि (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 500/- |
| 2. | हिन्दी मन्त्र महार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | |
| | मूल्य : देवी खण्ड 600/- मूल्य : देवता खण्ड 550/- | मूल्य : मिश्र खण्ड 250/- |
| 3. | कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 300/- |
| 4. | सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः)
पण्डित सरयू प्रसादेन संगृहीतः | मूल्य : 150/- |
| 5. | शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) | मूल्य : 75/- |
| 6. | वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) | मूल्य : 100/- |
| 7. | कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) | मूल्य : 200/- |
| 8. | डामर तंत्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) | मूल्य : 100/- |
| 9. | डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 75/- |
| 10. | मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 75/- |
| 11. | कुमारीतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 100/- |
| 12. | अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) | मूल्य : 100/- |
| 13. | भूत डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 75/- |
| 14. | शाक्तानन्दतरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 200/- |
| 15. | गणेशसहस्रनाम स्तोत्रम् | मूल्य : 50/- |
| 16. | सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) | मूल्य : 50/- |
| 17. | श्यामारहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 250/- |
| 18. | श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) तीन खण्डों में
पूर्वार्द्ध मूल्य : 400/- उत्तरार्द्ध प्रथम मूल्य : 300/- उत्तरार्द्ध द्वितीय मूल्य : 300/- | |
| 19. | श्री नीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 150/- |
| 20. | मन्त्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 100/- |
| 21. | भूत डामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र | मूल्य : 100/- |
| 22. | योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 75/- |
| 23. | शिव स्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) | मूल्य : 75/- |
| 24. | वृहत् तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) दो खण्डों में | प्रथम खण्ड मूल्य : 500/-
द्वितीय खण्ड मूल्य : 600/- |
| 25. | बङ्गसेन संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 750/- |
| 26. | नारद पंचरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 400/- |
| 27. | कङ्कालमालिनी तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 100/- |
| 28. | कुब्जिका तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 100/- |
| 29. | मुण्डमाला तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) | मूल्य : 200/- |
| 30. | Mantra Mahodhadhi (Text in Nagari Script & Text in Roman with English Translation) Price : Vol. I Rs. 1000/- Price : Vol. II 1000/- | |
| 31. | Encyclopedia of Yoga | Rs. 600/- |
| 32. | Encyclopedia of Indian Erotics | Rs. 250/- |
| 33. | Dictionaries of Trantrasastra | Rs. 150/- |

THE HISTORY OF

THE CITY OF BOSTON

FROM THE FIRST SETTLEMENT
TO THE PRESENT TIME
BY
JOHN B. BOWEN
OF THE
CITY OF BOSTON
PUBLISHED BY
JOHN B. BOWEN
1822

हमारे प्रमुख प्रकाशन

1. मन्त्रमहोदधि: (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 500/-
2. मन्त्रमहोदधि (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) भाग - 1 मूल्य 1000/- भाग -2 मूल्य 1000/-
3. हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) देवी 600/-, देवता 550/-, मिश्र मूल्य 250/-
4. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) पूर्वाद्धम् 400/- उत्तरा० प्रथम 300/- उत्तरा० द्वितीय मूल्य 300/-
5. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य 300/-
6. नारदपञ्चरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 400/-
7. मंत्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
8. श्यामा रहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 250/-
9. बृहत तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) कृष्णानन्द आगमवागीश कृत भाग-1 500/--भाग-2 600/-
10. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः) मूल्य 150/-
11. श्रीनीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 150/-
12. भूतडामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र मूल्य 100/-
13. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 75/-
14. शाक्तानन्द तरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
15. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 100/-
16. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 200/-
17. डामर तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य 100/-
18. डामर मन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
19. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
20. कामरत्नतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
21. अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) मूल्य 100/-
22. वङ्गसेन संहिता (मूल हिन्दी अनुवाद एवं परिशिष्ट सहित) मूल्य 750/-
23. हारीत संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 300/-
24. भूतडामर तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
25. योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
26. कुब्जिका तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
27. मुण्डमाला तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
28. धनदारतिप्रिया तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 10/-
29. कुमारी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
30. गुप्तसाधन तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
31. माया तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
32. कङ्काल मालिनी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
33. Encyclopedia of Yoga Rs. 750/-
34. Encyclopedia of Indian Erotices Rs. 250/-
35. Dictionaries of Tantrasastra Rs. 150/-
36. गणेशसहस्रनाम स्तोत्रम् मूल्य 50/-
37. सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) मूल्य 50/-
38. आगम तत्त्वविलास (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) शीघ्र
39. सम्पूर्ण स्कन्द पुराण (हिन्दी में प्रथम बार प्रकाशित होने जा रहा है।)
(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित) शीघ्र

हमारे प्रमुख प्रकाशन

1. मन्त्रमहोदधि: (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 500/-
2. मन्त्रमहोदधि (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) भाग - 1 मूल्य 1000/- भाग -2 मूल्य 1000/-
3. हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) देवी 600/-, देवता 550/-, मिश्र मूल्य 250/-
4. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) पूर्वाद्धम् 400/- उत्तरा० प्रथम 300/- उत्तरा० द्वितीय मूल्य 300/-
5. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य 300/-
6. नारदपञ्चरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 400/-
7. मंत्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
8. श्यामा रहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 250/-
9. बृहत तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) कृष्णानन्द आगमवागीश कृत भाग-1 500/--भाग-2 600/-
10. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः) मूल्य 150/-
11. श्रीनीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 150/-
12. भूतडामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र मूल्य 100/-
13. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 75/-
14. शाक्तानन्द तरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
15. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 100/-
16. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य 200/-
17. डामर तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य 100/-
18. डामर मन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
19. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
20. कामरत्नतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
21. अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) मूल्य 100/-
22. वङ्गसेन संहिता (मूल हिन्दी अनुवाद एवं परिशिष्ट सहित) मूल्य 750/-
23. हारीत संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 300/-
24. भूतडामर तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
25. योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 75/-
26. कुब्जिका तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
27. मुण्डमाला तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 200/-
28. धनदारतिप्रिया तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 10/-
29. कुमारी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
30. गुप्तसाधन तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
31. माया तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
32. कङ्काल मालिनी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
33. Encyclopedia of Yoga Rs. 750/-
34. Encyclopedia of Indian Erotices Rs. 250/-
35. Dictionaries of Tantrasastra Rs. 150/-
36. गणेशसहस्रनाम स्तोत्रम् मूल्य 50/-
37. सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) मूल्य 50/-
38. आगम तत्त्वविलास (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) शीघ्र
39. सम्पूर्ण स्कन्द पुराण (हिन्दी में प्रथम बार प्रकाशित होने जा रहा है।)
(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित) शीघ्र